।। सत्नाम ।।

♍ ग्रन्थ भक्ति हेतु ♍

भाषल सद्गुरु दरिया साहब

बन्दी छोर हंस उबारन मुक्ति के दाता

♍ साखी ♍

ज्ञान भक्ति निजु सार है, सुनो श्रवण चितलाय ।
बिक्ति, बिक्ति विख्यान यह, ब्रह्म अनूप देखाय ।। १ ।।

♍ चौपाई ♍

भक्ति हेतु है ज्ञानके मूला । वृगसित कमल सहस्रदल फूला ।।
सत् सरन प्रीति लवलावै । निर्गुण निरखि विमल यश गावै ।।
गहे टेक सत्नाम सनीपा । दुरमति दुरि दिल कमल अनूपा ।।

शब्दार्थ – ज्ञान= प्रकाश, दिव्य ज्योति । भक्ति=सेवा का प्रकार । निजु=मुख्य रूप से । बिक्ति बिक्ति=अलग–अलग । सार=तत्व । चित्त=हृदय से । ब्रह्म=परमात्मा । अनूप=अनुपम, सुन्दर । हेतु =कारण । वृगसित=प्रसन्न, खिल जाना । मूला=मूल । सहस्रदल=हजारों पंखुरी वाला । प्रीति=श्रद्धा युक्त प्रेम । लवलावै=प्रेम लगन के साथ । फूला= फूल । निरखि=निरीक्षण या जानकर । विमल= पवित्र । यश=कीर्ति । गहे=धारण करना । टेक=आधार, सहारा । दूरि=दूर meveerhee-meceerhe~

साखी (भावार्थ)– सतगुरु दरिया साहब कहते हैं कि निर्वाण प्राप्त करनेके लिए ज्ञान और भक्ति मुख्य तत्व है । इस उपदेश को ध्यानपूर्वक चित्त लगाकर सुनो जो कि अनुपम ब्रह्म को देखने का साधन है उसका (ज्ञान,भक्ति का) मैं अलग–अलग व्याख्या (वर्णन) कर रहा हूँ ।

चौपाई (भावार्थ)– सतगुरु दरिया साहब कहते हैं कि भक्ति का मूल कारण ज्ञान है अर्थात् भक्ति से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है जिससे हृदयरूपी हजारों पंखुरी वाला कमल खिल जाता है अर्थात् चित्त प्रसन्न हो जाता है । सत्पुरुष के चरणों में प्रीति लगाते हुए उस निर्गुण ब्रह्म का पारख करके उसके पवित्र यश का गुणगान करना चाहिए । सभी को छोड़कर केवल सत्नाम का सहारा लेना चाहिए । इससे हृदय रूपी अनुपम कमल की दुर्मति दूर हो जाती है ।

टीका व्याकरण–

टिप्पणी– भक्ति– भज् सेवायाम् धातु से क्तिन प्रत्यय लगाकर यह रूप सिद्ध होता है । ब्रह्म :– 1– सत् पुरुष, (अनुपम ब्रह्म) 2– निरंजन (ईश्वर ब्रह्म) 3– देवब्रह्म या प्रकृति ब्रह्म 4– जीव ब्रह्म ।

कमल भवँर ज्यों बाससुबासा । रहत रहित रस करत बिलासा ।।
बासर भये बिलगि बिहराहीं । फिरि फिरि वास उलटि पपटाहीं ।।
फनि–मनि गनि जिमि धरत उतारी । चरत चरा दिवि दृष्टि न टारी ।।
फेरि नहीं एक पलक विश्वासा । लीन्ह उठाए अर्द्धमुख ग्रासा ।।
ज्यों पतंग मुख मोरत न टारी । सनमुख दृष्टि दीपक महँ जारी ।।
साहस नारी करे पिय पासा । अग्नि जरै नहिं तन को त्रासा ।।
सब सुख छोड़ि पिया संग जाई । नाम निरखि ऐसो चित्तलाई ।।

शब्दार्थ – भवँर=भौंरा । बास=निवास स्थान । सुबासा=सुगन्ध । रहित=अलग । बिलासा=आनन्द । बासर=दिन । बिहराहीं=मँडराता है । फनि=सर्प । मनि=मणि । गनि=समूह, वर्ग । जिमि=जैसे, जिस प्रकार, पृथ्वी । धरत=रखता है । चरत=विचरण करता है । दिवि=दिव्य, देना । पलक=क्षण भर । ग्रास=निगल जाना । पतंग=कीट । जारी=जला देता है । वास= गन्ध । पिय=पिया । पिया=पति । मोरत=मोड़ना ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि जिस प्रकार से भ्रमर कमल पर निवास करते हुए सुगन्ध लेता है तथा अलग होकर रस का आनन्द लेता है । पुनः दिन होने पर दूर–दूर मँडराता रहता है लेकिन घूम–फिरकर वह बास को लेता रहता है । उसी प्रकार मानव को सांसारिक कर्म करते हुए परमात्मा के नाम का ध्यान करना चाहिए । आगे सतगुरु सर्प का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार सर्प मणि को समूह अथवा झुरमुट में रखकर आस–पास विचरण करता है परन्तु अपने ध्यान, दृष्टि को मणि पर से नहीं हटाता तथा थोड़ा सा आहट, संकेत पाने पर वह एक पल भी देर न करके उसे अपने मुख में ग्रहण कर लेता है उसी तरह इस अल्प जीवन पर विश्वास न करके परमात्मा का ध्यान करना चाहिए ।। जिस प्रकार फतिंग (कीट) दीपक की रोशनी में अपने को जला देता है परन्तु मुख नहीं मोड़ता तथा उसी प्रकार सती चिताग्नि में साहस करके अपने पति के साथ भस्म हो जाती है । परन्तु कष्ट से दूर नहीं भागती इस प्रकार सभी सांसारिक सुखों को छोड़कर अपने पति के संग अमरत्व को प्राप्त करती है । ऐसे ही मानव को सभी सांसारिक दुःखों में साहस के साथ चित्त को नाम पर प्रेम के साथ लागाना चहिए ।

टिप्पणी– प्राचीनकाल में स्त्रियां अपने पति की मृत्यु के पश्चात् उनके साथ अपने शरीर को चिताग्नि में भस्म कर देती थी ।

चन्द चकोर देहिं नहिं पीठी। ज्ञान सुरति राखहिं दिव्य दृष्टि ।।
अकर्मं कर्म ज्यों कर्मं कटाई । ज्ञान छुरी रचि पचि गहि लाई ।।
साखी–ज्ञान छुरी निश्चय गहो, काटि कर्म कलि पाप ।
सत् शरण सतगुरु सेवा, मेटै कलिमल ताप ।। २ ।।
साधु असाधु बिलोकहिं नैना । शीतल चरण उरज सुख चैना ।।

शब्दार्थ – सुरति=ध्यान । चकोर=एक पक्षी जो चन्द्रमा को एकटक देखता है । छूरी=चाकू, कटार । पचित=पचा हुआ, कटना । कर्म= शास्त्र विहित कर्म । रचि–पचि= परिश्रम करके, गढ़–गढ़ करके । अकर्म=कर्म का अभाव, बुरा कर्म । कर्म=पूर्वकृत कर्मफल । कलि=कलह, पापबुद्धि । कलिमल=पाप । ताप=दुःख, उष्ण । असाधु=असदाचारी साधु । साधु=धर्मपरायण साधु (संत) । उरज=हृदय । चैना=शान्ति, । विलोकहिं=देखने पर या देखना । नैना=नेत्र से । चन्द=चन्द्रमा । सनीपा=समीप । पीठी=पीठ ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि चकोर पक्षी जिस प्रकार अपने मुख को केवल चन्द्रमा के तरफ किये रहता है वह कभी अपनी दृष्टि को चन्द्रमा से विमुख नहीं करता उसी तरह मानव को अपने ज्ञान ध्यान को परमात्मा पर लगाये रखना चाहिए कभी भी सुरति विमुख नहीं करना चाहिए ।। हमारे जीवन में जो कर्म का अभाव (निष्क्रियता) है, वर्तमान आचरण व पूर्वजन्म का कर्मफल सभी प्रकार के कर्म ज्ञान रूपी छूरी से परिश्रम (सेवा) द्वारा धीरे–धीरे (काटा) दूर किया जा सकता है ।

साखी (भावार्थ)– सतगुरु कहतें है कि ज्ञान रूपी चाकू को अवश्य धारण करो । जिससे दुर्बुद्धि, कलह, पाप सभी कर्म कट जायेगा तथा परमात्मा 'सत्पुरुष' की शरण एवं सतगुरु की सेवा करने से सभी प्रकार के पाप (दुःख) मिट जायेगा ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि भेषधारी साधु हों या असाधु उन्हें देखने पर उनके चरणों में शीश झुकाना चाहिए । उनके शीतल चरण को स्पर्श करना चाहिए ये हृदय में सुख व शान्ति को देने वाले होतें हैं । तात्पर्य यह है कि विना विवेक के साधु एवं असाधु को नहीं जाना जा सकता इसके लिए सभी वेशधारी की भक्ति (सेवा) करने पर धीरे–धीरे विवेक ज्ञान प्राप्त हो जाता है तत्पश्चात् साधु असाधु का पारख करके सेवा करनी चाहिए । जिससे ज्ञान प्राप्त हो जायेगा ।

टिप्पणी– ताप–दैहिक, दैविक और भौतिक । धर्म– धारयते इति धर्मः ।

दया अंकुर दिल भक्ति बिरागा । पुलकित ब्रह्म पुनीतम जागा ।।
जागै सुरति ज्ञान लवलावै । अंकुर भक्ति बिरह बिलगावै ।।
दया धरे दिल करै विवेखा । गुरु गमि ज्ञान रहे चित पेखा ।।
बिनु दिल दया धर्म नहिं लोका । बिनु सत्संग मेटै नहिं शोका ।।
शीतल परिमल बास सुबासा । निकट वृक्ष सभ लेहिं निवासा ।।
परिमल पारस तामें लागा । मिटा कर्मं काठ को दागा ।।

शब्दार्थ – विरागा=वैराग्य । पुलकित=प्रसन्न । पुनीतम=पवित्र, शुद्ध । लवलावै=प्रेम, लगन, ध्यान । बिरह=बियोग । बिलगावै=वैराग्य जागृत होना । विवेख=विवेक । करै=करना । गमि=जानना, पहुँच । पेखा=देखा । लोका=तीनों लोक में । बिनु=बिना । मेटै=मिटना । परिमल=चन्दन, सुगन्ध । लीन्ह=लेकर । निवासा=निवास करता है । पारस=स्पर्श करके गुण परिवर्तन करना । कर्म=गुण, स्वभाव । काठ=लकड़ी । दागा=दाग, चिन्ह ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि सन्त की सेवा करने से दिल में वैराग्य जागृत होता है । इससे ब्रह्म प्रसन्न होता है एवं हृदय में पवित्रता आती है तथा सुरति जागती है एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है । भक्ति उत्पन्न होने पर परमात्मा के प्रति संसार से विरह एवं वैराग्य उत्पन्न होने लगता है ।। मनुष्य को हृदय में दया को धारण कर विवेक करना चाहिए तथा गुरु के ज्ञान उपदेश को धारण करना चाहिए, क्योंकि इस संसार में हृदय में दया के बिना धर्म नहीं हो सकता तथा विना सत्संग के संशय, शोक दूर नहीं हो सकता जिस प्रकार शीतल चन्दन के निकट निवास करने वाले वृक्षों में चन्दन के सुगन्ध का वास हो जाता है चन्दन का पारस अन्य वृक्षों में लगकर उसे चन्दन बना देता है तथा उसके सभी काठपन को मिटा देता है । उसी तरह सन्त के निकट उनके अमृतमय वाणी को सुनने से ब्रह्म का निवास होने लगता है अर्थात् हृदय में ज्ञान की दिव्य ज्योति प्रकाशित होने लगती है ।

टिप्पणी– अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः । एतत् समासिकं धर्म चतुर्वण्येब्रवीद्मनुः ।। अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, स्वच्छताचारी और इन्द्रियों का संयम उन पांच बातों का पालन मानव धर्म है । – मनुस्मृति

तीनों लोक– मृत्यु, स्वर्ग और पाताल लोक ।

सन्त निकट शुभ बचन बिलासा । सुनत श्रवण ध्वनि ब्रह्म निवासा ।।
शीतल अंग कमल वृगसाना । पुहुप बास भँवरा लपटाना ।।
सतगुरु मिलैं सब शोक मिटाई । दया करहिं फेरि देहिं दिखाई ।।
मुक्ति पदारथ फल समचारी । रहत रहित रस ज्ञान बिचारी ।।
साखी-निर्मल ज्ञान विचारहु, भक्ति करहु लवलाय ।
सत् शरण सतगुरु सेवा, आवागमन मिटाय ।। ३ ।।
जो सत्संग सदा चित राखे । प्रेम सुधा अमृत रस चाखे ।।
सन्त सुधा रस करे बिनाई । ज्यौं मराल नीर क्षीर बिलगाई ।।

शब्दार्थ – पुहुप=फूल, पुष्प । बास=गन्ध । समचारी=दुःख, सुख में समान रहने वाला । लवलाय=प्रेम के साथ लगन होना । आवागमन=आना-जाना । मिटाय=मिट जाना । जौं=ज्यों । सुधाँ=साथ । बिनाई=चुनने की क्रिया, अलग करना । सुधा=मीठा । मराल=हंस । ज्यों=जिस तरह । नीर=जल । क्षीर=दूध । बिलगाई=अलग-अलग करना । निर्मल=मल (दोष) रहित । वृगसाना=प्रसन्न होना । लपटाना=चिपकना, आसक्त होना, प्रेम करना, बँध जाना । अमृतरस=अमृतमय वाणी ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जिस प्रकार से भ्रमर (भौंरा) कमल पुष्प के सुगन्ध से प्रेम करता है उसी प्रकार सन्त के पास शान्ति से उनके उपदेश को ग्रहण करना चाहिए ।। सतगुरु के मिलते ही सब शोक दूर हो जाता है तथा दया करके सतगुरु उस ब्रह्म तक जाने का मार्ग दिखा देते हैं । इस तरह से सुख दुःख में समान रहकर विवेक पूर्वक ज्ञान को धारण करने पर जीव मुक्ति को प्राप्त कर लेता है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि निर्मल ज्ञान का विचार करें जो कि सभी अंधकार पाप को दूर करने वाला है तथा प्रेममग्न होकर सतगुरु की भक्ति करो 'सत्' ब्रह्म के शरण में रहते हुए सत्गुरु तथा सन्तों की सेवा करने से जीव आवागमन, जन्म-मृत्यु के बन्धन से छूट जाता है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जो सत्संग को हमेशा चित्त में रखता है वह उस परमात्मा के दर्शन रूपी अमृत रस का आनन्द लेता है । जो सन्त होता है वही इस अमृत रस को संसार से अलग कर चुनकर ग्रहण करता है तथा दूसरों को भी उस अमृत रस का पान कराता है । जैसे हंस नीर-क्षीर (दूध) को अलग कर देता है ।

टिप्पणी- सतगुरु- सत् मार्ग पर ले जाकर 'सत् ब्रह्म' का दर्शन कराने वाला ।'

छोड़ि क्षीर नीर ज्यों पियई । नाम निरखि ऐसो चित धरई ।।
संसृत जल पय भीतर रहई । विवरण बिलगि सो इमि कर करई ।।
करहु बिवेक विचारहु ज्ञानी । जीवन जन्म सुधारस बानी ।।
तेजि अचेत चेत लवलावे । ज्यौं हारिल लकड़ी निर्मावे ।।
हारिल टेक लकड़ी पर राखा । ऐसो प्रीति अमृत रस चाखा ।।
ज्यों चुम्बक पारस गाँसी पावे । छोड़ि कठिन निकट चलिआवे ।।
साखी- प्रीति करो सत्नाम से, तेजि सकल भ्रमभाव ।
मिथ्या जन्म जग जातु है, फेरि धृग ऐसो न दाव ।। ४ ।।

शब्दार्थ – पियई=पीना । निरखि=निरीक्षण करके । धरई=रख लेना, धारण करना । संश्रित= संयुक्त, मिला हुआ । पय=दूध । विवरण=व्याख्या, वर्णन । बिलगि=अलग । सो=वह, समान । इमि=इस प्रकार । कर=करके । विवेक=यथार्थ ज्ञान । सुधारस=अमृत । बानी=वाणी । तेजि=छोड़कर । अचेत=अज्ञानावस्था । चेत=चैतन्य अवस्था । लवलावे=ध्यान लगाना । निर्मावे=निर्माण करना या बनाना । टेक=सहारा, आधार । गाँसी=भेदन करना, रूकावट । कठिन=दुरुहता । मिथ्या=व्यर्थ । धृक् = घृणा, निन्दा ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जैसे हंस दूध को अलग कर जल को पी जाता है दूध और पानी को अपने पारस से अलग कर देता है उसी तरह से ज्ञानीजनों/विवेक विचार करके अपने मानव जन्म को सतगुरु के अमृतमय वाणी के उपदेशों से सफल बनाइए । जीव इस संसार में भटककर अपना ज्ञान भूल गये हैं । अतः अब से ज्ञान में आ जाइए । जिस प्रकार हारिल पक्षी लकड़ी को अपने पंजे में फँसाकर हमेशा उसी के सहारे बैठता है । उसी प्रकार मनुष्यों तुम परमात्मा के नाम को धारण कर लो । इस प्रकार के सहारा व प्रीति से अमृत फल की प्राप्ति होगी तथा जीव परमात्मा के पास पहुँच जाता है जिस प्रकार से चुम्बक का पारस गुण प्राप्त करके लोहा (दुरुहता) कठिनाई को छोड़कर चुम्बक के पास चला जाता है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि इस संसार का भ्रम, आडम्बर को छोड़कर सत्नाम से प्रीति करो क्योंकि यह मनुष्य जन्म दुर्लभ है । यह व्यर्थ ही संसार में जा रहा है । पुनः ऐसा सुन्दर अवसर नहीं मिलेगा । तुम इस जन्म में ऐसे अवसर से घृणा नहीं करो । परमात्मा का भजन करो, समय बहुत मूल्यवान है ।

टिप्पणी- आधुनिक मानव की तो शिकायत यह है कि समय नही मिलता । न पड़ने का समय है, न घूमने का समय है, न खाने की फुर्सत है और कोई कोई तो यहाँ तक कह देते हैं कि मरने की भी फुर्सत नहीं है । यह समय का अभाव वास्तविक नहीं, स्वयं उसी के द्वारा पैदा किया गया है । समय की हत्या करने वालों को समय मिलेगा भी कैसे । मूल्यवान समय की हत्या वास्तव में आत्महत्या सरीखा है ।

मिथ्या जीव गये यम के द्वारा। जन्म जन्म भरमें संसारा ।।
मर्कट मूठि ज्यौं जढ़ को ज्ञाना। त्यौं त्यौं बधिक काल नियराना ।।
ज्यौं ज्यौं वृद्ध होत तन छीना। त्यौं त्यौं माया विषय रस भीना ।।
थकित चरण चलु चक्षु न सूझे। विषम बाँण उर अन्दर अरुझे ।।
सरजोर काल निकट नियराना । मृतक अन्ध तन भीतर समाना ।।
पकड़ि प्रान के कष्ट अति दीन्हा। तप्त शिला पर तावन लीन्हा ।।
धरहिं झुलावहिं फेरिदेहिं डारी। बहुते कष्ट देहिं तेहिं मारी ।।
तहाँ कोई नहिं राखनिहारा। यम जीव बाँधि नरक महँ डारा ।।
निर्गुण नाह से प्रीति न लाई। आगत करहिं न भजन उपाई ।।

शब्दार्थ – दाँव=अवसर । न=नहीं । प्रीति=प्रसन्नतायुक्त प्रेम । भाव=चित्त का विकार । यम=यमराज । भरमे=भ्रमण करना । मर्कट=बन्दर । मूठि=मुट्ठी । जढ़=मूर्ख, अज्ञानी । बधिक=बध करने वाला । नियराना=नजदीक आना । क्षीना=क्षीण । माया=आसक्ति । भीना=भीगना, लगाव । चक्षु=नेत्र । सूझे=दिखाई देना । विषम=कठिन । उर=हृदय । अरूझे=फँसना । सरजोर=अवज्ञाकारी, हठपूर्वक । तप्त=गर्म । शिला=पत्थर । तावन=दण्ड, जुर्माना । आगत=आया हुआ ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि जो जीव सत्नाम का भजन नहीं किया जीवन को व्यर्थ बिता दिया वे यमराज के द्वारा जन्म जन्मान्तर चौरासी लाख योनियों में भटकते फिरते हैं यह मनुष्य लोभवश विषय का त्याग नहीं करता जिस तरह मूर्ख बन्दर दाने के लिए अपनी मुट्ठी नहीं खोलता और सुराही से मुट्ठी न निकलने के कारण बहेलिया आकर पकड़ लेता है। उसी तरह मनुष्य जैसे-जैसे बृद्ध होता जाता है वैसे-वैसे उसकी आसक्ति विषय में और बढ़ जाती है। चलते समय पैर थक जाते हैं तथा नेत्रों से मार्ग नहीं सूझता तब उसे पश्चाताप होने लगता है। कि मेरा जीवन व्यर्थ चला गया। परन्तु यमराज उसकी एक भी बात को नहीं सुनता और शरीर में प्रवेश कर प्राण को पकड़कर रस्सी में बाँधकर झुलाता, पटकता व मारता है। वहाँ पर कोई रक्षा करने वाला नहीं होता और यमराज जीव को बाँधकर नरक (शिकम) में डाल देता है क्योंकि तुमने उस निर्गुण पति से प्रीत नहीं लगाया और न ही आगे उसे प्राप्त करने के लिये भजन उपाय किया।

विषय– ज्ञानेन्द्रियों द्वारा गृहीत होने वाले पदार्थ (रस, रूप, गन्ध, स्पर्श और शब्द)

टिप्पणी– अच्छे दिन पीछे गये, गुरु से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करे, चिड़ियां चुग गई खेत ।।

सत्गुरु गुरु नहीं पहिचाना। नहीं सन्त सेवा लपटाना ।।
नहीं दया दर्द दिल आना। परआतम नाहीं पहिचाना ।।
साखी– सो गये नर्क की खानि में, जो जस करे उपाय ।
जन्म कोटि भर्मंत फिरे, मूर्च्छि-मूर्च्छि पछताय ।। ५ ।।
मृग मद माति आपनि पै खोवे। काल हाथ जीव जन्म बिगोवे ।।
नाभी फारि कस्तूरी आना। एक देखि मद एक दीवाना ।।
केहरि प्रतिमा देखि भुलाना। कूदि परा पीछे पछताना ।।
आगे करब भक्ति निजु कर्मा। परा अचानक जानु न मर्मा ।।

शब्दार्थ – सो=वे, वह लोग । सतगुरु=सत् (ब्रह्म) को बताने वाला गुरु । सन्त=समान भाव रखने वाला। गुरु=सांसारिक गुरु। जस=जैसा। कोटि=करोड़। भर्मत=भटकते हैं। मूर्च्छि=बेहोश। मृग=हिरन। मद=नशा, उन्माद। मातना=नशे में होना। पै=अधिकार बिगोवे=गवाना, व्यर्थ बिताना ।मर्मा=भेद। रति=सम्भोग सुख। गुमान=गर्व, अहंकार। ऐठना=अकड़, द्वेष। केहरि=सिंह। खानि=खान, खाली जगह, घोर। आपनि=अपने ऊपर । आपनि=अपनी ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि तुमने गुरु और सत्गुरु का पहचान नहीं किया और न ही सन्त महात्माओं की सेवा किया। तुम्हारे हृदय में न दया का भाव आया और न तुमने दूसरे की आत्मा के दुःखदर्द को समझा

साखी (भावार्थ)– सत्गुरु कहते हैं कि जो लोग जिस तरह का कर्म, आचरण किया वे कर्मानुसार नरक की खानि में चले गये तथा करोड़ों जन्म तक अज्ञानावस्था में भवसागर में चक्कर लगाते हुए पश्चाताप करते हैं। इसलिए नरक से बचने के लिए परमात्मा का भजन करना आवश्यक है।

चौपाई (भावार्थ)– सत्गुरु उदाहरण देकर कहते हैं कि जैसे बहेलियों की ध्वनि सुनकर हरिण अपना सन्तुलन खो बैठता है उसी तरह जीव माया में पड़कर अपना जीवन काल (यमराज) के हाथ में व्यर्थ ही खो जाता है। जब बहेलिया हिरन के नाभि को फाड़कर कस्तूरी निकालता है तब उसकी सुगन्ध से दूसरे हरिण भी अपना सुध-बुध खो बैठते हैं उसी प्रकार जीव देखा देखी करके यमराज के हाथ में चला जाता है तथा जिस प्रकार से सिंह कुआँ के जल में अपनी प्रति-छाया-देखकर दूसरे सिंह के भ्रम से कूद जाता है तथा बाद में पश्चाताप करते हुये प्राण खो देता है उसी तरह से मानव यह सोचता है कि अभी समय है बाद में भक्ति-करूँगा अचानक ही मृत्यु हो जाती है तब पश्चाताप करना पड़ता है।

टिप्पणी– गुरु– गुरु अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश को देने वाला।

वेश्या भाँडहिं दीन्हों दाना। वेश्या रति रहे लपटाना ।।
ना गुरु सेवा ना सन्त पहचाना । ना परमारथ दिल में आना ।।
करहिं गुमान अति ऐठहिं बैना। सन्त द्रोह कहाँ सुख चैना ।।
सन्त द्रोह जानि जिन्हि कीन्हा । बाँधे काल नरक तेहिं दीन्हा ।।
नरक खानि परा जीव जाई । करहिं कल्पना कोटि उपाई ।।
साखी- परमारथ के कारणे, सन्त जो करहिं पुकार ।
नाम सुनत विषि लागहिं, ताके वार न पार ।। ६ ।।
परमारथ सुनो चित लाई। दिल अन्दर की दुर्मति जाई ।।
कहें दरिया सुनु सन्त सुजाना। भक्ति हेतु सुमिरो निजु ज्ञाना ।।
जढ़ता जक्त युक्ति से रहना। आपन सत् आपु में गहना ।।

शब्दार्थ – वेश्या=बजारू स्त्री, रंडी । कल्पना=सोचना । खानि=खान । विषि=जहर । पार=उस पार अन्तिम छोर तक । वार=इस पार का किनारा । सुजान=चतुर, ज्ञानी । सुमिरन=स्मरण, जाप । जढ़ता=अज्ञानता, मूर्खता । जक्त=संसार । युक्ति=उपाय । गहना=धारण करना, पकड़ना । द्रोह=अपराध, बैर । भाँड़हिं=भाट, वेश्या का मालिक, नट । दुर्मति=कुबुद्धि ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि मनुष्य अपने क्षणिक सुख के लिए भाँट व वेश्याओं को दान देता है तथा वेश्या के साथ रति सुख में लिप्त रहता है ।वह अपने माता-पिता गुरु, साधु, सन्त की सेवा नहीं करता और नहीं वह दूसरे का उपकार करता है बल्कि दूसरे को सताता व शोषण करता है । वह सन्त को देखकर अहंकार, घमंड से भरी व्यंग वाणी बोलता है ।। सन्तों को कष्ट देने व उनसे द्रोह करने से सुख-शान्ति नहीं मिलती । सन्तों से जो जानबूझकर द्रोह, वैमनस्यता करता है उसको यमराज पकड़कर नरक में डाल देता है । नरक में जीव के जाने पर वह अनेक प्रकार का उपाय करता है परन्तु उसी में भटकता रहता है ।

साखी (भावार्थ)- सतगुरु कहते हैं कि सन्त परमार्थ के लिए लोगों को ज्ञान उपदेश देते रहते हैं । परन्तु उनका उपदेश जिनको कड़वा लगता है उसका इस लोक में कल्याण नहीं होता और नहीं वह परलोक के लिए उसका कल्याण होता है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि इस परमार्थ रूपी वाणी को चित्त लगाकर सुनो इससे दिल की सभी दुर्मति दूर हो जायेगी । अतः सज्जन सन्तों ! भक्ति करो जिससे ज्ञान उत्पन्न होगा तथा सुमिरन ध्यान करने पर जीव जन्म-मृत्यु के बन्धन से छूट जायेगा । यह संसार जढ़ है । इसलिए युक्ति से रहकर सत्नाम का सुमिरन, भजन अपने हृदय में करो ।

रति- यह बारह प्रकार का होती है ।

मैथुन- यह आठ प्रकार का होता है-श्रवण, कीर्तन, सुमिरन, चिन्तन, एकान्त, वार्तालाप, दृढ़संकल्प, प्राप्ति ।

टिप्पणी- परमार्थ- परम+अर्थ=परम-प्रयोजन । जीवन का परम मुख्य प्रयोजन मानव को मुक्ति प्राप्त करना है । अतः संत इसी परम उद्देश्य को ध्यान में रखकर लोगों को उपदेश सुनाते है ।

अपने निर्मल होहु किनारा। ज्यों जल पुरइन रहत निनारा ।।
पुरइन पानि तासु नहिं लागी । ऐसे जन जगत से बागी ।।
कहें दरिया गहु सत् सम्हारी। काम क्रोध त्रिसुना सभ जारी ।।
कामिनि कनक ते रहो निनारा। निर्गुन नाह जिव करहिं उबारा ।।
जहाँ सत्य तहाँ चोर न खाई । खोजो सत्य कीन्ह निर्माई ।।
साखी- सत्पुरुष निर्बान हहिं, चौथा लोक निवास ।
तीनि लोक पीछे हुआ, ज्ञान कीन्ह प्रकाश ।। ७ ।।
सत्-सत् सब करे पुकारा। सत्य चीन्हे सो उतरे पारा ।।
सत् चिन्हावे सो गुरु ज्ञानी। सत् शब्द छपलोक की बानी ।।
बिनु सतगुरु नहिं सत् पहिचानी। बिनु पद परचे कवन गति ठानी ।।

शब्दार्थ – पुरइन=कमल का पत्ता । निनारा=अलग, न्यारा । बागी=न दबने वाला । त्रिसुना=तृष्णा । जारी=भस्म करना । उबारना=बचाना, निकालना । खाई=निगल जाना, समाप्त । निर्माई=निर्माण किया । निर्वान=मुक्त, अचल । ज्ञानी=ज्ञान को जानने वाला । छपलोक=सत्लोक, अमर लोक । चीन्हें=जानना । पद=अधिकार, स्थिति । गति=दशा, पहचान । ठानी=निश्चित करना, दृढ़ । बिनु=बिना । परचे=परिचय ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि तुम अपने को संसार से अलग करके पवित्र हो जाओ जिस प्रकार से कमल का पत्ता पानी में रहने पर भी उस पर पानी का लेप नहीं लगता इसी प्रकार परमात्मा को भजन करने वाला भी संसार में रहते हुए संसार का प्रभाव उसके ऊपर नहीं पड़ता ।। सभी प्रकार के विचारों काम, क्रोध, तृष्णा सभी को नष्ट करके सत्नाम का हृदय से स्मरण करो तथा कामिनी, कनक से अलग रहो इस प्रकार वह निर्गुण 'ब्रह्म' इस जीव का उद्धार करेंगे । केवल सत्पुरुष ही जीव का उद्धार कर सकते हैं । सत्पुरुष का जहाँ निवास व दया दृष्टि है वहाँ उस जीव को यमराज नहीं पकड़ सकता । अतः उस सत् 'ब्रह्म' का खोज करो ।

साखी (भावार्थ)- सतगुरु कहते हैं कि वह सत्पुरुष अचल, निर्वान है तथा चौथा लोक (छपलोक) में उनका निवास है । उन्होंने बाद में इस तीन लोक को बनाया तथा ज्ञान का प्रकाश हुआ, इसका विवेचन करता हूँ ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि सत्य-सत्य शब्द का उच्चारण सभी करते हैं । परन्तु जो सत्शब्द को पहचान जायेगा वह भवसागर पार उतर जायेगा । जो ज्ञानी गुरु होते हैं 'सत्' का पहचान करातें हैं । यह 'सत्' शब्द छपलोक की वाणी है । विना सतगुरु के 'सत्' को नहीं पहचाना जा सकता स्थिति को जाने बिना किस पहचान से ब्रह्म (सत्) को जाना जायेगा ।

मनमत ज्ञान कथे संसारा । रूप न रेखा न रंग करारा ।।
जाके पिंड न जाके नयना । पिंड प्रान नाहीं मुख बैना ।।
जाके रूप न जाके रेखा । अँधरे आँखि कबहिं नहिं देखा ।।
सुनहु सन्त यह करहु बिचारा । सत्पुरुष बोये सभते न्यारा ।।
जाके पिंड प्रान है छाया । तिनहीं सभे जगत निर्माया ।।
वोये सभ करहिं निसाफ बनाई । ऐसो सत्पुरुष हहिं भाई ।।
अजर काया सिर छत्र बिराजे । अनहद बाजा कोटिन्ह बाजे ।।
साखी- सत्पुरुष वोय अजर हहिं, मरे जीवे नहिं जाय ।
कहें दरिया ऐनक मिले, जोतिहिं जोति समाय ।। ८ ।।
ऐनक सुरति चन्द ज्यों सूरा । झलके पदुम गगन भरि पूरा ।।

शब्दार्थ - कथे=कहना । करारा=तेज, दृढ़ । पिंड=शरीर । प्रान=सचेतन युक्त । तिनही=उसी ने । निसाफ=इंसाफ, न्याय । काया=शरीर । अजर=बूढ़ व नष्ट न होने वाला । छत्र=अधिकार, चारो ओर । अनहद=एक आत्मा की अनुभूति जिसे साधक सुनता है । ऐनक=चश्मा । सूरा=सूर्य । गगन=आकश, शून्य । पदुम=कमल, पद्म । सुरति=ध्यान, स्मरण, रूप । बैना=वाणी । कबहीं=कभी भी । आँधर=ज्योति विहीन ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि इस संसार के लोग अपने अपने ज्ञान को मनमत ढंग से कहते हैं वे ब्रह्म को बिना शरीर प्राण वाणी और मुख वाला बताते हैं तथा वे कहते हैं कि उसके पास न रूप है न कोई चिन्ह है । वे अज्ञानी व दिव्य दृष्टि विहीन हैं इसलिए वे परमात्मा को कभी नहीं देख सके ।। सत्गुरु कहते हैं कि संतजन यह सुनकर इस पर विचार करें । वह सत्पुरुष माया व त्रिगुण से अलग है । उसके पास शरीर व प्राण है उसी का बनाया हुआ सब संसार है । उसी ने सभी प्रकृति को बनाया है वह अजर-अमर है अविनाशी है तथा उसके छत्र छाया में सभी विराजमान हैं । उनके यहाँ अमरलोक में करोड़ों अनहद नाद (ध्वनि) होती रहती है ।

साखी (भावार्थ)- सतगुरु कहते हैं कि वह सत्पुरुष अजर अमर तथा मरने-जीने वाला नहीं है । ज्ञानरूपी चश्मा मिल जाने पर दिव्य दृष्टि के माध्यम से उस ब्रह्म की परम ज्योति को प्राप्त कर जीवात्मा उसी ज्योति में समा जाती है ।

चौपाई (भावार्थ)- सतगुरु कहते हैं कि दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाने पर 'सुरति' में सूर्य, चन्द्रमा दिखाई देने लगता है तथा अष्टदल कमल की झलक शून्य मे पूर्ण रूप से दिखाई देने लगती है ।

टिप्पणी- अष्टदल कमल- मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा और सुरति कमल ये अष्टचक्र अष्टदल कमल के नाम से जाना जाता है ।

मुरलि टेरि गगन में आवै । बोलनिहार सो इहई बजावै ।।
जब लगि काम काबू नहिं आवै । तब लगि मुरलि न टेरि सुनावै ।।
सोहँ सुरति शून्य मँह पेखै । अजपा मूल दृष्टि मँह देखै ।।
अविगति रूप अर्धं महँ राखै । पुहुप वास अमृत रस चाखै ।।
सुरति सोहंगम मूल में जाई । दरशन देखि कमल वृगसाई ।।
बिनु सतगुरु को भेद बतावै । गुप्त नाम यह प्रगट दिखावै ।।
जीव के मूल नाम जो पावै । काल फाँस के दूरि बोहावै ।।
काल फाँस जबहीं ले आवै । ज्ञान खर्ग ले ताहि दिखावै ।।
साखी- ज्ञान खड्ग दृढ़ के गहो, सतगुरु चरण निवास ।
सीसपटकि यम जाईहैं, छपलोक में बास ।। ९ ।।

शब्दार्थ - टेरि=ध्वनि । काम=विषयाशक्ति, इच्छा । काबू=नियंत्रण । लगि=तक । पेखै=देखे । अर्ध=नीचे, अन्दर । सोहंगम, सोहं, सोऽहम=मैं वह हूँ (अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ) । सोहँ=शपथ सामने । अजपा=जिस मंत्र का उच्चारण सांस लेने व छोड़ने में होती है । वृगसाई=विकसित होना । बास=गन्ध । फांस=बन्धन । बोहावै=दूर कर देना, टूटना । को=कौन, । खड्ग=तलवार । शीशपटकि=पछताकर ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि 'सुरति' में मुरली की ध्वनि शून्य त्रिकुटी में आने लगती है मानो बजाने वाला यही पास में ही बजा रहा हो परन्तु जब तक काम (इंद्रियेच्छा) नियंत्रण में नहीं होगी तब तक मुरली की ध्वनि नहीं सुनाई देगी ।। जब सोऽहम् अर्थात् जीव रूपी ब्रह्म का उस 'परमब्रह्म' पर सुरति लगेगा तो अजपा (सोऽहम्) अर्थात् जीव का मूल रूप दृष्टि में प्राप्त हो जायेगा । उस परमात्मा के अमृततुल्य दर्शन से उनके स्वरूप को अपने अन्दर बिठा लेते हैं । जब जीवात्मा की सुरति परमात्मा में लग जाती है तो उनके दर्शन से जीव प्रसन्न हो जाता है ।। बिना सतगुरु के इसका भेद कोई नहीं बता सकता । सतगुरु ही गुप्त नाम (मन्त्र) का साक्षात्कार कराते हैं । जीव का मूल नाम है । इसे जो प्राप्त कर लेता है उसके यमराज का बन्धन दूर हो जाता है तथापि अगर यमराज (रोग), शोक, दुःख आदि) का फांस लेकर आता है तो उसे ज्ञान रूपी तलवार से काटकर समाप्त कर देते हैं ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि सतगुरु के शरण में रहकर ज्ञान रूपी तलवार को दृढ़ता के साथ धारण करो । इससे यमराज पछताकर (सिर धुनकर) चला जायेगा तथा जीवात्मा का छपलोक में निवास हो जायेगा ।

टिप्पणी- पपीहा- एक पक्षी जो केवल स्वाती नक्षत्र का पानी पीता है तथा उसी बूँद की आशा में रहता है ।

तेजहु कल्पना दुरमतिं दूरी । जीवन थोर काहें मुख मोरी ।।
जीवन थोर संसय महँ भूला । नाम समीप रहो समतूला ।।
गहे विश्वास तो आश पुरावै । पपीहा बून्द स्वाती झरी लावै ।।
पिये बून्द जो सुरति लगाई । नाम निरखि ऐसे पद पाई ।।
बरसे बून्द गगन असमाना । जल में सीप सुरति जो ठाना ।।
स्वाती सीप की एही प्रीती । सुपट खोलि मिले बून्द सो रीती ।।
बून्द समाने निर्मल मोती । निर्मल ज्ञान बरे तहाँ ज्योति ।।
सीप के आश पुरावनिहारा । पुजै आश जो रहे करारा ।।
और सन्त सब सीप समाना । सत्गुरु पारस मूल ठिकाना ।।
पारस परसे मोती होई । कहें दरिया सतगुरु हहिं सोई ।।

शब्दार्थ – मोरी=मुड़ना । संशय=दुविधा, भ्रम । समतूला=समान । पूरावै=पूर्ण होना । आश=इच्छा । गगन=आकाश, अंतरिक्ष । आसमान=आकाश, स्वर्ग । ठाना=दृढ़, निश्चय करना । सुपट=मुख । रीति=नियम से, प्रकार । सीप=समुद्र या नदी में एक कड़ी कवच में रहने वाली जीव । स्वाती बूँद=स्वाती नक्षत्र का पानी । समाने=भीतर प्रवेश करना । बरे=जलना, प्रकाशित होना । पुरावनिहारा=पूरा करने वाला । पूजै=पूर्ण होना । ठेकाना=स्थान । परसे=स्पर्श ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि सभी प्रकार के संशय को छोड़ दो, कल्पना का त्याग करके दुर्मति को दूर करो । इस अल्प जीवन में परमात्मा से क्यों मुख मोड़ लियो हो । यह थोड़ी सी जिन्दगी को संशय में भूल गये इसलिए अब से परमात्मा का नाम निरन्तर समान रूप से स्मरण करो । हृदय में विश्वास को धारण करने पर आशा पूर्ण होती है । जैसे पपीहा स्वाती नक्षत्र में वर्षा के बूँदों की आशा में रहता है तथा उसी बूँद को सुरति लगाकर पीता है इसी प्रकार नाम पर अटल रहकर प्राणी परम पद को प्राप्त कर लेता है ।। जिस प्रकार सीपी स्वाती बूंद से प्रीति करके दृढ़ निश्चय किये रहता है और आसमान से बूँद नीचे आने पर प्रेम से सुपट खोलकर अच्छी प्रकार से बूँद जल को ग्रहण करता है । उस स्वाती का बूँद प्रवेश करने पर उसमें वेशकीमती निर्मल मोती पैदा हो जाता है, उसी तरह से निर्मल ज्ञान संसार में प्रकाशित होने लगता है । जिस प्रकार से अपनी आशा पर दृढ़ रहने पर सीपी में मोती पैदा होता है उसी प्रकार प्राणी परमात्मा में विश्वास रखने पर उसे अभीष्ट पद की प्राप्ति होती है । जितने भी सन्त हैं वे सीप के समान हैं और सतगुरु का ज्ञान स्वाती के समान है तथा परमात्मा का नाम पारस है । जिससे प्राणी उस 'ब्रह्म' को प्राप्त कर लेता है जिसके द्वारा जीव 'ब्रह्म' को प्राप्त करता है वही सतगुरु है ।

टिप्पणी– विशेष– कुल सत्ताइस नक्षत्र होते हैं जिसमें वर्षा के अन्त में स्वाती नक्षत्र होता है । मोती सात प्रकार के होते हैं जिसमें दरिया साहब ने पाँच प्रकार के मोती का वर्णन किया है —

१–बांस से उत्पन्न (बंशलोचन) २–केले से उत्पन्न (कपूर) ३–जंगली सूकर से उत्पन्न ४–सर्प से उत्पन्न (मणि) ५– सीपी से उत्पन्न ६–हाथी से उत्पन्न (गजमुक्ता) ७– एक समुद्री मछली के गर्भ से उत्पन्न – इसे पानी में रखकर देखने से जल के भीतर दूर तक की सभी वस्तुएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं ।

सीप चेला थिर रहे इमाना । स्वाती गुरु जो आय तुलाना ।।
साखी– बिनु पारस मोती नहीं, स्वाती गुरु हैं ज्ञान ।
सीप पारस जबहिं मिले, तो मोती होय अमान ।। १० ।।
साखी– सकुच मीन पारस कही, मोती परसे सोय ।
चारि चरण दुइ मुख है, बूझे बिरला कोय ।। ११ ।।
साखी– गजमुक्ता बिरला कहीं, कुँजल बहु संसार ।
केहि पारस से उपजे, पंडित करो बिचार ।। १२ ।।
गजमुक्ता मस्तक जेहिं होई । मस्तगयंद कहावे सोई ।।
स्वाती झरी वर्षन जब ठाना । मस्तक बून्द जो आए तुलाना ।।
चुँगल चिड़िया तेहि अवसर अई । मस्तक पारस दीन्ह लगाई ।।

शब्दार्थ – थिर=स्थिर, दृढ़ । इमाना=सच्चाई, ईश्वर पर विश्वास । तुलाना=पहुँचना । अमान=परिमाण रहित, शरण । मीन=मछली । सोय=वह, उसका । मुक्ता=मणि । उपजे=उत्पन्न । गज=हाथी । कुंजल=हाथी । गयन्द=हाथी । झड़ी=हल्की किन्तु लगातार वर्षा । तेंहि=उस । सारा=पूरा, सम्पूर्ण । मस्तक=सिर ।

चौपाई (भावार्थ)– सतगुरु कहते हैं कि शिष्य रूपी सीप सत्य पर स्थिर, दृढ़ रहता है तथा गुरु रूपी स्वाती बूंद तथा दरिया पारस लगाते हैं ।

साखी (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि स्वाती की बूँद मिलने पर भी बिना पारस के सीप में मोती नहीं बनता ज्योंही सीपी को पारस मिलता है तो उसमें परिमाण रहित मोती उत्पन्न हो जाता है ।

साखी (भावार्थ)– इसी समय चार पैर और दो मुख की एक 'सकुच' नामक मछली आकर मुख से स्पर्श करती है तब उसमें मोती उत्पन्न हो जाता है, इस रहस्य को बिरले लोग ही जानते हैं । उसी तरह शिष्य रूपी सीपी में गुरु ज्ञान रूपी स्वाती की बूँद आकर मिलती है तथा सतगुरु का 'नाम' रूपी पारस लगने पर 'दिव्य ज्योति' रूपी मोती उत्पन्न होता है ।

साखी (भावार्थ)– सतगुरु कहते हैं कि संसार में बहुत से हाथी हैं परन्तु गजमुक्ता (मणि) किसी–किसी हाथी में पाया जाता है अतः विद्वद्जनों विचार करो कि वह किस पारस से उत्पन्न होता है ।

चौपाई (भावार्थ)– जिस हाथी के मस्तक में मणि होता है उसे 'मस्तगयन्द' कहते हैं । जब स्वाती नक्षत्र में हल्की वर्षा होने पर जल हाथी के मस्तक पर पहुँचता है उसी समय 'चुंगल' नामक पक्षी आकर उसके मस्तक पर अपने चोंच का पारस (स्पर्श) लगाती है ।

टिप्पणी– सीप– यह समुद्र अथवा नदियों में पाया जाता है । सीपी का मोती बहुमूल्य रत्न है ।

उपजे मुक्ता निर्मल सारा । है कोई पंडित करे बिचारा ।।
सतगुरु ज्ञान बुझो निजु सोई । बिनु पारस मुक्ता नहिं होई ।।
मूल सोहँगम शब्द है सारा । सतगुरु सोई जो हंस उबारा ।।
जाके पारस मूल ठेकाना । दिव्य दृष्टि जो गहे निशाना ।।
सोहँग सुरति शून्य महँ पेखे। मोती झरी गगन महँ देखे ।।
सोई सतगुरु खोजहु ज्ञानी । मनमत ज्ञान तेजो जढ़ प्रानी ।।
तन के त्रास जो बहुत दिखावे । पंचअग्नि में तनहिं जरावे ।।
उर्धमुख झूले दिन और राती । जल के निकट शयन बहु भाँति ।।

शब्दार्थ – सोई=वही, इसलिए । निशाना=ध्यान । महँ=में । सैन=संकेत, इशारा, शयन । त्रास=डर, भय । भरी=सम्पूर्ण । पय=दूध । भूभूति=वह भस्म जिसे शिवभक्त शरीर पर लगाते हैं । ताते=उससे । उबारा=बचाना, निकालना, । छारा=धूल, राख । मद=अहंकार, नशा । कपट=छल । जानी=जान बूझकर ।

चौपाई (भावार्थ)– चुंगल पक्षी द्वारा स्पर्श करने पर उस हाथी के मस्तक में पूर्ण पवित्र 'मणि' उत्पन्न हो जाता है । जो पंडित विद्वान हैं इस पर विचारें कि जिस प्रकार से बिना पारस के मणि उत्पन्न नहीं हो सकती उसी प्रकार बिना सतगुरु के उपदेश (नाम) से इस जीवात्मा प्राणी को परमात्मा (मुक्ति) की प्राप्ति नहीं हो सकती ।। सोहंगम (जीवात्मा) का मूल (परमात्मा) नाम या हंसमंत्र है और सतगुरु वह है जो हंस (जीव) का उद्धार करे । जो 'नाम' रूपी पारस को देता है वह परमतत्व को दिव्यचक्षु से धारण करने वाला होता है, उस अद्वैत ब्रह्म को सुरति में देखता है, वह दूसरों को भी मुक्ति देने मे समर्थ होता है ऐसे जीव का उद्धार करने वाले सतगुरु का खोज करो ।। इस संसार में मनमत ज्ञानकथने वाले मूर्ख ढोंगी गुरुओं का त्याग कर दो । ऐसे आडम्बरी भेषधारी लोगों को डर भय दिखाकर अपने चुंगल में फंसा लेते हैं वे नाना प्रकार के दिखावा करते हैं । वे अपने को पंचाग्नि में जलाते हैं । कभी वृक्ष के सहारे मुख को नीचे तथा पैर ऊपर करके योग का दिखावा करते हैं । कुछ भेषधारी जल (नदी) के निकट नाना प्रकार से कभी जल मे कभी कीचड़ में आदि तरह से शयन करते हैं ।

टिप्पणी– पंचाग्नि– अन्वाहार्य, पचन, गार्हपत्य, आह्वनीय और आवरूक्ष्य ।

मृगतृष्णा– मृगा मरुस्थल की कड़ी धूप में वह टीले को वृक्ष जानकर पानी की तलाश में इधर–उधर दौड़ता रहता है ।

गजमुक्ता– यह एक बहुमूल्य एवं दुर्लभ रत्न है ।

पय पीवहिं फल करें अहारा । नङ्गा फिरे तन रहे उघारा ।।
प्रगट भभूति भरीमुख छारा । काम क्रोध निश–दिन बैपारा ।।
मृग–तृष्णा मद माया ना त्यागे । अन्तर कपट विषय रस लागे ।।
पाखन्ड कर्म करहिं सभ जानी । ताते जीवन जन्म भयो हानि ।।
साखी– उलटि मूल कहँ सींचिये, तौ फरे फुले सोहाये ।
सुरति साँच हदय बसे, तौ दुर्मति दूरि सब जाय ।। १३ ।।
जब लगि सूरति साँच नहिं आवे । तब लगि भक्त न दास कहावे ।।
बाँधहिं भेष कपट नहिं छूटा । कठिन काल तन भीतर लूटा ।।
बाँधहिं भेष तिंलक औ माला । सिंगी सेली बहुत रिशाला ।।

शब्दार्थ – फरे=फल लगना । तौ=तो । सिंगी=फूंककर बजाया जाने वाला बाजा (जों सिंग काबना होता है) । सेली=बरछी, सूत आदि की योगियों की बद्धी । भेष=वाह्य रूप पहनावा । भीना=डूबना, आसक्ति । अगम=सुदृढ़, न चलने वाला । रिशाला=छोटी किताब व पुस्तिका ।

चौपाई (भावार्थ)–दरिया साहब कहते हैं कि बहुत से लोग केवल दूध व फल का आहार करते है तथा कुछ लोग निर्वस्त्र होकर नंगे ही घूमते फिरते हैं वे काम क्रोध की आसक्ति से भरे रहते हैं तथा मृगतृष्णा की भांति मद माया का त्याग नहीं करते तथा इस आडम्बरधारी भेष से भीतर कपट व विषयरस में लगे रहते हैं । सब कुछ जानते हुए भी पाखण्ड कर्म करते रहते हैं । इससे उनका यह दुर्लभ मानव जीवन व्यर्थ चला जाता है ।

साखी (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि डार पात को छोड़कर जड़ में पानी देने से वृक्ष में फल फूल की प्राप्ति होती है । उसी प्रकार अनादि 'ब्रह्म' मूल हैं, निरंजन डाल है तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश शाखा है एवं समस्त संसार पत्र है । इसलिए उस 'सत्' 'ब्रह्म' की उपासना करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति हो सकती है । जिस प्राणी के हृदय में सत्य सुरति का निवास हो जाता है तो उसके अन्दर की सभी प्रकार की दुर्मति दूर हो जाती है ।

चौपाई (भावार्थ)– सतगुरु कहते हैं कि जब तक हृदय में सच्ची भक्ति नही आयेगी तब तक वह भक्त व दास कहलाने का अधिकारी नहीं है । आडम्बर स्वरूप दिखावे के लिए भेष बना लेते हैं परन्तु अन्दर छल, कपट भरा रहता है । जिससे यमराज शरीर को अन्दर से कष्ट पहुँचाता है ।

टिप्पणी– परमधर्म श्रुति विदित अहिंसा ।
परनिन्दा सम अघ न गरीसा ।।

टाटी भेष ब्याधा ज्यों कीन्हा । बाँधहिं भेष विषय रस भीना ।।
सतगुरु ज्ञान है अगम अपारा। ज्यौं दरिया जल रहे करारा ।।
उलटिं लहरि फेरि ताहि समाई । जग के लहरि जोगावहु भाई ।।
लहरि जोगाय गमि जो खाई । अन्तहुँ गहिर रहे ठहराई ।।
साखी- कहें दरिया निजु सार हैं, गहिर ज्ञान निजु भेद ।
उलटि मूल कहँ देखिये, ब्रह्म अनूप निषेद ।। १४ ।।
खल को ज्ञान दुष्ट को भावे । कुमति रहे उर निशि दिन दावे ।।

शब्दार्थ – दरिया=समुद्र, नदी । ताहि=उसमें । जोगावना=हिफाजत से रखना, बचाना । गमी=दुःख सहन करना । गहिर=गम्भीर, भारी । निषेद=रोक, प्रतिबंध । जग=जक्त, संसार । ठहराई=स्थिर हो जाना । खाई=ग्रहण करना । ज्यों=जैसे । कीन्हा=करता है । बाँधहिं=धारण करना, बनाना । खल=दुष्ट, दुर्जन । उर=हृदय । दाव=अग्नि, जगह ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि आडम्बरी लोग वेश बनाकर तिलक, माला, सिंगी, सेली, बहुत से छोटी छोटी किताबों को बाँचते रहते हैं। जिस प्रकार से बहेलिया पक्षी को पकड़ने के लिए टाटी (घास-फूस की दीवार) बनाकर पंक्षियों को पकड़ लेता है उसी तरह आडम्बरी भेष धारण कर विषय रस में डूबे रहते हैं ।। सतगुरु का ज्ञान समुद्र की तरह सुदृढ़ अगम, अपार है। इसलिए हे प्राणियों संसार का जो लहर (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तृष्णा आदि) हैं उससे अपने को बचाओ । ऐसा करने पर वह लहर पुनः उसी सतगुरु के ज्ञान रूपी समुद्र में समा जायेगा । इस लहर को जो बचा (जोगा) लेगा वह अन्त में निश्चिंत, गम्भीर व अचल हो जायेगा ।

साखी (भावार्थ)- सतगुरु कहते हैं कि अपने को इस संसार की आसक्ति से विपरीत करके उस परमात्मा के चरणों में लगा देना चाहिए इसी से उस अनुपम ब्रह्म के प्रति जो माया का रूकावट (बन्धन) है वह दूर हो जायेगा । यही गहिर ज्ञान का मुख्य भेद है तथा जीवन का मुख्य उद्देश्य तत्व है जिससे जीव भवसागर पार होकर ब्रह्म से मिल जाता है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि दुर्जन का ज्ञान दुष्ट को अच्छा लगता है क्योंकि उनके हृदय में प्रतिदिन कुमति ही जगह बनाये रहती है ।

टिप्पणी- विषय रस- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द ।

बोवहिं काँट विषय को मूला । अवसर परे भया त्रिशूला ।।
अवसर परे पीछे पछताई । विषि वोवहिं तेहि विष लपटाई ।।
सन्त के विषि अमृत होय जाई । उलटि विषि फेरि विषहिं समाई ।।
सन्त द्रोह करे मूढ़ गँवारा । अपने हाथ आपु पगु मारा ।।
मारे पगु पीछे पछताई । मेटे कुमति तब सुमति समाई ।।
सुमति करहिं निजु सन्त के सेवा । सकल मही का पूजहिं देवा ।।
धन्य सो ग्राम जहाँ सन्त के बासा । तहाँ साहब नित लेहिं निवासा ।।
साखी- धन्य सो ग्राम वोये ठाँव है, जहाँ भजन निर्बान ।
मलयागिरि के बास में, बेधेव काठ अजान ।। १५ ।।

शब्दार्थ – विष=जहर । त्रिशुला=तीन मुख वाला काँटा या नुकीला शस्त्र, कष्टदायी । मूढ़=मूर्ख या नासमझ । मही=पृथ्वी । पगु=पैर । समाई=समा जाना । का=क्या । बासा=निवास । ठाँव=ठहरने का स्थान । मलयागिरि=मलय नामक पर्वत (दक्षिण भारत) । परे=दूर, निकल जाने पर । बोवहिं=बीजारोपण । अजान=अज्ञान, निर्जीव ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि दुर्जन विषय रूपी काँट का मूल बीज बोते हैं जो समय पड़ने पर अति कष्टदायक हो जाता है । फिर अवसर निकल जाने पर बाद में पश्चाताप करने लगता है । विषि का बीजारोपड़ करके उसी विष में आसक्त हो गया । सन्त को विष अमृत के समान हो जाता है और उस विष का प्रभाव उसी विष में मिल जाता है । इस तरह मूर्ख अपने मनोनुकूल सन्त से द्रोह करता है इस प्रकार वह अपने हाथ से अपने ही पैर में चोट मारता है । पैर में चोट मारने के बाद में वह पश्चाताप करने लगता है । जब कुमति मिट जाती है तब हृदय में सुमति का निवास होता है । दरिया साहब कहते हैं कि क्या सम्पूर्ण पृथ्वी के देवी देवताओं की पूजा करते हो केवल सुमति के साथ सन्त की सेवा करने से कल्याण हो सकता है । वह ग्राम धन्य है जहाँ सन्तों का निवास होता है । वहाँ हमेशा परमात्मा की छत्रछाया रहती है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि वह ग्राम तथा स्थान धन्य है जहाँ प्रतिदिन 'निर्वाण' पुरुष का भजन होता है । जैसे मलयागिरि पर चन्दन के रहने से वहाँ पर रहने वाले निर्जीव तुल्य लकड़ी के वृक्षों में उसकी शीतल, सुगन्ध का बास हो जाता है ।

टिप्पणी- पौराणिक ग्रन्थों में कुल सात पर्वत माने गये हैं – महेन्द्रे, मलयः सह्यः, शुक्तिमानृक्ष पर्वतः । विन्ध्याश्च परियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः ।।

खुशबोई चहुँ ओर निवासा । सन्त निकट निजु करहु विलासा ।।
सन्त साहब सामार्थ्य सुजाना । दुर्मति दुरि होय साहब ध्याना ।।
पारस मिले तो कंचन होई । तांमा वाके कहे न कोई ।।
हाट बिके फेरि महँगे मोला । तनिक कसूर नहि तजबिज तोला ।।
ऐसो पारस सन्त समाना । सन्त साहब कहँ एके जाना ।।
तिल पेरे फेरि तेल कहावे । फूल पारस फुलेल सोहावे ।।
पारस फूल से कर्म कटाई । नाम सजीवन पारस पाई ।।
साखी- जाति पाति नहिं पूछिये, पूछहु निर्मल ज्ञान ।
सन्त की जाति अजाति है, जिन्हि पायो पद निर्बान ।। १६ ।।

शब्दार्थ - खुशबोई=सुगन्ध । सुजाना=चतुर, ज्ञानी । हाट=मेला, बाजार । मोला=मूल्य । कुसूर=दोष, भूल-चूक । तोला=बारहमासों की एक तोला । तजबीज=सलाह, निर्णय, निवारण । फुलेल=खुशबूदार तेल । सोहावे=सुन्दर । संजीवनी=मूच्छा को समाप्त करने वाली संजीवनी बूटी ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जहाँ संत का निवास होता है उनके लिए निकट रहने वाले लोगों में शान्ति, ज्ञान का प्रकाश फैलता रहता है । ज्ञानी, सन्त, साहब सामर्थ्यवान होते है तथा साहब का ध्यान करने से दुर्मति दूर हो जाती है ।। जैसे- लोहा पर पारस पत्थर का स्पर्श होने पर वह सोना बन जाता है फिर उसे कोई ताँबा नहीं कहता तथा बाजार में अधिक मूल्य पर बिकता है उसके गुण, तौल में तनिक भी दोष निवारण करने को नहीं रह जाता है । ऐसा ही पारस सन्त का होता है इसलिए सन्त एवं साहब को एक ही जानना चाहिए ।। जिस प्रकार तिल के पेरने पर उसे फिर तेल कहते हैं तथा उसमें फूल का पारस लगने पर सुन्दर फुलेल (सेंट) कहा जाता है ।। जिस प्रकार फूल के पारस से तेल भी फुलेल हो जाता है उसी प्रकार नाम रूपी संजीवनी का पारस लगने पर मनुष्य के गुणों में परिवर्तन हो जाता है तथा वह उत्तम बन जाता है ।

साखी- (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि सन्तों से जाति-पांति नहीं पूछना चाहिए । उनसे आत्मज्ञान ही पूछना चाहिए । जिसने उस परम पद निर्वाण को प्राप्त कर लिया उसकी कोई जाति नहीं रह जाती वे तो परमात्मा के प्रिय हो जाते हैं । वह वर्णों से अलग हो जाता है ।

टिप्पणी- वर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्बाहू राजन्यकृतः । उरुतदस्य यद्वैश्यपद्भ्यां शूद्रोअजायत ।ऋग्वेद १०।२५)

स्वाती बून्द केदली में आये । पारस पाय कपूर कहाये ।।
छोड़ि कर्म निःकर्म कहावे । जाति अजाति नाम से पावे ।।
देह धरे सब जाति अजाति । बोलनिहार बोले बहु भाँति ।।
बोलनिहार सभन्ह महँ बोले । एकै ब्रह्म सबै घट डोले ।।
दर्पन फूटा कोटि पचासा । दर्शन एक सभै महँ बासा ।।
एके दरश दीसे सभ माहीं । हिन्दू तुरुक दोबिधा चित नाहीं ।।
पुरुष एक सभन्हि ते न्यारा । जाको तेज बरते संसारा ।।
जाको अंश जीव सभ अहई । बोलनिहार बोले घट कहई ।।
ज्ञानी होय सो करे बिचारा । ब्रह्म एक हैं पुरुष निनारा ।।

शब्दार्थ - केदली=केला । पाय=प्राप्त कर । देह=शरीर । बोलनिहार=बोलने वाला । भाँति=प्रकार । सभन्ह=सभी । घट=शरीर, पात्र, घड़ा, । डोले=विचरण । दर्पण=शीशा, आरसी । दीसे=दिखाई देना । वरते=प्रकाश, ज्योति । निनारा=न्यारा, अलग ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जैसे स्वाती का बूँद केले में जाने पर पारस पाकर वह कपूर कहलाने लगता है । जो अपने संस्कार जातिगत कर्मों को छोड़कर निःकर्म परमात्मा के ध्यान में लीन रहता है तथा परमार्थ की भावना से कोई कार्य करता है वह जाति से निकलकर अजाति (सन्त, सन्यासी, साधु) आदि का नाम पा जाता है । सभी जाति (वर्णों) के लोग तथा अजाति (साधु, विरक्त, फकीर) सभी माता के शिकम से पैदा होते हैं । शरीर धारण करने पर बहुत प्रकार के नाम, उपाधि जाति के कहलाने लगते हैं । सभी में एक जीवात्मा बोलती है तथा सभी के शरीर में एक ही ब्रह्म का अंश रहता है । जिस प्रकार दर्पण के टूटने पर उसके करोड़ों टुकड़े हो जाते हैं परन्तु इन टुकड़ों में भी वही प्रतिबिम्ब दिखाई देता है ।। उसी तरह से यहाँ पर कोई हिन्दू-मुसलमान नहीं है सभी के शरीर में एक ही ब्रह्म का अंश विचरण कर रहा है ।। उस परमपुरुष परमात्मा जो संसार से अलग रहने वाले हैं । उन्हीं का तेज संसार में प्रकाशमान हो रहा है । उसी का अंश सभी जीव हैं तथा वह सभी शरीरधारियों में विद्यमान होकर बोलता है । वही एक ब्रह्म सत्पुरुष हैं जो सबसे न्यारे हैं । ज्ञानी लोग ही इसका विचार कर सकते हैं तथा इस तथ्य को जान पाते हैं ।

टिप्पणी- ईश्वर अंश जीव अविनाशी । चेतन अमल सहज सुखरासी ।।
-रामचरितमानस

कपूर- एक कीमती पदार्थ है जो औषधि एवं अन्य उपयोग में लाया जाता है ।

साखी- एके ब्रह्म सभे घट, देखो शब्द बिचारि ।
शब्द दुराया ना कहों, कहों सभे परचारि ।। १७ ।।
खून करे मद माँस जो खाई । चौरासी जीव जन्मे जाई ।।
खून करे खून सो पावे । वोएल के वोएल ताहि भर्मावे ।।
वोएल बिना कोई जाय न पावे । कर्म दण्ड फेरि ताहि भर्मावे ।।
साखी- कहें दरिया नहिं बाँचिहो, बिनु दिये कर्म दण्ड ।
कहाँ भागि जीव जाइहो, सात द्वीप नौ खण्ड ।। १८ ।।
तीनि लोक जाकी ठकुराई । वोयल दीन्ह तिन्हुँ जग आई ।।
पहिले वोयल अपनो दीन्हा । जढ़ जीवन को अंक लिखि लीन्हा ।

शब्दार्थ – दुराव=छिपाव, भेद-भाव । परचारि=प्रचार, विस्तार । मद=नशा, अहंकार । जाई=जाना । वोयल=बोयल=बदला, दण्ड । ठकुराई=राज्य, शासन । अंक=चिन्ह, दाग, दफा । ताकर=उसका । जड़=निश्चेतन । ताहि=उसने । आने=आता है । लगि=तक । खून=जीव हत्या । तिन्हु=उसने, वह भी ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि हे ज्ञानीजन ! शब्द का विचार करके देखिये सभी शरीर में एक ही ब्रह्म का निवास है । मैं कोई शब्द बिना छिपाये व बिना भेदभाव के सब विस्तार से कहता हूँ ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जो लोग हिंसा करते हैं मांस मदिरा का सेवन करते हैं वे चौरासी लाख योनियों में जन्म लेते हैं । जो दूसरे का खून करते हैं उसके बदले में अपना खून देना पड़ता है । पाप के कारण नरक में भटकते हैं । बिना बदला दिये कोई भी बचकर नहीं जा सकता तथा कर्मदण्ड भोगने के लिए वह योनियों में भटकता रहता है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि हे प्राणी ! पापसे बचकर सात द्वीप नौ खण्ड में भागकर कहाँ जाओगे विना कर्मदण्ड दिये तुम बच नहीं सकते ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि इस तीन लोक के मालिक (निरंजन) हैं वे भी इस संसार में आकर अपना बदला दिये । सर्वप्रथम उन्होंने ही अपना कर्मदण्ड देकर उसी के आधार पर अन्य प्राणियों पर अंक (कानून) लिख दिया । यहाँ तक कि राम-कृष्ण भी खून के बदले खून (प्राण) दिये । राम-कृष्ण को भी कर्मदण्ड के लिए संसार में आना पड़ा ।

टिप्पणी-सात द्वीप- जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रोंच, शाक और पुष्पकर ।

नौ खण्ड- भारत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश ।

राम कृष्ण वोयल जग दीन्हा । ताकर वोयल ताहि लिखि लीन्हा ।।
राम कृष्ण ले कवन कहावै । करै खून वोएल सो पावै ।।
जीव के दर्द बुझहु रे भाई । दर्दवन्त वेा दर्द समाई ।।
जो यह दया दर्द दिल आने । दर्दवन्त सो जक्त बखाने ।।
एकै ब्रह्म सबे घट सूझे । ज्ञानी होय शब्द यह बूझे ।।
जब लगि जीव दर्द नाहीं आवै । तब लगि नाम दर्श नहि पावै ।।
समुझहु सन्त यह भेद निर्बाना । निर्केवल निर्लेप पद ज्ञाना ।।
साखी- जीव दया दिल में धरो, भक्ति करो ब्रत नेम ।
कहें दरिया दुर्मति तेजो, चरन कमल पद प्रेम ।। १९ ।।
बिना प्रेम नहिं भक्ति विवेखा । होये प्रेम यह गुरुगमि पेखा ।।

शब्दार्थ – कवन=कौन । पावै=प्राप्त करना । निर्लेप=आसक्ति रहित । नेम=नियम । पद=चरण, अधिकार, भजन । बिवेखा=विवेक । पेखा=देखना । बैना=वाणी । चैना=शन्ति । ता=उस, वह ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि प्राणियों ! दूसरे जीव के कष्ट को कष्ट समझिये क्योंकि जीव को कष्ट देने का अर्थ दयावन्त (ब्रह्म) को कष्ट देना होता है । जिसके दिल में यह दया होती है तथा दूसरे के दर्द को पहचानता है उसे संसार में दयालु, दर्दवन्त नामसे प्रशंसा होती है । एक ही ब्रह्म का निवास सभी प्राणियों में दिखाई देता है जो ज्ञानी हो इस बात को समझ सकता है । जब तक हृदय में जीवों के प्रति दया सहानुभूति नहीं आयेगी तब तक उस परमात्मा (नाम) का दर्शन नहीं प्राप्त होगा । सज्जनों ! यह जो भेद बता रहा हूँ वह निर्वाण पद को देने वाला है तथा आसक्ति को दूर करने वाला ज्ञान है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि दुर्मति को छोड़कर अपने दिल में जीव दया को धारण करो तथा धर्मयुक्त नियम से भक्ति करते हुए उस परमात्मा के चरण कमल में प्रेम के साथ नतमस्तक होकर ध्यान लगाओ ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि बिना प्रेम के भक्ति और विवेक नहीं होता । जब हृदयमें प्रेम की भावना जागृत होगी तब गुरु का ज्ञान समझ में आने लगेगा तथा आगे का मार्ग दिखाई देने लगेगा । प्रेम के साथ प्रेम की वाणी मिलने पर सुख और प्रसन्नता होती है । जैसे- जल में कमल का प्रेम होने से खिलता है । ऐसे ही परमात्मा से प्रेम प्रीति का जुड़ाव करना चाहिए ।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।। —गोस्वामी तुलसीदास ।

प्रेमहिं प्रेम मिले निजु बैना । ज्यों जल कमल रहे सुख चैना ।।
ऐसो प्रेम-प्रीति गहि लावै । नाम संजीवनि ता सुख पावै ।।
प्रेम प्रीति गहि गाँठि लगावै । करे भक्ति निजु प्रेम सो पावै ।।
करहु प्रेम पद पंकज ज्ञानी । जीवन थोर तेजहु बहु बानी ।।
जीवन थोर माया मद लोभा । देखि कुसुम रंग ता चित्त चोभा ।।
चित्र विचित्र रचो चित्रसारी । नट नागर पट देत हैं तारी ।।
वेस्वा भाँड़ करहिं तत्काला । भुले गुमान सो मद मतवाला ।।
संत सेवा नहिं गुरु गमि ज्ञाना । अन्तर अन्धपट रहे मुदाना ।।
साखी- चारि पदारथ पाइके, क्यों न भजो सतनाम ।
सांई द्रोह जस सेवका, कहाँ पावे विश्राम ।। २० ।।

शब्दार्थ – पंकज=कमल । चोभा=लग जाना, फँस जाना । कुसुमरंग=गुलाबी मनमोहक सौन्दर्य । रचो=बना । चित्रसारी=चित्रशाला । विचित्र=अद्भुत, अनोखा । तारी=करतलध्वनि, समाधि । नागर=नगरवासी, चतुर । नट=नाट्य करने वाला, खेल तमाशा दिखाने वाला । पट=चित्र खींचने का कागज या कपड़ा का टुकड़ा या रंगमंच पर्दा । भांड़=नाच-गाने आदि का पेशा करने वाले । गुमान=घमंड या अभिमान । मुदाना=बन्द होना । अन्धपट=नेत्र पर पर्दा पड़ना । जस=जिस तरह । साईं=मालिक ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि इस प्रकार प्रेम करने से उस नाम रूपी संजीवनी के समान सुख मिलता है । इस प्रकार से सम्बन्ध रखना चाहिए तथा प्रेम के साथ भक्ति करना चाहिए । हे ज्ञानी जन ! बहुबानी को छोड़कर उस ब्रह्म के चरण कमल का ध्यान करिए क्योंकि यह जीवन बहुत थोड़ा है ।। जो अज्ञानी है वे इस थोड़े से जीवन अहंकार माया में लिप्त हैं । गुलाबी मनमोहक नारी के सौन्दर्य को देखकर उसका चित्त उसी में आसक्त हो गया है । चतुर नट के द्वारा बनाये गये अद्भुत चित्रों को देखते हुए प्रसन्न होते हैं । उस नट के द्वारा चित्रकला में बनाये गये अनोखे सुन्दर उस रंगमंच पर्दे पर अपना ध्यान रखते हैं तथा तत्काल मंच पर भांड़ द्वारा वेश्या (रंडी) नाच शुरु होने पर उसे देखकर मद से गर्व में भूले रहते हैं । उसके आन्तरिक ज्ञान चक्षु पर पर्दा पड़ा रहता है । वह संत की सेवा नहीं करता और न ही गुरु का ज्ञान उसे समझ में आता है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि मनुष्य अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष को प्राप्त करने का अधिकारी है । इन चार पदारथ का अधिकार प्राप्त करके भी सतनाम का भजन क्यों नहीं करते । जिस प्रकार मालिक से द्रोह करके सेवक को विश्राम नहीं मिल पाता उसी तरह परमात्मा से दूर रहकर जीवात्मा को शान्ति नहीं मिल सकती ।

टिप्पणी-चार पदारथ- अर्थ, धर्म, काम, और मोक्ष ।

विषय विकार तेजहु जढ़ प्रानी । सुमिरहु नाम अनुपम बानी ।।
यह माया कहु केहिकी चेरी । सुर नर मुनि सब बाँधहिं बेरी ।।
सुर नर मुनि और तपे सन्यासी । मन माया ग्रिव डारे फाँसी ।।
कंचन कोट्ट लंका बहु भाँति । चित्र विचित्र रचो चहुँ कॉती ।।
चित्र विचित्र सब कनक उरेहा । पल में गर्द भया सब खेहा ।।
सीता मोहनी रही भवानी । रावण हर अपने गृह आनी ।।
मन माया नहिं चिन्हे गँवारा । काल कठिन चाहे सब मारा ।।
मन की बाजी सबे बँधावे । बाजीगर का भेद न पावे ।।
बाजीगर जो लिखि ले आवै । चित्र बाघ के आनि दिखावै ।।

शब्दार्थ – केहिकी=किसकी । कहु=कहो । चेरी=दासी, गुलाम स्त्री । बेरी=जंजीर । ग्रीव=गले में । फाँसी=बन्धन । कंचन=सोना । चहुँ=चारो ओर । कांति=सुन्दरता । उरेहा=चित्रकारी । खेह=धूल, राख । गर्द=ध्वस्त, नष्ट होना । हर=हरि=हरण कर । गृह=घर, महल । भवानी=दुर्गा, पार्वती । गँवारा=नासमझ, अज्ञानी । बाजी=खेल, जादू का तमाशा । बाजीगर=जादू का खेल करने वाला, नट । आनि=ले आकर । लिखि=लिखकर । जो=जो भी ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि हे मूर्ख प्राणी ! विषय विकार को छोड़कर उस परमात्मा के अनुपम 'नाम' का वाणी से सुमिरन स्मरण करो । यह माया कभी भी किसी की गुलाम नहीं हुई तथा सुर, नर मुनि तपस्वी और सन्यासी सभी को मन और माया ने ग्रीव में फाँस लगा दिया ।। नाना प्रकार के विचित्र चित्रकारी से सुन्दर बनी सोने की लंका सोने के महलों से सुसज्जित थी । जिसमें सोने के विविध प्रकार की मूर्तियों की चित्रकारी की गयी थी ।। प्रलयकारी भवानी सीता मोहिनी को रावण अपहरण कर अपने घर ले आया । वह अज्ञानी रावण मन-माया को नहीं पहचान सका तथा उस काल रूप राम को मारना चाहा । मन के भ्रम में सभी बँध जाते हैं । जैसे बाजीगर (नट) का भेद कोई नहीं जान पाता उसी तरह मन सभी को बाँधकर नचाता रहता है । जिस प्रकार कोई भी बाघ (चीता) का नाम लिखकर उसके सामने ले आता है ।जो बाजीगर (नट) तुरन्त मायाबी बाघ बनाकर दिखा देता है ।

टिप्पणी-षड्विकार- उत्तपति, वृद्धि, बाल्यावस्था, यौवन, बार्धक्य और मृत्यु ।

सन्यासी- सम+न्यास । सम-उपसर्ग=सम्यक् प्रकार से । +न्यास=त्याग । =पूर्ण त्याग (गीता) ।

साखी- बाजीगर की खेलि यह, कहे कवन पतिआय ।
कहें दरिया मन सभे नचावे, बूझि परे पछताय ।। २१ ।।
माया रूप बलि छरौ बनाई । माया ले जग चुनि चुनि खाई ।।
माया रूप कंस बध कीन्हा । यह भेद बिरला केहु चीन्हा ।।
आवे जाय जगत उपजावे । मन माया फेरि ज्योति समावे ।।
मन के रंग बिरला कोई जाना । जाके सुरति साँच है ज्ञाना ।।
यह मन चंचल चतुर है चोरा । मन मुरीद है मनहीं कठोरा ।।
मन बुद्धि बल कथे यह ज्ञाना । मन अनन्त रूप धरे जहाना ।।
यह मन काम क्रोध सुख भोगा । मन योगी है मन है रोगा ।।
मन त्रिगुण धरे यह छन्दा । सुर नर मुनि परे मन के फन्दा ।।
यह मन आवे यह मन जाई । यह मन या जग जीव सब खाई ।।

शब्दार्थ – पतिआय=विश्वास । पछताय=पश्चाताप । कहे=कहने पर । माया=नकली, दिखावटी । छरौ=छल स्वरूप । खाई=खा जाना, निगल जाना । बध=हत्या । केहु=कोई । चिन्हा=जान पाया । उपजावे=उत्पन्न करना । ज्योति=प्रकाश, आत्मा । रंग=स्थिति, दशा, समाचार । मुरीद=शिष्य, अनुगमन करने वाला । जहान=जक्त । छन्दा=इच्छा, धोखा । या=यह, इस । फन्दा=बन्धन ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जैसे नट का खेल देखने में सत्य लगता है परन्तु सब मिथ्या होता है । उसी प्रकार यह मन सबको नचाता रहता है । परन्तु समझ में आ जाने पर बहतु पश्चाताप करना पड़ेगा ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि यह माया का रूप बनाकर राजा बली के साथ छल कर नष्ट कर दिया । माया का रूप बनाकर कंस वध किया । इस मन माया का भेद विरला कोई ही जान पाया है । यह मन जक्त को उत्पन्न करने के लिए आता जाता है । फिर यह माया मन उस ज्योति में समाहित हो जाता है । मन की स्थिति विरला कोई ही जान पाया है जिसके पास सत्य सुरति का ज्ञान होता है वही इस मन को जान पाता है । यह मन चंचल तथा चतुर चोर है । यह अनुगमन करने वाला (शिष्य) है और यही कठोर भी है । मन ही बुद्धि बल तथा ज्ञान को देता है । मन इस संसार में अनन्त रूप को धारण करता है । यह मन काम, क्रोध तथा सुखों का भोग करता है । यह मन योगी है तथा मन ही रोगी है । मन अपनी इच्छा से यह त्रिगुण रूप धारण करता है । सुर नर मुनि सभी मन के बन्धन में पड़ गये । यह मन आता और जाता है । यह मन इस संसार के सभी जीवों को नष्ट-भ्रष्ट कर दुःख दिया ।

टिप्पणी-त्रिगुण- रजगुण, सतगुण और तमगुण ।
मन- दस इन्द्रियों का राजा मन है । यह निरंजन का अंश है ।

ब्रह्मा विष्णु हहिं मन के अंशा । मनहिं रावण भये विध्वंसा ।।
साखी- कंचन कोट्ट लंका बनो, जारि किन्ह धूरि धाम ।
थोरे मद जनि मातहु, भजन करो सत्नाम ।। २२ ।।
राजा पृथु पृथ्वी सब लीन्हा । अति बलजोर सबे बस कीन्हा ।।
जर जराव सभे रजधानीं । सब मिलि गये नर्क की खानी ।।
जर जराव सभे अति कीन्हा । बिना भजन कछु संग न लीन्हा ।।
मन की ममिता सभे ढहावे । बिना भजन कछु काम न आवे ।।
संग सेना दुर्योधन ठाना । क्षण महँ प्रलय सभे बिलाना ।।
भक्त पक्ष सदा उन्हि राखा । निर्मल ज्ञान भेद यह भाषा ।।
पांडव प्रण राखा उन्हि जानी । दुर्योधन की ना रही निशानी ।।
राय युधिष्ठिर कृष्ण प्यारा । राखिन्ह प्रण तेहिं भक्ति बिचारा ।।

शब्दार्थ –मातना=उन्मद होना । कोट्ट=किला, दुर्ग । जर=धन, सोना । जराव=जराऊ, पच्चीकारी । खानि=भीतर, अन्दर, खाली जगह । ढहावे=नष्ट करना या गिराना । प्रण=प्रतिज्ञा । धाम=महल, निवास स्थान । निशानी=चिन्ह । राय=राजा ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश मन के ही अंश है । मन ही के कारण रावण का विध्वंश हो गया ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि लंका में सोने से बनी किला थोड़े समय में ही जलकर महल सब मिट्टी मे मिल गयी । अतः हे प्राणियों ! तुम थोड़े से धन-सम्पत्ति में गर्व मत करो । सत्नाम का भजन करो इसी में कल्याण है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि चक्रवर्ती राजा पृथु का सम्पूर्ण पृथ्वी पर अधिकार था, उन्होंने अपने बल से सभी को बश में कर लिया था । उनके पास धन-सम्पत्ति सोने से जड़ाँऊ महल थे परन्तु बिना भजन के कुछ भी उनके साथ नहीं गया धन-दौलत सब यही छूट गया । यह मन की ममता क्षणिक सुख सभी को नष्ट कर देती है । भजन के बिना कुछ भी काम नहीं आया । दुर्योधन के पास अट्ठारह अक्षौहिणी सेना थी पर क्षण ही में सब छिन्न-भिन्न होकर नष्ट हो गयी । भक्तपक्ष की रक्षा सदैव भगवान श्रीकृष्ण ने किया । यह निर्मल ज्ञान का भेद कह रहा हूँ । पाण्डवों के प्राण की रक्षा उन्होंने भक्त जानकर किया । उस दुर्योधन का दुष्कर्म के कारण विनाश हो गया । राजा युधिष्ठिर कृष्ण के प्रिय थे तथा उनके प्रण की रक्षा उनकी भक्ति के कारण किया ।

टिप्पणी-ग्यारह इन्द्रिय- हाथ, पैर, मुख, गुदा, लिंग, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा नेत्र और मन ।

पाँडव- युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव । इन्हें पाण्डु पुत्र होने के कारण पाण्डव कहा जाता है ।

साखी- राखेवो प्रण तेहि जानि के, कियो भक्त प्रतिपाल ।
अपने पक्ष के कारणे, काटहिं यम के जाल ।। २३ ।।
सन्त महिमा कछु कहिं नहिं जाई । जिन्हिं-जिन्हिं भजन नाम लवलाई ।
नाम निरखि जिन्हिं करहिं विवेखा । सत्नाम निश्चय दिल देखा ।।
राय निरंजन निरंकारा । तीन लोक ताको पैसारा ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा । सब मिलि करहिं ज्योति की सेवा ।।
सत्पुरुष सबन्हि ते न्यारा । चौथा लोक जहाँ रंग करारा ।।
साखी-चौथा लोक सर्व ऊपरे, जहाँ पुरुष निर्बान ।
उदित कला प्रकाश है, करो भजन निजु ध्यान ।। २४ ।।
बेबाहा हहिं अजर अकेला । सत् सुकृत उनहिं महँ मेला ।।
बूझहु ज्ञानी करहु बिवेखा । नाम निरखि यह गुरु गमि पेखा ।।

शब्दार्थ - जाल-बन्धन । प्रतिपाल=रक्षा करना । ज्योति=आदिशक्ति, प्रकाश । निराकार=जिसका कोई आकार न हो । निरंजन=अंजन रहित, माया से रहित । उदित=निकला हुआ, प्रकट, प्रकाशित । कला=ज्योति, तेज, शोभा । महिमा=बड़ाई, महत्ता । ताको=उनका । यम=यमराज, काल । काटहिं=काटना, नष्ट करना । सर्व=सबसे । अजर=बुढ़ापा रहित । मेला=भीड़, समागम । राय=राजा ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि भगवान् भक्ति को जानकर अपने भक्त के प्रण की रक्षा करते हैं अपने पक्ष (शरण) मे होने के कारण सभी प्रकार के यम के बन्धन को काट (दूर) देते हैं ।

चौपाई (भावार्थ)- संत की महिमा वाणी से नहीं कही जा सकती जिन सन्तों ने भजन में लवलीन रहकर उस परमात्मा का नाम लेते हैं । जो नाम को विवेक के साथ पारख करते हैं वे सत्नाम का निश्चित रूप से दर्शन प्राप्त करते हैं । यह जो तीन लोक है वह निराकार निरंजन साहब का इसमें अधिकार विस्तार है ।ब्रह्मा विष्णु महेश तीनो देवता मिलकर ज्योति (आदिशक्ति) की सेवा करते हैं । 'सत्पुरुष' इन सबसे अलग चौथा लोक में रहते हैं । जहाँ पर हमेंशा समान अचल, अमर, अविगति प्रकाश रहता है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि चौथा लोक सबसे ऊपर है जहाँ पर 'निर्वाण' पुरुष विद्यमान हैं । जहाँ पर उनकी दिव्य ज्योति निकलता हुआ प्रकाश विद्यमान है । ऐसे उस 'सत्पुरुष' का ध्यान हृदय में करो ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि वह बेवाहा सत्पुरुष अजर, अडोल, माया से रहित अकेले हैं सुकृत व निरंजन उनकी सेवा में रहते हैं । हे ज्ञानीजन! विवेक करके इस बात को समझकर नाम को निरखकर गुरु के बताये हुये उपदेश ज्ञान से उस परमात्मा का दर्शन प्राप्त करो ।

सत्नाम निजु अगम अपारा । निर्मल नाम है निर्गुन सारा ।।
नाम पीउषन अमृत बनी । बूझहु श्वेत सत्य सहिदानी ।।
जेहि दिन महि मंडल नहिं तारा । तेहि दिन ब्रह्मा न वेद विचारा ।।
तेहि दिन कर्म धर्म नहिं जानी । तेहि दिन शिव शक्ति नहिं ज्ञानी ।।
तेहि दिन नीर न बहे बतासा । तेहि दिन इन्द्र न मेघ प्रगासा ।।
तेहि दिन विष्णु न दसो अवतारा । तेहि दिन कर्म न धर्म पसारा ।।
तेहि दिन पुरुष वोये रहे निनारा । निरंजन लिए चँवर शिर ढारा ।।
रहहिं संग हुकुम नहिं टारा । सुनहु सन्त यह करहु बिचारा ।।
सत्पुरुष वोये अगम अपारा । छपलोक जहाँ तख्त सँवारा ।।
साखी- पीछे सब पैदा कियो, मन माया एकसंग ।
कहें दरिया निर्मायो, प्रेम प्रीति बहुरंग ।। २५ ।।

शब्दार्थ - निर्मल=मल रहित, पवित्र । अगम=न चलने वाला, मन बुद्धि के परे । अपार=जिसका पार न हो, असीम । पियूषण=अमृत । सहिदानी=निशान, चिन्ह-परिचय । महिमंडल=पृथ्वी चन्द्र सूर्य ग्रह आदि । नीर=जल । बताश=वायु । मेघ=बादल । हुकुम=आज्ञा । तख्त=सिंहासन । सँवारा=सजा हुआ है । पैदा=उत्पन्न । निर्मायो=निर्माण किया । निर्गुण=त्रिगुण से रहित ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि वह सत्नाम अगम अपार है । उनका जो निर्मल नाम (मन्त्र) है वह उस निर्गुन ब्रह्म तक पहुँचाने वाला है । उनका नाम अमृततुल्य है तथा वाणी अमृत है । वह परमात्मा श्वेत तथा उनकी कांति श्वेत प्रकाशयुक्त है तथा सत् से ओत प्रोत है यह उसका पहचान चिन्ह है ।। जिस समय में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी तारा गण नहीं थे । उस समय ब्रह्मा तथा वेद नहीं था उस दिन कोई कर्म-धर्म नहीं जानता था । उस समय शिव-पार्वती तथा न कोई ज्ञानी था । उस समय जल और वायु भी नहीं था । उस समय इन्द्र और मेघ तथा अग्नि नहीं था उस समय विष्णु का दस अवतार नहीं था । तब किसी कर्म-धर्म का विस्तार नहीं था । तो उस समय वह सत्पुरुष सबसे अलग थे तथा निरंजन साहब उनको चंवर ढारते हुए उनकी सेवा में लगे थे । वे सदा उनके साथ रहते थे तथा आज्ञाओं का पालन करते थे । हे सन्तजन ! उस पर विचार करिये वह 'सत्पुरुष' अगम अपार हैं वे छपलोक मेंसुसज्जित सुन्दर तख्त पर विराजमान हैं ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि ब्रह्म (सतपुरुष) ने बाद में यह सब सृष्टि तथा मन माया को एक साथ प्रकट किया तथा प्रेम प्रीति के साथ बहुत से सुन्दर सृष्टि का निर्माण किया ।

टिप्पणी-वेद-ऋक्, साम, यजुः तथा अथर्ववेद । विष्णु के दस अवतार- मच्छ, कच्छ, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि । कर्म- नित्य एवं अनित्य कर्म । धर्म के पाँच उपादान- वर्णधर्म, आश्रम धर्म, वर्णाश्रम धर्म, नैमित्तिक धर्म, एवं गुण धर्म । मनुस्मृति २/६

कुर्म ज्योति से कन्या भयऊ । ताते त्रिगुण रूप वोये ठयऊ ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर योगी । तीनों कन्या तीनहु रस भोगी ।।
रजगुण सत्त्व गुण तामस कीन्हा । तेज वेद विष रस भीन्हा ।।
त्रिगुण फन्द रचा संसारा । यम जाल का कीन्ह पसारा ।।
योग जाप यह जग में दीन्हा । मन्त्र गायत्री ब्रह्मा कीन्हा ।।
गायत्री कन्या अहे भवानीं । ताको जाप मुक्ति फल ठानी ।।
गायत्री श्रापित अपने भर्मी । ताते आये जगत में जन्मी ।।
अपनी मुक्ति न पावे बेचारी । सो कैसे जन जगत उधारी ।।
नारि ध्यान सब करहिं समाधी । जढ़ नहिं जानहिं अगम अगाधी ।।
अगम पुरुष बोये सभते न्यारा । ताहि सुमिर जीव होय उबारा ।।
ताको खोजहु पंडित ज्ञानी । सत्पुरुष वोए हहिं निर्बानी ।।
ब्रह्म चिन्हहु ब्रह्मा को जाया । चिन्हहु आदि अन्त जिन्ह निर्माया ।।

शब्दार्थ – गायत्री मंत्र=वेद में गायत्री छन्द मे रचे मंत्र, एक अलग गायत्री मंत्र भी है । तमगुण=विष । यमजाल=माया का बन्धन । ताते=उसी से । गायत्री=आदिशक्ति की पुत्री । कूर्म=कछुआ, वह प्राण वायु जिससे पलकें खुलती या बन्द होती हैं, निरंजन । रजगुण=वेदश्रयऊ=धारण किया । अगाध=अपार, दुर्बोध । सतगुण=तेज । बेचारी=असहाय, मजबूर ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि निरंजन और आदिशक्ति से कन्या उत्पन्न हुई । उस कन्या ने त्रिगुण रूप धरण किया । ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा गायत्री, लक्ष्मी, पार्वती क्रमशः रहने लगे । इस प्रकार रजगुण सतगुण तथा तमगुण हुआ ।इस तरह ब्रह्मा से वेद (सृष्टि) विष्णु से तेज (पालन) तथा महेश से संहार (विष) का कार्य प्रारम्भ हुआ । इस तरह से त्रिगुण फन्द रचकर निरंजन साहब ने संसार में यमजाल का विस्तार कर दिया । योग, ध्यान, सुमिरन आदि को संसार में दे दिया तथा ब्रह्मा ने गायत्री मंत्र की रचना किया । आदिशक्ति की कन्या गायत्री देवी थी । उसके जाप से मुक्ति न हीं मिल सकती क्योंकि आदिशक्ति के श्राप से वह इस संसार में जन्म लेकर भटकती रही । उस गायत्री ने तो स्वयं अपनी मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकी तो भला संसार के दूसरे लोगों को वह कैसे उद्धार करेगी । अज्ञानी, जढ़ है वे नारि का ध्यान समाधि करते हैं वे उस अगम अगाध परमात्मा सत्पुरुष को नहीं जानते । वह अगम पुरुष सबसे न्यारा है उसी के सुमिरन ध्यान से जीव का उद्धार होगा । हे ज्ञानी पंडित जन ! जो निर्वाण सत्पुरुष हैं उनका खोज करिए । उस ब्रह्म का पहचान करो जिन्होंने ब्रह्मा को उत्पन्न किया ।तथा जिसने आदि अन्त का निर्माण किया ।

टिप्पणी–गायत्री मंत्र– ॐ भूभुर्वः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

समाधि– दो प्रकार की होती है – (i) १–सम्प्रज्ञात समाधि और २–असम्प्रज्ञात समाधि ।
(ii) १–यत्न साध्य समाधि २–सहज समाधि ।

ताहि चिन्हें बिनु कहवाँ जइहो । कवन ठवर जहाँ जाय समइहो ।।
ब्रह्मा लोक धोखा है भाई । इन्द्रलोक तहाँ काल समाई ।।
साखी– कहें दरिया वोए अजर हैं, छपलोक में बास ।
तहवाँ काल न आवहीं, बहुविधि करहिं बिलास ।। २६ ।।
एक ब्रह्म ते ब्रम्ह भयो चारी । चारि बरन ते जगत पसारी ।।
एक ब्रह्म सभे घट छाया । ब्रह्म देह तुम कैसे पाया ।।
एके पिंड एके हैं प्राना । एके मुख रसना है काना ।।
एके हाथ पाँव हैं पेटा । दुई कर्ता तुम कैसे भेंटा ।।
एके जोइनि सभे जन्माया । तुम ना कहो कवन दे आया ।।
को हिन्दू को तुरुक कहाई । एके ब्रह्म मोसल्लम भाई ।।

शब्दार्थ – ताहि=उसका । जाया=उत्पन्न किया हुआ । इन्द्रलोक=स्वर्ग लोक । चारि=चार । छाया=प्रतिरुप । पिण्ड=शरीर । रसना=जिह्वा । दुई=दो । भेंटा=पकड़ा, मिल गया । जोइनि=योनि, गर्भ । दे=देवी, (स्त्री) । मुसल्लम=पुरा, अखण्डित । काल=यमराज । धोखा=अविश्वास । ब्रह्मलोक=ब्रह्म का लोक । माटी=मिट्टी ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि निर्गुण ब्रह्म के दर्शन के बिना कौन सा जगह है जहाँ पर जीव जाकर सदैव के लिए सुख शान्ति से रह सकता है । यह जो वैकुण्ठ (ब्रह्मलोक) है वहाँ भी अविश्वास है और इन्द्रलोक में तो यमराज का प्रवेश है क्योंकि स्वयं इन्द्र भी यमराज के अधीन हैं ।

साखी (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि उस 'परमब्रह्म' की अजर काया है वे छपलोक में रहते हैं । वहाँ यमराज नहीं जाता तथा वहाँ पर जीव (हंस) हर तरह से आनन्दित रहता है ।

चौपाई (भावार्थ)– सतगुरु दरिया साहब कहते हैं कि एक ब्रह्म से यहाँ पर चार ब्रह्म हो गये तथा चार वर्ण (जाति) में जक्त का विस्तार हो गया । परन्तु सभी घट शरीर में एक ही ब्रह्म की छाया (प्रतिरूप) हैं तो ब्राह्मण का शरीर किस तरह पा गये ।। सभी मनुष्य की तरह ही तुम्हारा एक पिंड (शरीर) तथा प्राण है । एक ही प्रकार का मुख जिह्वा तथा कान है । एक ही तरह का हाथ पैर तथा पेट है किस तरह से दो ईश्वर हो गये । एक ही योनि से सभी का जन्म हुआ तो तुम्हीं बताओ कि तुम किस देवी माँ के गर्भ से यहां आये । इस तरह एक ही प्रकार से जन्म हुआ तो कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान है, सभी में तो एक ही ब्रह्म है ।

विषेष– चार वर्ण– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।

ब्राह्मण– एक जाति, 'ब्रह्म ज्ञानन्ते इति ब्राह्मण : ।'

माटी एक बर्तन बहुतेरा। अलख ब्रह्म तेहि भीतर डेरा ।।
हिन्दू तुरुक दुई भरमाई। दुइ कर्ता कइसे ठहराई ।।
एके कर्ता सृष्टि पसारा। एके ज्योति करे उजियारा ।।
पाँच तत्व ऐके परगासा । छव दर्शन तहाँ लेहिं निवासा ।।
ब्राह्मण वेद भने परपंची । झूठी बात कहे सभ कंची ।।
होम यज्ञ सभ आहुति करावहिं । बकरा खंसी जीव मरावहिं ।।
अपने खाहिं फिर और खियावहिं । शास्त्र पोथी गीता सुनावहिं ।।
हांड़ी हाड़ षट्कर्म अचारा । विषया से कबहीं नहिं न्यारा ।।
संध्या गायत्री ध्यान लगावहिं । सूरति ले तृष्णा पर धावहिं ।।
चंचल चोर चतुर पाखंडा । काल लिये सिर ऊपर डंडा ।।
कहे दरिया सत् शब्द न चिन्हे । काम क्रोध ममता रस भीने ।।
काम क्रोध निसदिन चित राखै । नवग्रह लाय ठगौरी भाषे ।।

शब्दार्थ – कंची=कच्ची, अस्थिर । प्रपंची=षड्यन्त्र, धोखाबाजी । पोथी=ग्रन्थ, पुस्तक । और=दूसरे को । गीता=श्रीमद्भागवद्गीता । हाड़=कुलीनता । हाड़ी=किसी षड़यन्त्र का रचा जाना, गप्प लड़ाना । तृष्णा=इच्छा, लोभ । ममता=स्नेह, मोह । पाखण्ड=दिखावटी उपासना या भक्ति । ठगौरी=धोखेबाजी से सम्पत्ति को लेना । भने=कहा ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं जिस तरह से एक ही मिट्टी से कुम्हार अनेक प्रकार का बर्तन बनाता है उसी प्रकार इस पंचतत्त्व शरीर में उसी अलख ब्रह्म के अंश का निवास है ।। हिन्दू और तुर्क दोनों भूले हुए हैं वे दो ईश्वर को बताते हैं ।यह सृष्टि तो एक ही ब्रह्म का बनाया हुआ है तथा एक ही ज्योति से सम्पूर्ण सृष्टि प्रकाशमान है ।। इस पांच तत्त्व के शरीर में उसी एक ही ब्रह्म का प्रकाश है, इसका छः दर्शन साक्षी हैं । परन्तु प्रपंची शाक्त ब्राह्मण वेद पढ़ते हैं तथा सब अस्थिर एवं झूठी बातों को कहते हैं । होम, यज्ञ, आहुति करते हैं तथा खसी, बकरा जीवों का वध करवाते हैं । पहले अपने खाते हैं फिर दूसरे को भी खिलाते हैं ।शास्त्र ग्रन्थ तथा गीता को सुनाते हैं । कुलीनता के नाम पर षट्कर्म का आचरण करते हैं तथा षड्यन्त्र भी रचते हैं । वे विषयासक्ति से कभी अलग नहीं होते । संध्या करते हैं तथा गायत्री का ध्यान लगाते हैं । परन्तु उनकी सूरत तृष्णा पर दौड़ती रहती है । वे भीतर से चंचल, चोर चतुराई से पाखण्ड कर्म करता है और उसके ऊपर दण्ड स्वरूप यमराज डंडा(कष्ट) देता रहता है ।। वह 'सत्य' शब्द को नहीं पहचानता और सदैव काम, क्रोध, मोह के आसक्ति में डूबा रहता है । काम, क्रोध दिन रात हृदय में विद्यमान रहता है तथा नव ग्रह का भय दिखाकर लोगों को ठगता है ।

टिप्पणी–षड्कर्म-ब्राह्मणों के छः कर्म=अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह ।
नव ग्रह–सूर्य, चन्द्र, भौम, बुद्ध, गुरु शुक्र, शनि, राहु, केतु ।
पंचमहायज्ञ–देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्ययज्ञ और भूतयज्ञ । (श्रीमद्भावद्गीता)
षट्कर्म–स्नान, सन्ध्या, पूजा, तर्पण, जप, होम ।

कर्म अनेक करावहिं जानी । ब्रह्म ना चीन्हें सो अज्ञानी ।।
साखी– ब्राह्मण सो जो ब्रह्म चिन्हे, करे भक्ति लवलीन ।
कहें दरिया सोई बाचिहे, पंडित परम अधीन ।। २७ ।।
सर्व मांस खात अज्ञानी। करहीं डिम्भ आचार बखानी ।।
घात में नवहीं सो बग ध्यानी । रहे विषय रस लीन सो प्रानी ।।
खाहिं विषय रस कहहिं बखानी। अंतहु बूड़ि मरे बिनु पानी ।।
दया नहिं दिल करहीं विबेखा । ज्ञान निषेध नाहिं चित पेखा ।।
नौ गुन काँध तिलक अनुमाना। पढ़ि पोथी सब करहिं गुमाना ।।
यहि बिधि चलहिं बोलहिं बहुबानी । संत द्रोह निसदिन दिल आनी ।।

शब्दार्थ – डिम्भ=बच्चा, मूर्ख । पंडित=विद्वान् , एक ब्राह्मण जाति । सर्वमान्स=मछली, सभी मांस । डिंग=आत्म प्रशंसा । घात=अवसर । नवहीं=झुकता है, जाता है । बक=बगुला, ढोंगी । निषेध=रोक, हटाना । लीन=आसक्त । बखानी=प्रशंसा ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि वह ब्राह्मण ग्रह का दोष दिखाकर उसके निवारण के लिए दूसरों से अनेक प्रकार का कर्म कराता है । वह अज्ञानी ब्राह्मण ब्रह्म को नहीं जान पाता ।

साखी (भावार्थ)– सतगुरु दरिया साहब कहते हैं कि ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म को जाने तथा सतगुरु के शरण में लवलीन होकर भक्ति करे । यमराज के हाथ से वही बच सकता है जो पंडित परमात्मा के शरण में परमअधीन होकर रहेगा ।

चौपाई (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि अज्ञानी व्यक्ति सर्वमांस का आहार करते हैं वे मूर्खता का आचरण करते हुए बखान करते हैं । जैसे बगुला पक्षी पानी में मछली पर ध्यान लगाकर अवसर में रहता है । उसी तरह अज्ञानी अवसर में झुके रहते हैं तथा हर समय विषय में लीन रहते हैं ।। ऐसे प्राणी मीन मांस का भक्षण करते हुए उसका व्याख्यान (प्रशंसा) करते हैं तथा अन्त में विना पानी के डुब कर मर जाते हैं अर्थात् दुःखदायी मृत्यु होती है ऐसे अज्ञानी प्राणी के अन्दर दिल में दया नहीं होती न ही वे विवेक ही कर पाते हैं । उनके अन्दर पाप से भी बचने के ज्ञान का भी अभाव दिखाई देता है ।। कुछ आडम्बरी नवगुणी जनेऊ कंधे पर लटकाकर तथा तिलक लगाये हुए पौराणिक ग्रंथ को पढ़कर गर्व करते हैं । इस प्रकार बहुबाणी बोलते हुए चलते हैं तथा हमेशा दिल में संत द्रोह की भावना लिये रहते हैं ।

टिप्पणी–नवगुन– जनेऊ सभी वर्गों को पहनना अनिवार्य है जिसमें नवगुणी सूत का जनेऊ ब्राह्मण के लिए है । –मनुस्मृति ।

साखी- संत द्रोह नहिं करिये पंडित, देखहु शब्द अमोल ।
कहे दरिया दुरमति तेजो, साहब अजर अडोल ।। २८ ।।
अजर लोक ले साहब आये । अगम लीला केहु भेद न पाये ।।
आपुहिं उदित धरा है काला । आपुहिं पुरुष और सब चेला ।।
आपुहिं प्रकट जग में चलि आये । सकलो दोबिधा दूरि बोहाये ।।
जिन्दा रूप वोए पुरुष पुराना । अजर लीला वोए अर्धं निशाना ।।
सत्य बचन निश्चय निर्बाना । श्रीमुख बचन लिखा निजु ज्ञाना ।।
सत् कहा बूझे कोई ज्ञानी । साहब कहा सत्य सहिदानी ।।
अगम लीला वोए भेद निनारा । साहब आये इहाँ पगु ढारा ।।
शहर धरकंधा थय परवाना । तहवाँ साहब आये तुलाना ।।

शब्दार्थ – अमोल=अनमोल । लीला=रहस्यपूर्ण कार्य । धरा=पृथ्वी, धारण किया है । बोहाये=बाहर करना, नष्ट करना । अर्द्ध=आधा, नीचा । श्रीमुख=शोभायुक्त मुख । तुलाना=पहुँचना । सहिदानी=निशान, पहचान, चिन्ह । उदित=निकला हुआ, प्रकाशित परवाना=लिखित आज्ञा, प्रमाण, दृढ़ धारणा ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि पंडित जन ! सन्त से द्रोह न करो तथा उनके अनमोल वाणी को देखो । अपने हृदय से दुर्मति को छोड़ दो । वे 'सत्पुरुष' साहब अडोल अविनाशी हैं ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि अजर लोक से साहब सत् पुरुष यहां आये परन्तु अगम लीला का भेद कोई नहीं जान पाया । आपकी ज्योति से यह प्रकाशित है, आप ही इस संसार के जीवों के मालिक हैं । आप प्रकट रूप से इस जक्त में आये तथा हमारी सभी दुविधा, भ्रम को दूर किया । आपका जिन्दा रूप जो जन्म मृत्यु से परे है तथा आप सभी के परमपिता हैं और आपकी लीला अजर है । तीन लोक बाद में नीचे की ओर हैं ।। दरिया साहब कहते हैं कि उस निर्वाण पुरुष मैं निश्चित रूप से मैं देखा तथा उनके शोभायुक्त मुख से कहे गये वचन को मैं लिखा । इस सत्य बात को कोई ज्ञानी ही समझ सकता है जो कि साहब ने हमें सत्य का पहचान बताया ।। 'सत्पुरुष' का भेद सबसे न्यारा है तथा उनकी लीला भी अगम्य है ऐसे उस साहब ने आकर चरण कमल का दर्शन दिये ।। सत्पुरुष ने मुझे धरकंधा (ढरकना) शहर स्थान पर रहने का आज्ञा (प्रमाण) दिये थे तो वहाँ पहुँचकर हमें दर्शन दिये ।

टिप्पणी-धरकंधा- एक शहर जो आज बिहार प्रान्त के रोहतास जिले के अन्तर्गत ढरकना नामक ग्राम से प्रसिद्ध है । जहाँ पर दरिया साहब का जन्म हुआ है ।

साखी-शहर धरकंधा थय कीन्हों, भाव भजन निर्बान ।
सत्पुरुष चलि आयेवो, लीला अगम निशान ।। २९ ।।
दयावन्त दया बहु कीन्हा । दया करि तब दर्शन दीन्हा ।।
देखि दरश जीव बहुत अनन्दा। वृगसित कमल मेटा दुःख द्वन्दा ।।
माथा नाय अरज जो कीन्हा । शीतल अंग प्रेमरस भीन्हा ।।
साहब अगम जो दीन्ह दिखाई । अगम रूप दर्शन हम पाई ।।
अजर ज्योति श्वेत सब छाया । परिमल बास सोंधा सब धाया ।।
देखि अर्धं जहाँ श्वेत निशाना । चहुँ ओर चमकि घटा घहराना ।।
निश्चय जिन्दा अगम चलि आये । अगम लीला कोई भेद न पाये ।।

शब्दार्थ – मेटा=मिट गया, समाप्त । नाय=झुकाकर । अरज=निवेदन, प्रार्थना । सोंधा=सुगंधित, सुबासित । चमक=कान्ति, झलक । घटा=जल भरे काले बादलों का समूह । घहराना=गरजना, गड़गड़ाना । धरयो=धारण किया, स्पर्श किया । द्वन्दा=द्वन्द । कीन्ह=किया, करना । पाई=पाया । दाया=दया । पाई=प्राप्त किया ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं मैं कि सत्पुरुष की आज्ञा से धरकंधा शहर में रहने का निवास (गद्दी) बनाया तथा वहीं उस 'निर्वाण' पुरुष के भाव-भजन में लग गया । वहीं पर सत्पुरुष आकर मुझे दर्शन दिये । यह उनकी अगम लीला थी ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि उस दयावन्त ने हमारे ऊपर बहुत दया की । दया करके उन्होंने हमें दर्शन दिया । उनको देखकर हमारी आत्मा (जीव) बहुत ही आनन्दित हो गयी । मेरे रोम-रोम खिल उठे तथा सभी प्रकार के संशय दुःख समाप्त हो गया । मैंने माथा झुकाकर प्रणाम किया तथा इससे मेरा शरीर प्रेम से शीतल व सुखी हो गया । सत्पुरुष ने अपने दिव्य स्वरूप का दर्शन दिया । जिससे इस रूप का हमें दर्शन मिला उनके अजर ज्योति का उज्ज्वल छटा चारो ओर फैल रही थी तथा चन्दन की तरह सुगन्धित बास चारो ओर जाने लगी । जहाँ भी देखा नीचे-ऊपर इधर-उधर सभी ओर श्वेत प्रकाश दिखाई दिया । उनकी कांति उसी तरह बिखर रही थी मानों जल भरे काले बादलों के गर्जन पर बिजली चमकने पर प्रकाश हो रहा हो । इस प्रकार निश्चय ही जिन्दा अगम 'सत्पुरुष' आकर हमें दर्शन दिये परन्तु इस अगम लीला का भेद कोई नहीं जान सका ।

टिप्पणी-चौदह विद्या- ब्रह्म ज्ञान, रसज्ञान, कर्मकाण्ड, संगीत, व्याकरण, ज्योतिष, धनुर्विद्या, जलरत्न, न्याय, कोक, अश्वारोहण, नाट्य, कृषि, वैद्यक ।

साखी- चरण धरेयो बहु भाँति से, निर्केवल निर्भय ज्ञान ।
प्रेम प्रीति के कारणे, आयो पुरुष अमान ।। ३० ।।
दयानिधि अस बोले बिचारी । तुम कारण इहवाँ पगु ढारी ।।
तुम कारण हम जग में आये । प्रगट रूप हम तुमहिं दिखाये ।।
अजर लोक तख्त छोड़ि आये । द्विप-द्विप जहाँ पुहुप बिछाये ।।
तुम सुकृत हुहु अंश हमारा । तुम कारण इहवाँ पगु ढारा ।।
दयानिधि अस बोलहिं बानीं । सुनी बचन गद्‌गद् दिल आनी ।।
जागि सुरति ज्यों चन्द चकोरा । लागि दृष्टि प्रेमरस मोरा ।।
हौं सेवक निजु दास तुम्हारा । राखों हुकुम दिल धरों करारा ।।
साखी- राखो बचन कर जोरि के, सुनो श्रवण चितलाय ।
दयानिधि तुम दर्शन में, दुर्मति सब दूरि जाय ।। ३१ ।।
दयानिधि अस कहा बुझाई । करहु भक्ति निजु प्रेम लगाई ।।
असल अकूफ सूनो निर्बाना । दिल की कंठी असल ईमाना ।।

शब्दार्थ – श्रवण=कान, ध्यान । अस=यह, ऐसा । अकूफ=ज्ञान । इमान=ईमानदारी, धर्म पर विश्वास । दयानिधि=दया के सागर । हुकुम=आज्ञा । इहवाँ=यहाँ । अंश=भाग । ढारा=गिराया, रखा । हहु=हो । अमान=परिमाण रहित । गद्‌गद्=हर्षित । जागी=उत्पन्न । मोरा=मेरा । कर=हाथ, पाणि ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि मैं निर्भय होकर नि:संकोच भाव से बहुत ही प्रेमपूर्वक अनेक प्रकार से उनके चरण को स्पर्श किया । बहुत ही प्रेम प्रीति के कारण वे अमान सत्पुरुष आकर दर्शन दिये ।

चौपाई (भावार्थ)- तब दयानिधि विचार करके इस प्रकार बोले कि मैं तुम्हारे कारण यहां चरण दिया है तुम्हारे कारण हम इस संसार में आये तथा प्रकट रूप से हम तुम्हें दर्शन दिये । उस अजर लोक का सिंहासन छोड़कर आया जहाँ पर सभी द्वीप में पुष्प बिछा हुआ है । सत्‌पुरुष ने कहा हे सुकृत ! तुम हमारे अंश हो । तुम्हारे कारण यहां आकर चरण दिया । इस प्रकार वाणी को सुनकर मेरा दिल गद्‌गद् हो गया । जिस प्रकार चन्द्रमा पर चकोर पक्षी का ध्यान रहता है उसी प्रकार से मेरी दृष्टि प्रेम एवं श्रद्धा से उनके चरणों में लग गयी । मैंने कहा हे दयानिधि ! मैं तुम्हारा मुख्य दास और सेवक हूँ । मैं तुम्हारे हुक्म को दृढ़ होकर दिल में निश्चयता के साथ धारण करूँगा ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि मैं तुम्हारे आज्ञाओं का पाणि जोड़कर विनती से पालन करूँगा इस शब्द को शपथ के साथ कहता हूँ इसे स्वीकार कर लीजिए । हे दयनिधि ! तुम्हारे दर्शन से सभी प्रकार की दुर्मति दूर हो गयी ।

चौपाई (भावार्थ)- इस प्रकार दयानिधि सत्‌पुरुष ने समझा कर कहा कि प्रेम लगाकर मुख्य रूप से भक्ति करो । निर्वाण प्राप्त करने के लिए असली वास्तविक ज्ञान सुनो । दिल की कंठी असल इमान (ब्रह्म पर विश्वास) है ।

टिप्पणी-कंठी- तुलसी के छोटे दानों की छोटी माला जो वैष्णत्व का प्रधान चिह्न है ।

असल अकूफ करहु तुम दासा । देखत यम के उपजे त्रासा ।।
मूल अकह है ऐनक सारा । चहुँ ओर दीसे रंग करारा ।।
अरज करहिं चरन सिरनाई । अजर लोक सब कहि समुझाई ।।
छापा सनद गहो चितलाई । तन छूटे छपलोक समाई ।।
सहज योग निजु शब्द है सारा । छापा सनद मोहर टकसारा ।।
जाके छापा मूल निशाना । सो जीव जाये छपलोक समाना ।।
करहिं सलाम अरज लवलाई । छपलोक के कथा सुनाई ।।
छपलोक के कवन सुभाऊ । कवन विलास शहर के ठाऊँ ।।

शब्दार्थ – त्रासा=डर, भय । ऐनक=चश्मा । दीसे=दिखलाई देना । छापा=साँचा, छपा हुआ चिन्ह । टकसार=छपाई का स्थान, निर्दोष वस्तु । मुहर=छाप । सलाम=प्रणाम । कवन=कौन सा, कैसा । सुभाऊ=स्वभाव । ठाऊँ=जगह, स्थान । तन=शरीर । छूटे=छूटने पर । कहि=बताइए । समुझाई=समझाकर ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि तुम मेरे दास हो इसलिए असली वास्तविक ज्ञान को धारण करो जिससे कि देखते ही यमराज के मन में भय उत्पन्न हो जाय । जो मूल अकह है वही सभी प्रकार का चश्मा (दृष्टि) है । जिससे कि चारो ओर सभी सुदृढ़ सत्य दिखाई देने लगता है । दरिया साहब कहते हैं कि तब मैं सत्पुरुष के चरण में झुककर प्रार्थना किया कि अजर लोक के बारे में सब समझाकर बताइए । तब सत्पुरुष ने कहा कि चित्त लगाकर छापा सनद को गहो अर्थात् ध्यान करो । इससे शरीर छूटने पर जीव छपलोक में चला जायेगा । सहज योग के द्वारा शब्द 'गुरुमंत्र' का ध्यान करो । अमरलोक में जाने के लिए छापा, सनद, मोहर, टकसार होना चाहिए । जिसके पास मूल छापा का निशान होगा । वह जीव छपलोक जाकर सुख प्राप्त करेगा तथा जीवन मरण के बन्धन से छूट जायेगा ।। दरिया साहब ने दयानिधि के चरणों में प्रणाम करके प्रेम के साथ प्रार्थना किया कि उस छपलोक की कथा सुनाइए । उस छपलोक का कौन सा स्वभाव है वहाँ पर किस तरह का सुख, विलास है ।

टिप्पणी-इमान- १-इमाने मोफश्शल-अमन्तेविल्लाहे व मलाये कतही व कोतो वेही वो रोशोलेही वल्यमिल्आखरे वल्कदरे खैरही व सर्यही मिनल्लाहे वाला बलबासे बादल मौत ।

२- इमानमुज्मिल- अमन्तो विल्लाहे कमाहो व वे अस्मायही व सेफातही वक विल्तोजमीय अहकामेही इकरारुम विल्लसाने व तस्दीकुम विल्कल ।

योगी साधको का सिद्धान्त- प्राणायाम चार प्रकार का होता है । जिसे आत्म सोंधन धारा एवं प्राणायाम कहते हैं ।

१- रेचक २-पूरक ३-कुम्भक ४-सहाज प्रणायाम अर्थात् सहज धारा ।

शहर अमर जहाँ सभे बिलासा। पुहुप बेवान है अगर सुबासा ।।
अमृत झरी चहुँ ओर से आवे। चाखे प्राण बहुत सुख पावे ।।
दया दीप जहाँ पलंग सुबासा। बैठे जीव सब करहिं बिलासा ।।
साखी- सोंधा अगर परिमल की झरि है, सुनहु संत सुजान ।
युग युग अमर होय रहा, प्रेम प्रीति निर्बान ।। ३२ ।।
दयानिधि अस बोले बिचारी। अरज किन्ह तब सुरति सम्भारी ।।
काया अजर देखा निर्बाना। निर्गुन कवन रंग सहिदाना ।।
कवन स्वरूप अमर पुर गाऊँ। कवन रंग रहे तेहि ठाऊँ ।।
कर्ता अजर अमर तुम मूला। प्राण पिंड रहे समतूला ।।
अडोल न डोलहिं युग युग रहहीं। जिन्दा रूप भेद यह कहहिं ।।
तब साहब अस बोलहिं बैना। सुनत श्रवण शीतल भौ नयना ।।

शब्दार्थ - बेवान=मान रहित । इंमान=ईश्वर पर विश्वास । झरी=हल्कीवर्षा, फुहारा । सुबासा=सुगन्धित । परिमल=चन्दन । सोंधा=सुगंधित, सुबासित । सहिदाना=पहचान चिन्ह । तुँह=तुम । समतूला=एक बराबर । दयानिधि=दया के सागर । पिंड=शरीर । कहहीं=कहिए । अगर=एक पेड़ की लकड़ी जिसमें सुगन्ध होती है और धूप दशांग में पड़ती है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि तब उस दयानिधि ने मुझसे कहा कि उस छपलोक में सभी आनन्द हैं वहां पर सभी जीव अमर हैं, वहाँ किसी की मृत्यु नहीं होती । वहां पुष्प तथा सुगन्धित अगर का बास चारो ओर फैला हुआ है । अमृत की झरी (फुहार) चारो ओर से आती रहती है जीव उसे प्राप्त करके बहुत आनन्दित होता है । दया द्वीप में जहां पर सुन्दर सुबासित पलंग पर जीव बैठकर बिलास करता है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि हे ज्ञानी सन्तों ! दयानिधि ने मुझसे बताया कि छपलोक में चन्दन, अगर वृक्ष की सुगन्ध के समान वहाँ का बास है प्रेम प्रीति से उस निर्वाण पद को प्राप्त करने पर जीव युग-युग के लिए अमर हो जाता है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि सत्पुरुष के इस प्रकार कहने के बाद मैं ध्यान को सम्भालकर निवेदन करके पूछा कि जो मैं निर्वाण अजर काया को देखा ये किस निर्गुण दशा का पहचान है । उस अमरपुर का स्वरूप क्या है, उस जगह की स्थिति क्या है । तुम सभी के मूल तथा अजर, अमर कर्त्ता हो तथा प्राण एवं शरीर एक समान है । आप अडोल हैं कभी भी किसी युग में आपका परिवर्तन नहीं होता । आप जिन्दा हैं कभी मरने वाले नहीं हैं, इन सब भेद को हमें बताइए । इस बात को सुनकर सत्पुरुष इस प्रकार की बात को बताने लगे जिसे सुनने के लिए मेरे श्रवण और नेत्र शांति से उसे ग्रहण धारण करने लगे ।

टिप्पणी-अकह-मूल । छापा-सत्नाम ।

तब साहब अस बोले बानी । सत्नाम छापा सहिदानी ।।
मूल अकह सत् है छापा । देखत काल तुरंतहिं कांपा ।।

एक निर्गुण बोलता है भाई । ज्ञानी जन बुझो अर्थाई ।।
दूसर निर्गुण पवन कहावे । बहे अगम कोई अन्त न पावे ।।
तीसर निर्गुण है निरंकारा । जावेक भजे सकल संसारा ।।
चौथा निर्गुण अचल है भाई । जहवाँ अजरा ज्योति बराई ।।
सेत सिंहासन सेत सब ठाऊँ । सेते द्वीप अमरपुर गाऊँ ।।
साखी- सुनहु सुकृत बचन यह, युग-युग अमर बिलास ।
सेत-सेत सब होय रहा, उदित कला प्रकाश ।। ३३ ।।
धन्य साहब बोले सत्बानी । निर्गुण सगुण की सहीदानी ।।
उदित कला अजर के रेखा । सुरति साँच नजर भरि देखा ।।
तुम साहब हम दास तुम्हारा । दरसन देखि भयो ब्रह्म उजियारा ।।
दुरमति दिल के दुरि सब गयऊ । चरन कवल जबहिं चित ठयऊ ।।
सरग नरक के आस ना धरेऊ । युग-युग दास साहब चित गहेऊ ।।

शब्दार्थ - सेत=श्वेत । उदित=प्रकट, निकला हुआ, प्रकाशित । कला=तेज, छटा, जयोति । अजरा=कभी न बुझने वाला प्रकाश । भरि=काफी । धरेऊ=धारण करना । गहेऊ=स्मरण या याद करना । बैना=वाणी । अर्थाई=भेद । रंग=दशा, स्थिति, आनन्द । सनद=मूल प्रमाण पत्र ।

चौपाई (भावार्थ)- सत्पुरुष दरिया साहब को समझाते हुए कहते हैं कि एक निर्गुण (बोलता) जीवात्मा मन है । ज्ञानी जन इस अर्थ भेद को जान पाते हैं । दूसरा निर्गुन पवन है जो अनवरत बहता है । जिसका कोई आदि-अन्त का थाह नहीं पाता । तीसरा निर्गुन (ऊँ) निरंजन है जिसका सम्पूर्ण संसार भजन ध्यान करता है । चौथा निर्गुन अचल वह छपलोक है जहाँ पर कभी न समाप्त होने वाला ज्योति का प्रकाश है । वहाँ पर सब कुछ, सब स्थान तथा सभी सिंहासन निर्मल श्वेत है । वहाँ पर सभी द्वीप भी श्वेत है इस प्रकार का वह अमरपुर ग्राम है ।

साखी (भावार्थ)- 'सत्पुरुष साहब' सुकृत (दरिया) से कहते हैं कि वहाँ पर जीव युग-युग अर्थात् सदैव के लिए अमर हो जाता है तथा विलास करता है । वहाँ उत्पन्न होने वाली ज्योति प्रकाश से सब श्वेत प्रकाशित है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब 'सत्पुरुष' को धन्यवाद देते हुए कहते हैं कि सत्यता को बताकर निर्गुण-सगुण की पहचान कराया । मैं उस उत्पन्न अजर ज्योति के चिन्ह को अपनी साँच सुरति में भरिपूर नजर से देखा । तुम मेरे मालिक हो और मैं तुम्हारा दास हूँ । तुम्हारे दर्शन से हमारी जीवात्मा में दिव्य प्रकाश उत्पन्न हो गया । जब मैं तुम्हारे चरण को हृदय से स्पर्श किया तब से हमारे दिल की सब दुर्मति दूर हो गयी । अब मैं स्वर्ग तथा नरक की इच्छा नहीं रखता । अब मैं सिर्फ युग-युग तक आपका दास रहूँ यही चित्त में धारण करता हूँ ।

टिप्पणी-सनद-'सत्' का दर्शन ही प्रमाण है । मोहर=सुकृत द्वारा प्रमाणित (अटैस्टैड) । सनद=मूल प्रमाण पत्र-इसके द्वारा योग्यता प्रमाणित होती है । यह पूर्णता का प्रतीक है । इसी के आधार पर आगे कोई अधिकार प्राप्त होता है । अतः 'परमात्मा का दर्शन' ही अमरलोक में जाने का प्रमाण है, बिना सत्पुरुष का दर्शन 'प्राप्त' किये अमरलोक में नहीं जाया जा सकता । अतः 'सनद'=सत् का दर्शन' ।

मोहर- मोहर का अर्थ किसी प्रुफ (प्रतिलिपि) को प्रमाणित जांच करना होता है तथा वह मान्यता प्राप्त अधिकारी द्वारा होता है । सत्य, असत्य का जाँच कर प्रमाण देता है । सुकृत द्वारा वह प्रमाणपत्र प्रमाणित (अटैस्टेड) किया जाता है । अतः 'मोहर-सुकृत द्वारा प्रमाणित' ।

सत्पुरुष ने सुकृत को अधिकार दिया है -

तुम कह दीन्हों छापा मोहर, सत्नाम टकसार ।

तब साहेब अस बोले बानी । तुम सुकृत हहु निरमल ज्ञानी ।।
तुम्हरे नगीच यम नहीं जाई । ले उड़ो छप लोक समाई ।।
तुम्ह कहँ का डर यह संसारा । असल वचन यह अजर हमारा ।।
दरिया सुनहु बचन हमारा । तोहरे छापा चलिहें संसारा ।।
साखी- तुम कहँ दीन्हों छापा मोहर, सत्नाम टकसार ।
तोहरी बांहीं जो जिव आवहिं, लेहि उतारो पार ।। ३४ ।।
तोहरी बाँही जो जिव आवहीं । 'सत्' शब्द परवाना पावहीं ।।
करे तत्व प्रेम लवलाई । तन छूटे छपलोक समाई ।।
धन्य भाग यह जीवन हमारा । साहब बोले बचन करारा ।।
दिल मे अरज कीन्ह एक बानी । अन्तर्यामी अंतर गति जानी ।।
अरज कीन्ह चरन सिर नाई । साहब सुना दृष्टि लगाई ।।
कवनी युक्ति जगत जीव तरई । कवने नाम काल यह डरई ।।
तब साहब बोले अस बानी । सत्नाम छापा साहिदानी ।।
सत् सुकृत से प्रेम बढ़ावै । करे सुरति निजु प्रेम से पावै ।।
गृही माहँ युक्ति से रहना । निस दिन नाम प्रेम से गहना ।।

शब्दार्थ – कवनी=किस । बांही=शरण में । तरई=उद्धार होगा । गृही=घर । नगीच=पास । कह=को । मांह=में । परवाना=हुक्मनामा, प्रमाण । गहना=स्मरण करना, धारण करना । लवलाई=तन्मयता के साथ, प्रेममग्न ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब के शब्द को सुनकर सत्पुरुष ने कहा कि सुकृत तुम निर्मल ज्ञानी हो । तुम्हारे नजदीक यमराज नहीं जायेगा तथा तुम विना रोक टोक के छपलोक में चले जाओगे । तुम्हारा छापा (पंथ) संसार में चलेगा ।

साखी (भावार्थ)- सत्पुरुष ने दरिया साहब से कहा कि मैं तुम्हें सत्नाम का मोहर तथा टकसार दे रहा हूँ । तुम्हारी शरण में जो जीव आते हैं उनको इस भवसागर से पार करो ।

चौपाई (भावार्थ)- सत्पुरुष दरिया से कहते हैं कि तुम्हारी शरण में जो जीव आ जाते हैं । तथा 'सत्' शब्द का हुक्म (दीक्षा) लेकर प्रेम के साथ उस शब्द (मन्त्र) का स्मरण करेंगे तो वे शरीर छूटने पर छपलोक को प्राप्त करेंगे । यह सुनकर दरिया साहब कहते हैं कि मेरे जीवन का यह धन्य भाग्य है कि आपने इस प्रकार का आज्ञा व अधिकार दिया । उसके पश्चात् हृदय में एक प्रार्थना किया जिसको अन्तर्यामी हमारी अन्तरगति को जान गये । फिर भी मैं उनके चरणों पर सिर झुकाकर निवेदन किया जिसे सत्नाम साहब ने ध्यानपूर्वक सुना । मैंने पूछा कि किस युक्ति से इस जगत में जीव भवसागर से पार होगा तथा किस नाम से यह काल डरेगा । तब सत्पुरुष ने मुझसे कहा कि छापा का पहचान 'सत्नाम' है । सत् सुकृत से प्रेम लगाते हुए सुरति में उसको स्मरण करें । अपने परिवार (गृह) में युक्ति से रहकर रात-दिन, हमेशा शब्द (मन्त्र), नाम का प्रेम से स्मरण सुमिरन करता रहे ।

टिप्पणी-टकसार-'सत्नाम' । मूल=नाम (अकह) ।
तुम कहँ दीन्हों छापा मोहर, सत्नाम टकसार ।

बेबाहा* के देइ दुहाई । सुनत काल तब दूरि पराई ।।
निश्चै गहें डगमग नहि होई । एक ब्रत सत्नाम है सोई ।।
अरज कीन्ह जो ततु लगाई । धन साहब सामर्थ सहाई ।।
साखी- धन साहब सामर्थ्य हहिं, जिन्दा अजर अमान ।
दयावन्त दया निधि, प्रेम प्रीति निर्बान ।। ३५ ।।
धन साहब तुम अगम अपारा । सब विधि कर्ता सिरजनिहारा ।।
तुम गति लीला लखि ना आवै । बड़ा भाग जो दर्शन पावै ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा । जुग जुग खोजिन्ह ना पाइन्हि भेवा ।।
साँच भक्ति निजु जन से राजी । प्रेम सुरति निश्चय सिरछाजी ।।
जहाँ साँच तहाँ साहब बासा । साँच सुरति तहाँ लेहि निवासा ।।

शब्दार्थ – देई=देना । पराई=भाग जाना, चला जाना । निश्चय=दृढ़ संकल्प । ततु=तत्व । डगमग=विचलित । ब्रत=प्रतीज्ञा, नियम । जिन्दा=कभी न मरने वाला । अमान= परिमाण रहित, विनीत । अजर=कभी बूढ़ा न होने वाला । अगम=सुदृढ़, अगम्य । सिरजनहार=निर्माणकर्ता, स्रष्टा । गति=स्थिति, दशा । भेवा=भेद को । राजी=खुश, सहमत । सिरछाजी=कृपादृष्टि । सामर्थ=सामर्थ्यवान । सहाई=सहायता, मदद ।

चौपाई (भावार्थ)- सत्पुरुष दरिया साहब को नियम बताते हुए कहते हैं कि परिवार में रहकर प्राणी 'बेवाहा' की दोहाई देता रहे, जिसे सुनकर काल (यमराज) दूर भाग जायेगा । दृढ़ संकल्प होकर सुमिरन करे तथा कभी अपने मार्ग से विचलित न हो, सिर्फ सत्नाम का ही व्रत सुमिरन ध्यान करता रहे । सत्पुरुष के इस प्रकार कहने पर मैं ध्यान लगाकर विनती किया । हे सत्पुरुष साहब आप धन्य हैं तथा जीवों के उद्धार करने मे समर्थ हैं ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब सत्पुरुष से कहते हैं कि आप धन्य हैं तथा आप जिन्दा, समार्थ्यवान, अजर अमान, दयायुक्त, दयानिधि, निर्वाण तथा प्रेम-प्रीति से दर्शन देने वाले हैं ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि हे सत्पुरुष आप धन्य हैं तथा जो अगम अपार तथा सभी प्रकार के निर्माण करने वाले कर्त्ता हैं । तुम्हारी गति स्थिति व लीला किसी के पहचान में नहीं आती । मेरा बहुत बड़ा भाग्य है जो कि आपका दर्शन प्राप्त हुआ । ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश आदि देवता युग-युग तक खोजते रहे परन्तु आपका भेद नहीं प्राप्त कर सके । आप तो साँच (सत्य) भक्ति करने वाले प्राणी से प्रसन्न हो जाते हैं । तथा प्रेम 'सुरति' में निश्चित रूप से आपका दर्शन प्राप्त होता है । जहाँ साँच निश्छलता होती है वहाँपर साहब का बास होता है ।

टिप्पणी- *"सत् सुकृत बेबाहा साहब की दोहाई ।' - १४ वर्ण ।"

दयानिधि अस बोले विचारा । दरिया दास तुह अंश हमारा ।।
हँस के साहब बोले बानी । का माँगहु देऊँ सभ जानी ।।
हाथी घोड़ा सभे समाजा । फेरों छत्र करो सब काजा ।।
साँच बचन बोलहु निजु बैना । जाते तुम पावहु सुख चैना ।।
साखी- दयानिधि सुनि लीजिये, साँच कहों सिरनाय ।
हय हाथी नहिं माँगेऊँ, युग युग दास सहाय ।। ३६ ।।
माया मन तौ सभै नचावै । शीश पटकि के जीव जहँड़ावै ।।
अरुझि मरे सभ भूपति राजा । भक्ति भाव नहिं एको काजा ।।
माया ज्ञान नहिं आवे हाथा । शीश पटकि चले यम साथा ।।
मन माया सुर नर मुनिं मोहै । लालच कारण जीव सभ जोहै ।।
सुर नर मुनि और तपे सन्यासी । मन माया ग्रीव डारे फाँसी ।।

शब्दार्थ – अस=यह ऐसा । का=क्या । जानी=प्यारा, प्रिय, जानना । छत्र=सिंहासन, (राज्य) । काजा=कार्य । फेरो=घुमाना । जाते=जिससे । हय=अश्व, घोड़ा । सीसपटकि=पश्चाताप करते हुए । जहड़ावै=ठगाना, हानि उठाना । अरुझना=भिड़ना, झगड़ना । जोहे=प्रतीक्षा करना, इंतजार । फाँसी=फंदा, बन्धन । झलकि=धमक, करतल, आभास । चूतं=आम्र (आम) । नवमल्लिका=चमेली । नीलोत्पलम् =नीला कमल ।

चौपाई (भावार्थ)-दरिया साहब कहते हैं कि जो सच्चे हृदय से स्मरण करेगा उसको सुरति में परमात्मा का दर्शन होता है । यह सब सुनकर दयानिधि सत्पुरुष ने कहा कि दरिया दास तुम मेरे अंश हो । उन्होंने हँसते हुए कहा कि प्रिय तुम्हें क्या चाहिए मैं तुम्हें सब कुछ दूँगा । हाथी, घोड़ा, राज-काज, सिंहासन, सम्पति, ऐश्वर्य सब कुछ कृपा दृष्टि करके दूँगा । तुम निःसंकोच होकर अपने हृदय की सत्य वचन को कहो जिससे तुम्हें सुख शान्ति प्राप्त हो ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब सत्पुरुष के चरणों में सिर झुकाकर कहते हैं कि हे दयानिधि ! मैं सच्चे हृदय से कहता हूँ कि मुझे हाथी, घोड़ा, महल नहीं चाहिए । मैं आपका युग-युग तक दास रहूँ । यही मेरी इच्छा है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि सज्जनों ! इस संसार में तो मन माया सभी को नचा रही है । जिससे जीवात्मा ठगाकर पश्चाताप करता है । यहाँ पर धन सम्पत्ति, सुन्दरियों के लिए राजा दूसरे राजा से आपस में लड़ भिड़कर मर गये । वे भक्ति-भाव परमात्मा के भजन का कोई कार्य नहीं किये । यह जो माया का ज्ञान है वह हाथ (बश) में नहीं आता और अन्त में सिर पटकर (पश्चाताप करते हुए) यमराज के साथ जाना पड़ता है । मन माया ने सुर, नर मुनि, सभी को मोहित कर लिया । जीव लालच में पड़कर मोहिनी माया के पीछे पड़ा रहता है । यहाँ पर सुर, नर, मुनि तपस्वी एवं सन्यासी आदि सभी के गले में मन और माया ने फाँस लगा दिया ।

टिप्पणी- कामदेव के पाँच बाण- अरविन्द अशोकं च चूतं च नवमल्लिका नीलोत्पलम् च पञ्चेते पञ्चवाणस्य सायकाः ।

माया झलकि मोहिनी जब आवे । बाँधे बेरी सभे नचावे ।।
गाँठी माया जतन कै राखै । पाखंड भेष ज्ञान सभ भाषै ।।
लालच कारण कान सभ लागै । रंडी काम कबहिं ना त्यागै ।।
साखी- ऐसो गुरू ठगौरी जगत में, दीक्षा देहिं सब ठाँव ।
गुरु शिष्य संग बूड़ि मरे, कहाँ बसे निजु गाँव ।। ३७ ।।
दयानिधि हम दास तुम्हारा । कहों वचन सुनो एक बारा ।।
त्यागो काम माया कर फाँसा । अदल करों तेजों यम त्रासा ।।
जिभ्या इन्द्री स्वाद सभ मारों । कामिनी कनक न हाथ पसारों ।।
ना माँगों ना जाचों जाई । जो भेजो सो तुम्हारी बड़ाई ।।

शब्दार्थ – बेरी=जंजीर । गाँठी=छिपाकर, बाँधकर । जतन=यत्न । पाखण्ड=बनावटी, नकली । भाषै=कहना, कथना । कान लागै=मंत्र देना, (कान फूकना) रंडी=वेश्या । ठगौरी=धोखा देकर लूटना । त्रासा=डर, भय । अदल=न्याय, विना सेना का । मारों=समाप्त करना । पसारों=फैलाना । जाचों=याचना, प्रार्थना करना । अशोकं=अशोक वृक्ष । अरविन्दम्=लाल कमल ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि यह माया सुन्दर मोहिनी होकर (करतल) हाथ दिखाकर, बजा-बजा कर सभी को मोह रूपी जंजीर में बाँधकर नचा रही है । इस संसार में पाखण्ड भेषधारी हैं जो ज्ञान को कहते फिरते हैं तथा धन को बहुत यत्न से रखकर संचय करते हैं परन्तु उसमें से परमार्थ में कभी खर्च नहीं करते । वे धन के लालच में लोगों को शिष्य बनाते हैं, कान फूकते हैं तथा वेश्याओं के साथ रति सुख का कभी त्याग नहीं करते हमेंशा उसी में आसक्त रहते हैं ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि ऐसे गुरु संसार में लोगों को धोखा देकर ठगते फिरते हैं तथा हर जगह वे दीक्षा (शिष्य) करते रहते हैं । और अन्त में गुरु शिष्य साथ में ही नरक को जाते हैं उनके लिए कहीं भी निजी निवास नहीं है अर्थात् उन्हें कोई स्वर्ग नहीं मिल पाता ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब सत्पुरुष से कहते हैं कि हे दयानिधे ! मैं आपका दास हूँ । इसलिए शपथ के साथ कहता हूँ कि उसे सुन लीजिए । मैं माया के बन्धन आसक्ति को छोड़ दूँगा । यमराज का भय त्यागकर न्याय करुगां । जिभ्या इंद्रि के स्वाद (षट्रस) को समाप्त कर दूँगा तथा कभी कनक-कामिनी के लिए हाथ नहीं फैलाऊँगा । मैं किसी से अपने लिए मागने व प्रार्थना करने नहीं जाऊँगा । जो कुछ भी तुम भेजोगे उसी में आपकी प्रशंसा गुणगान करूँगा ।

टिप्पणी- षट्रस- मीठा, नमकीन, कड़वा, तीता कसैला और खट्टा ।
माया- जो कुछ भी दृष्टि से दिखाई देता है वह सब माया का चिन्ह है, (आसक्ति) ।

जो दाफा संग जामा कीजै । अन्न कपड़ा इन्ह सब कहँ दीजै ।।
जाति पाति नहीं कूल बड़ाई । अदल करो जीव मुक्ताई ।।
साहब खुशदिल बहुत बखानी । तुम सुकृत हहु निर्मल ज्ञानी ।।
शहजादा तुम मन्सफदारा । करहु बादशाहीं दीन करारा ।।
असल बादशाही दीन के दीन्हां । सत्य बचन निश्चय लिखि लीन्हा ।।
साखी- सत्रह शहजादा दीप दीप में, सभे ताबीन तोहार ।
एहि छापा चलाइहो, बोलहु बचन करार ।। ३८ ।।
अन्न कपड़ा हम देब भेजाई । जो दाफा सामिल होय जाई ।।
जो जीव लागे तुम कहँ जानी । ताको मेटे नर्क की खानी ।।
ताहि लेई छपलोक बसावों । पुहुप पलँग पर तेहि बेलसावों ।।
सुख सागर दया द्वीप तुम्हारा । बैठे हंस सुख रंग करारा ।।

शब्दार्थ – दफा=कानून का एक नियम । जामा=पहनावा, कपड़ा । इन्ह सब=इन सभी को । कूल=परिवार, वंश परम्परा । बखान=प्रशंसा, बढ़ाई । हहु=हो । निर्मल=पवित्र, रागादि दोषों से रहित । शाहिजादा=शाह के बेटा, पुत्र । मनसबदार=अधिकारी, पदयुक्त । दीन=गरीब, धर्म, पंथ, मजहब । बादशाही=शासन, अधिकार । करारा=सुदृढ़ । ताब=सामर्थ्य, धैर्य । तोहार=तुम्हारा । देब=देना, दूँगा । शामिल=सम्मिलित । जानी=प्रिय, प्यारा, जानेगा । खानि=जगह । रंग=दशा, आनन्द । ताको=उसको । ताहि=उसे ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब सत्पुरुष से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि जो प्राणी आपके कानून के साथ रहेगा इन सबको अन्न कपड़ा भरिपूर दीजिए। जाँति-पाँति तथा कूल की मर्यादा से अलग न्यायपूर्वक जीवों को मुक्त करिए। यह सुनकर साहब खुशदिल से प्रशंसा किया और कहा कि सुकृत तुम निर्मल ज्ञानी हो। तुम राजा के पुत्र के समान अधिकारी हो इसलिए तुम निश्चय होकर पंथ का बादशाही (अधिकार) करो। मैं तुम्हें धर्म पन्थ चलाने का असल बादशाही सत्य वचन के साथ लिखकर दे रहा हूँ

साखी (भावार्थ)- सत्पुरुष दरिया साहब से कहते हैं कि मेरे सत्रह सहिजादा अपने अपने द्वीप में हैं सभी तुम्हारे सामर्थ्य, धैर्य की प्रशंसा करते हैं। अतः यह छापा चलाओ तथा दृढ़ होकर उपदेश वचन सुनाओ।

चौपाई (भावार्थ)- सत्पुरुष कहते हैं कि जो पंथ के कानून में शामिल हो जायेगा। उसे मैं अन्न कपड़ा भेजवाऊँगा। जो जीव तुमसे प्रेम करेगा तुमको प्रिय समझेगा उसके नरक की जगह समाप्त हो जायेगी अर्थात् उसे नरक में नहीं जाना पड़ेगा। उस जीव को छपलोक में बसाऊँगा तथा वहाँ पर वह पुष्प पलंग पर सुख प्राप्त करेगा। सुख सागर स्वरूप वह दया द्वीप में हंस सुखपूर्वक निश्चिन्त होकर हमेशा के लिए विराजमान हो जायेगा।

टिप्पणी- परवाना='सत् ' शब्द ।

तोहरी बाही जो जीव आवहीं । 'सत्' शब्द परवाना पावहीं ।।

पुहुप पलंग करहिं सुख चैना । अति बेलास मुख अमृत बैना ।।
तहाँ न राव रंक की बानी । एक रूप राशि सब खानी ।।
चाँद सूर्य नहिं करहिं निमेरा । एक रूप उदित चहुँ फेरा ।।
पवन संचार वहाँ नहिं जाई । अगर बास श्वेत सब छाई ।।
साखी- ऐसन सुख शहर में, हंस करहिं सुख राज ।
आवागमन से रहित भयो, अचल अमर सब काज ।। ३९ ।।
दयानिधि दया बहु कीन्हा । जो कुछ दिल में सो सब दीन्हा ।।
सिप्ति कहाँ तक कहों निजु बैना । बेकीमति देखा निजु नयना ।।
बेकीमति कछु बरनि न जाई । ज्ञानी कथि कथि अन्त न पाई ।।
चारि वेद कथहिं बिस्तारा । कथि-कथि नाहीं पावहिं पारा ।।

शब्दार्थ – रंग=दशा, आनन्द । राव=राजा । रंक=निर्धन । राशि=समान जाति की बहुत सी वस्तुओं का ढेर । निमेरा=छुटकारा, अलग होना, पूर्ति । संचार=प्रवाह, बहाव । रहित=अलग, छुटकारा । आवागमन=जन्म-मरण । सिफ्ति=गुणगान, प्रशंसा । बेकीमत=जिसका मूल्य न लगाया जा सके । शेष=शेषनाग । सहस्र=एक हजार । कथि-कथि=कह-कहकर । पावहिं=प्राप्त कर सके । वरनि=वर्णन । निजु=मुख्य, अपने । न जाई=न जा सका । वैना=वाणी से ।

चौपाई (भावार्थ)- सत्पुरुष दरिया साहब से कहते हैं कि वहाँ अमरलोक में हंस (जीव) आनन्द के साथ अमृत का पान करते हुए पुष्प पलंग पर सुखशान्ति से विलास करता है। वहाँ पर चाँद, सूर्य, परिक्रमा (उदय-अस्त) नहीं करते। एक ही ज्योति का प्रकाश सर्वत्र सदैव प्रकाशित रहता है। पवन का संचार भी वहां नहीं जाता। वहाँ सदैव सुगन्धित वास ही चारो ओर छायी रहती है।
साखी (भावार्थ)- सत्पुरुष दरिया साहब से कहते हैं कि ऐसा सुख उस शहर में (छपलोक) है जहाँ पर हंस (जीव) स्वतन्त्र होकर सुख भोगता है तथा आवागमन से छुटकारा पाकर अचल अमर हो जाता है।

चौपाई (भावार्थ)- उपयुर्क्त वाणी को सुनकर दरिया साहब कहते हैं कि दयानिधि ने मेरे ऊपर बहुत दया किया तथा जो कुछ हमारे दिल में था सब कुछ दिया। मैं उनका गुणगान अपनी वाणी से कहाँ तक करूँ। मैं उस बेकीमत को अपने आँखों से देखा। उस रूप का वर्णन करने में मैं असमर्थ हूँ। जिसका ज्ञानियों ने कह-कहकर थक गये परन्तु उसका अन्त नहीं पा सके। ब्रह्मा ने चार वेद के द्वारा विस्तार से कहा परन्तु कहते-कहते उसका पार नहीं प्राप्त कर सके।

टिप्पणी- चार वेद- ऋक्, साम, यजुः तथा अथर्व वेद ।

शेष सहस्त्रमुख कथि जो आना । ताकर आदि तेहूँ नहिं जाना ।।
हारि हारि सब बोलहिं बानी । नहिं रेख रूप सहिदानी ।।
फेरि पटतर अस बोलहिं बानी । टेम्भी रूप ज्योति सहिदानी ।।
जाकर आदि अन्त सब रचना । ताके टेम्भी अस बोलहिं बचना ।।
साखी- चाँद सूर्य तारागण, एता जीव बिस्तार ।
ताके रूप रेखा है, दिव्य दृष्टि उजियार ।। ४० ।।
ज्ञानी सो चौधारा बूझे । आदि अन्त अगम सब सूझे ।।
पार ब्रह्म जाके सब भाषे । अजर काया नहीं युग-युग राखे ।।
ज्ञानी होये सो करे बिचारा । पार ब्रह्म हहिं अपरम पारा ।।
निर्मल काया वोय पुरुष पुराना । सन्त समुझि के करहु बखाना ।।

शब्दार्थ- तेहुँ=उन्होंने । अस=यह, इस प्रकार, ऐसा । टेंमी=दीपक की लौ, (ज्योति), प्रकाश । पटतर=बराबरी, तुलना, उपमा । रचना=कृति, बनाया हुआ । एता=इतना । उजियारा=प्रकाश । हहिं=है । अपरम्पार=अपार, असीम । सूझे=दिखाई देना । राखे=रख सके । भाषे=कहे । चौ=चार । बूझे=जानना ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि उस ब्रह्म का वर्णन एक हजार मुख वाले शेषनाग किये परन्तु उसके आदि-अन्त को कुछ भी न जान सके । अन्त में हारकर कहना प्रारम्भ किया कि उस 'ब्रह्म' का कोई रूप रेखा, चिन्ह नहीं है । फिर कुछ न समझ में आने पर कहने लगे कि उसका स्वरूप दीपक की लौ की ज्योति के समान है । आदि से अन्त तक जिसका सब बनाया हुआ है उस ब्रह्म को 'दीपक की लौ' ज्योति प्रकाश के तुल्य बतलाते हुए कहते हैं ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जिसने चांद, सूर्य, तारागण इतने जीवों का विस्तार किया है । उसका रूप रेखा है तथा वह दिव्य दृष्टि के प्रकाश में आने वाला है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जो ज्ञानी होता है वह चारो धाराओं को जानता है तथा उसको आदि-अन्त सब दिखाई देता है । इस संसार में जिस ईश्वर (त्रिगुणयुक्त) को परमब्रह्म कहते हैं वह इस संसार में जन्म लेकर उसका शरीर अजर-अमर नहीं हो सका । जो ज्ञानी जन हैं इस पर विचार करें, वह पारब्रह्म अपरम्पार है । वह निर्मल काया वाला पुरातन पुरुष है । हे संतजन ! सोच समझकर बताइए तथा वर्णन कीजिए कि कौन सा भजन करने पर अनहदनाद सुनाई देता है ।

टिप्पणी- शेषनाग- पुराणों में पृथ्वी शेषनाग पर टिकी है ऐसा लिखा है । उनके पास एक हजार (सहस्त्र), फण (मुख) है ।

कवने योग युक्ति से पावे । कवन ध्यान ले निश दिन लावे ।।
कवन भजन मुख टेरि सुनावे । कवन सुरति छपलोक सिधावे ।।
कवन ब्रत करे जीव जानी । जाते मेटे नरक की खानी ।।
जाते मुक्ति पदारथ पावे । एहि संसार बहुरि नहिं आवे ।।
सुनहु सन्त मैं करों बखाना । समुझहु भेद यह निर्मल ज्ञाना ।।
कतनों कष्ट जो तन के देई । मनमत ज्ञान कतनों गहि लेई ।।
सहज सुरति मूल लवलावे । उठत बैठत दृष्टि ठहरावे ।।
सहज शून्य सुमिरे सो ज्ञानी । प्रेम प्रीति मूल पर ठानी ।।
काया दृढ़ाए काया ले राखे । योगी योग काया ले भाषे ।।
काया अजर केहकी ठहराना । योगी यति सब मिट्टी समाना ।।

शब्दार्थ - कवने=किस । कतनों=कितना भी । देई=दिया जाय । सिधावे=जायेगा, प्रस्थान, प्राप्त करना । गहि=धारण किया । केहिकी=किसकी । यती=जितेन्द्रिय, सन्यासी, श्वेताम्बर जैन साधु । बखान=प्रसंशा, बड़ाई, वर्णन । ठानी=स्थिर करना । बहुरि=पुनः । कतनों=कितना भी ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि किस सुरति को लगाने पर जीव छपलोक को प्राप्त करता है । यह जीव कौन सा योग व युक्ति से परमपद को प्राप्त करेगा तथा कौन सा सुमिरन, ध्यान हमेशा लगायेगा । यह जीव कौन सा ब्रत को जाने जिससे नरक से छुटकारा मिल जाय । जिससे मुक्ति पदार्थ को प्राप्त करके फिर इस संसार में पुनः न आये । तो हे सज्जनों, सुनो ! मैं इसका वर्णनकर रहा हूँ इस निर्मल ज्ञान के भेद को समझ लीजिए । इस शरीर को कितना भी कष्ट दिया जाय अथवा मनमत ज्ञान कितना भी धारण किया जाय उससे कुछ भी प्राप्त नहीं होगा । केवल सहज रूप से सूरति को मूल (नाम) पर स्थिर करके हर समय उठते-बैठते लगाये रखना चाहिए । शून्य (दिव्य गगन) में सहज रूप से उस नाम का स्मरण करना चाहिए तथा लवलीन होकर मूल (नाम-मंत्र) पर ध्यान स्थिर करना चाहिए । इस काया को सुदृढ़ बनाने के लिए योगी लोग योग के द्वारा काया को वश में करने का प्रयास किये तथा योग-साधना का वर्णन किये परन्तु किसी की काया अजर नहीं हो सकी । और अन्त में योगी, यती सभी की काया नष्ट होकर मिट्टी में मिल गयी ।

टिप्पणी- चौधारा- त्रिगुणधारा+ज्ञान की धारा-त्रिगुण त्रिविध धार अति बांकी ।
योग- ज्योतिष के अनुसार कुल सत्ताइस योग हैं ।
योग सम्बन्धी छः कर्म- धौती, वस्ती, नेती, त्राटक नौलिक और कपालभाती ।

हठ निग्रह योग शंकर जो ठाना । अन्तहुँ काया नहिं ठहराना ।।
गोरख योग काया जो साधा । हठ निग्रह करि आसन बाँधा ।।
निद्रा साधि पवन जो पीवे । सो तो युग युग कबहीं ना जीवे ।।
केते योगी हठ निग्रह कीन्हा । रज बिन्द होखे फेरि छीन्हा ।।
जो योइनि महँ जन्मे आई । अजर काया कहु केहिकी भाई ।।
काया पतन सबकी होय जाई । महा-महा मुनि गये नशाई ।।
साखी-काया पतन सबकी भई, तुम आये गये कई बार ।
एक अजर सत्पुरुष हहिं, सोई रंग करार ।। ४१ ।।

शब्दार्थ- निग्रह=दमन, अभ्यास और वैराग्य के द्वारा चित्त वृत्ति का निरोध । साधि=वश में करके । रज=स्त्री का रज+वीर्य । बिन्द=पुरुष का वीर्य । छीना=क्षीण होना । योनि=गर्भ । महँ=में, के द्वारा । कहु=कहो । काया=शरीर । पतन=विनाश, नष्ट, नाश ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि भगवान शंकर ने हठयोग, निग्रह किया परन्तु अन्त में उनकी भी काया स्थिर नहीं रह सकी । महायोगी गोरखनाथ ने अपनी काया (शरीर) को वश में करने के लिए हठ निग्रह करके आसन को सिद्ध किया तथा केवल पवन को ग्रहण करके निद्रा को वश में किया । वह भी युग-युग तक नहीं रह सके । न जाने कितने योगी हठयोग तथा निग्रह किये लेकिन उनका भी रज (स्त्री) वीर्य (पु०) क्षीण हो गया । जो भी योनि (गर्भ) से जन्म लिया किसी की भी काया अजर अमर नहीं हुयी । हे भाइयों ! इस संसार में जो भी आया सबकी काया का विनाश हुआ यहाँ तक कि महान् ऋषि मुनि की भी काया नष्ट हो गयी ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि हे मनुष्यों इस संसार मृत्युलोक में सभी की काया नष्ट हो गयी । तुम भी इस चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करते हुए कई बार मानव शरीर में आ चुके हो । केवल एक सत्पुरुष ही है जो अचल, अमर, अजर हैं जो कभी जन्म नहीं लिये केवल उन्हीं की काया सुदृढ़, सत्य, अजर, अमर है ।

टिप्पणी- मैथुन- श्रवण, कीर्तन, सुमिरन, चिंतन, एकान्त, वार्तालाप, दृढ़संकल्प, प्राप्ति ये आठ प्रकार के मैथुन हैं ।

अष्टांग योग- (योग=हठयोग के आठ अंग)-यम, नियम आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ।

हठयोग- एक प्रकार का योग जिसमें नेती, धौती, आसन आदि क्रियाएं करते हैं; त्राटक,धारणा, ध्यान, समाधि आदि के द्वारा चित्रवृत्ति को वाह्य विषयों से हटाकर अन्तर्मुखी करते हैं ।

करहु भक्ति जीवन है थोरा । मानहु शब्द कहा सुनु मोरा ।।
बिना भक्ति कछु काम न आवे । जन्म-जन्म ऐसे जँहड़ावे ।।
जो सिरजा यह तन मन ज्ञाना । सिफ्ति करहु करहु निसि दिन विख्याना ।
तन के छूटे ठँवर करि लीजै । प्रेम भक्ति निश्चय दिल दिजै ।।
निर्मल ज्ञान बुझहु चितलाई । जाते आवागमन मेटाई ।।
करहु भक्ति भर्म सब टारी । कर्म काल निश्चय सब झारी ।।
माया मोह बन्धु सुत नारी । काटहु बेरी सभ जगत पुकारी ।।
माया विदेह हाथ नहिं आवै । सीसपटकि के सभे नचावै ।।
जैसे दर्पण झाँई दिखावै । विरला जन कोई पारख पावै ।।
जैसे चित्र लिखे बहु भाँति । देखत हित लागे चहुँ पाँती ।।
अहे बिदेह हाथ नहिं आवे । लालच करि के सभे तरसावै ।।

शब्दार्थ - थोरा=अल्प । जहड़ावे=ठगा जाना, हानि उठाना । सिरजा=निर्माण किया, बनाया । विख्यान=वर्णन, व्याख्या करना । ठौर=ठवर=रुकने का जगह । दीजै=दीजिए । मेटाई=मिट जायेगा । झारी=गिराकर, फेंककर, झाड़ी । विदेह=शरीर रहित, आसक्ति रहित । पारख=सत्य-असत्य, उचित अनुचित की जानकारी । पांती=पत्र, लज्या, मर्यादा । पातुर=वेश्या। तरसावे=ललचावे, व्याकुल करे । स्थूल=स्थिर, अचल । नचावै=नचाना, परेशान करना । लिखे=लिखना । बहुभांति=बहुत प्रकार से ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि यह जीवन अल्प है । इसलिए सावधान होकर भक्ति करो । क्योंकि बिना भक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा । तथा जन्म जन्मान्तर तक ऐसे ही दुःख व हानि उठाना पड़ेगा । जिसने तुमको तन, मन, बुद्धि विवेक ज्ञान आदि दिया उस परमपिता के यश हर समय गुणगान करो । जिससे कि आवागमन से छुटकारा मिल जाय । सभी प्रकार के भर्म को छोड़कर भक्ति करो तथा काल कर्म अर्थात् हिंसा, क्रोध, छल, कपट आदि को दूर कर दो ।यह जो भाई बहन, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, आदि के मोह रूपी माया लगी हुई है इस बन्धन (जंजीर) को निश्चिन्त होकर काट डालो । अर्थात् आसक्ति को छोड़ दो । यह जो माया है केवल प्रतिरूप है । वह किसी के प्रति आसक्ति नहीं रखती और नहीं किसी के हाथ आने वाली है । यह सभी का सिर पटककर नाच नचाती है । जिस प्रकार दर्पण में छाया (प्रतिबिम्ब) दिखाई देता है उसी तरह से इस माया की झलक का भेद बिरला कोई ही जान पाता है । जैसे किसी पट्ट पर किसी वस्तु का चित्र बना हो परन्तु उस चित्र से उस वस्तु का काम नहीं लिया जा सकता । उसी प्रकार माया बिना रूपवाली होकर केवल अपनी छाया मात्र है वह किसी के बश में होने वाली नहीं है ।

चीन्हहु सत् सुकृत चित्तलाई । जिन्हि मुक्ति पदारथ भेद बताई ।।
जिन्हि यह जीव के मूल बताई । तासो प्रेम सुरति लवलाई ।।
साखी- ताके खोजहु ज्ञानी, जो सबके हहिं मूल ।
डार पात सब छोड़के, गहो पेड़ स्थूल ।। ४२ ।।
अधम मध्यम उत्तम मूला । पाखंड कर्म काल समतूला ।।
छव दर्शन छानबे पाखंडा । तामें जगत भूला नवखंडा ।।

शब्दार्थ – मूल=मुख्य, जड़ । समतूला=एक बराबर, समान । देऊ=देवता । चिन्हहु=पहचान करो । चितलाई=चित्त लगाकर । बताई=बतलाया । जिन्हि=जिसने । मूल=जड़, मुख्य स्रोत । तासो=उससे । लवलाई=प्रेम लगाओ । काल=यमराज, पाप कर्म ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि माया केवल लालच दिखाकर सभी को तरसाती (व्याकुल) करती रहती है । इसलिए माया की ओर से चित्त हटाकर परमात्मा पर लगाओ । सत् , सुकृत का पहचान करो जिसने मुक्ति पदारथ का भेद बताया । जिसने इस जीव का मूल परमात्मा अथवा उनका नाम बताया उस सतगुरु से प्रेम को ध्यान में सुरति लगाओ अर्थात् श्रद्धा व प्रेम के साथ सतगुरु की भक्ति करो ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि हे ज्ञानियों जो सबका मूल परमात्मा है उसका खोज करो जितने भी डाल, पात शाखा हैं सबको छोड़कर वृक्ष के उस जड़ को पकड़ो । अर्थात् संसारिक देवी-देवता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा निरंजन सभी को छोड़कर केवल उस परमब्रह्म परमात्मा का ध्यान करो ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि इस संसार में मुख्यतः तीन प्रकार के कर्म हैं – १- उत्तम २-मध्यम ३-अधम । अधम कार्यों में जो पाखण्ड कर्म है वह कलि के कर्म के समान है इस जक्त में छः दर्शन तथा छानवे पाखण्ड हैं । संसार के सभी लोग उसमें भूले हुए हैं ।

टिप्पणी- छः दर्शन या शास्त्र -(i) सांख्य, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, योग और वेदान्त ।
(ii) जोगी, जंगम, सेवड़ा, सन्यासी, दरवेंश, ब्राह्मण ।
छानवे पाखण्ड- १२ योगी, १८ जंगम, २४ सेवड़ा, १० सन्यासी १४ दरवेश, १८ ब्राह्मण ।

छव गुरु छव घर छव उपदेशा । गुरु घर एक भेद विशेषा ।।
पाखंड छानवे काँध जनेऊ । पाखंड कर्म पूजहिं सभ देऊ ।।
अग्नि पवन पानी प्रकाशा । चाँद सुरज धरती निजुबासा ।।
छव दर्शन जगत सभ लागे । पाखण्ड कर्म सभन्हि मिलि जागे ।।
छव दर्शन सभ कोई गावै । अगम भेद बिरला कोई पावै ।।
अगम भेद बूझहु रे ज्ञानी । छव के तेजि गहु मुक्ति की खानि ।।
ए सब अगम पुरुष को छाया । युक्ति-युक्ति सब जगत बनाया ।।
योगी जागे योग बखाना । पाखंड कर्म सभ पढ़हिं पुराना ।।

शब्दार्थ – भेद=रहस्य । सभन्हि=सब लोग । गावै=कहते हैं । बूझहु=समझ लो । रे=सम्बोधन । तेजि=छोड़कर । देऊ=देवता । जागे=स्तुति । परगासा=प्रकाश । ए=यह । पुराना=पुराण ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि दर्शन में छः गुरु, छः घर, छः उपदेश हैं परन्तु सभी का मूल तत्त्व गुरु के उपदेश व परमात्मा पर विश्वास है । परन्तु लोग कांध पर जनेऊ (सभी वर्ण के लिए -मनुस्मृति) तथा छानवे कर्मकाण्ड को करते हुए सभी देवी-देवताओं की पूजा करते हैं वे सब लोग पवन, पानी, अग्नि, वायु, चाँद, पृथ्वी की दर्शन की विधि से स्तुति करते हैं । छः दर्शन की बात को सभी जानते व उसके अनुसार कर्मों को करते हैं शास्त्रों को बहुत से लोग पढ़ते हैं परन्तु उस अगम पुरुष का भेद कोई ही जानता है । इसलिए सज्जनों ! उस अगम भेद का खोज करो तथा इस षट्शास्त्र को छोड़कर मुक्ति पंथ को धारण करो । यह जो संसार है वह उस अगम पुरुष की छाया मात्र है । जिसे सत्पुरुष ने युक्ति से विधिवत भाँति-भाँति का बनाया है परन्तु उस पुरुष को छोड़कर योगी लोग योग साधन की बड़ाई करने लगे तथा नाना प्रकार के कर्म को करते हुए पुराण का पाठ करने लगे ।

टिप्पणी-

पुराण- ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, भविष्य, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कन्द, कुर्म, मत्स्य, गरुण, वामन, और ब्राह्मण ये अट्ठारह पुराण हैं ।

युक्ति जाने तो योगी होई । चेतन ब्रह्म सदा है सोई ।।
तन संभारि युक्ति जो राधै । मन के चीन्ह मूल के साधै ।।
काया अग्र दृष्टि लवलावै । गगन सुरति अगम के धावे ।।
ब्रह्म दृढ़ाय होय उजियारा । बरे ज्योति तहाँ निर्मल धारा ।।
साखी- भवँर गोफा के चीन्हि के, करे कमल उजियार ।
कहें दरिया ज्ञानी होखे तौ, राखै दृष्टि करार ।। ४३ ।।
जन्म दुर्लभ नहिं बारम्बारा । करहु भक्ति निजु नाम प्यारा ।।
सतगुरु सेवा करो पहचानीं । सुजस जस गहो निर्मल बानी ।।

शब्दार्थ –जाने=जानना । युक्ति=उपाय, रास्ता । सदा=सदैव । चेतन=चैतन्य । संभारि=सम्भालना, रक्षा करना । राधे=पूजा, आराधना, सिद्ध करना । साधै=कार्यसिद्धि, उपासना । बरे=जले । अग्र=आगे, सामने । करार=दृढ़ निश्चय । सुजश=सुयश । बानी=वाणी । धावे=जाना, दौड़ना । दृढ़ाय=पूर्ण विश्वास । राखै=रखना । बारम्बारा=बार-बार । दुर्लभ=कठिनाई से प्राप्त होने वाला ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि योगी तो वह है जो युक्ति को जानता है । उसी को उस चैतन्य ब्रह्म का दर्शन प्राप्त होता है । शरीर की रक्षा करते हुए युक्तिपूर्वक पूजा अराधना करनी चाहिए तथा मन को पहचानकर मूल (नाम) पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए । अपनी काया के सामने दृष्टि को स्थिर करने पर शून्य गगन में सुरति अगम को जाने लगती है और यह जीव ब्रह्म के ऊपर दृढ़ हो जाने पर प्रकाश (दिव्यज्योति) मिल जाता है वहां पर दिव्य ज्योति जलने लगती है । निर्मल धारा प्रवाहित होने लगती है । अर्थात् जीव परमसुख की अनुभूति करने लगता है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जो लोग ज्ञानी हैं । सहज योग साधन तथा अपनी दिव्य दृष्टि को दृढ़ रखें क्योंकि भंवर गुफा में मन मकरन्द के ठहरने की जगह है । वह वहीं से इधर-उधर तथा अनेक प्रकार के संकल्प विकल्प करता है ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि मानव का जन्म दुर्लभ है । यह बार-बार मिलने वाला नहीं है । इसलिए 'नाम' से प्रेम लगाकर भक्ति करो । सतगुरु को पहचान कर सेवा करो तथा उनके सुयश को निर्मल वाणी से गहो ।

टिप्पणी- भँवर गुफा -त्रिकुटी के मध्य से दिव्य सुरति निकलती है ।

पारख करिके सेवा ठानी । साँच शब्द मुक्ति जो जानी ।।
चोर साहु चीन्हैं चितलाई । करे सेवा सुरति लवलाई ।।
बन्दी छोर तुह दिनदयाला । सन्तन के करहु प्रतिपाला ।।
बन्दी छोर तुह बन्द छुड़ाबहु । आय जगत में जीव मुक्तावहु ।।
दयावन्त तुम होहु दयाला । काटहु यम फाँस यमजाला ।।
जम्बु दीप है काल सनेही । कठिन काल तन ब्यापे देही ।।
रहे खमीर काल सभ पासा । देइ अचानक जीव कहँ त्रासा ।।
घट घट बोले सभे डोलावे । बाजीगर ज्यों हुकुँम चलावे ।।
ऐसन सुरति अचेत करावे । अवरि कहन के अवरि कहावे ।।
साखी- ऐसन चाल जगत में, डारे फाँस अनन्त ।
दयावन्त तुब दर्शन में, तोरों काल के दन्त ।। ४४ ।।

शब्दार्थ – पारख=पहचान करना । बन्दीछोर=बन्धन को छुड़ाने वाला । दीनदयाल=गरीब, असहाय पर दया करने वाला । प्रतिपाल=रक्षा करने वाला । आय=आकर के । यम=यमराज । देही=शरीर । सनेह=प्रेम, प्रिय । कहँ=को । खमीर=प्रकृति, मीठा में बनी वस्तु । अवरि=और । कहन=कहने, कहना । अनन्त=जिसका अन्त न हो । तोरों=तोड़ना । दन्त=दांत । काल=यमराज । चाल=गति, व्यवहार । डारे=डालना, फेकना ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जो सन्त सत्य मुक्ति को जानने वाले हैं उन्हीं को पहचान कर सेवा का ब्रत लेना चाहिए । इस संसार में अनेक भेषधारी हैं । छली, कपटी, चोर आदि घूमते रहते हैं । उसमें संचरित होने वाले साधु सन्त को पहचानकर प्रेम लगाकर सेवा करनी चाहिए ।। दरिया साहब उस सत्पुरुष से कहते हैं कि आप दीनदयाल बंदी छोर हैं । आप सन्तों की रक्षा करिए । हे बन्दीछोर ! आप जीवों के बन्धन को छुड़ाकर इस भव सागर से मुक्त कर लीजिए । हे दयावन्त ! तुम दया करके इस यमराज के बन्धन तथा यमजाल (जौंजाल) को काट दीजिए । यह जम्बू देश काल का प्रिय देश है । यहाँ पर काल शरीर में व्याप्त होकर जीव को कष्ट देता है । जिस प्रकार खमीर (मीठायुक्त पदार्थ) होता है उसी प्रकार काल सभी जीवों के पास है तथा अवसर मिलते ही उसे भय दुःख देने लगता है । जैसे नट बंदर को अपने संकेत से नचाता है ऐसा यह मन सुरति को अचेत करा देता है तथा जीव कहना कुछ चाहता है परन्तु यह काल रूपी मन कहला कुछ और देता है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि ऐसा इस काल रूपी मन का स्वभाव है जो जीव पर अनन्त फाँस (बन्धन) डाले हुए हैं । हे सत् पुरुष ! आपके दर्शन से ही इस काल की (दाँत) शक्ति कम हो सकता है । अर्थात् बन्धन कट जायेगा ।

तब साहब अस बोले बानी । कहों भेद सुनो तुम ज्ञानी ।।
कहों भेद की करि देखलाओं । आवे शरन में तेहि मुक्ताओं ।।
सभ पर अमल हमरा अइई । देखत काल कम्पित होए डरई ।।
आदि अन्त हमहीं हहिं मूला । अवरि डारि हमहिं स्थूला ।।
पहिले मूल तब पीछे डारा । भया मूल तब डार पसारा ।।
पहिले पुरुष तब पीछे नारी । भई ज्योति तब जगत पसारी ।।
पहिले अकह तब कह में आवे । होय ज्ञान तब जग समुझावै ।।
साखी- अकह मूल निजु नाम है, योग युक्ति परवान ।
चेतनि रहो जिव-जानि के, मरदो यम के मान ।। ४५ ।।
जो जीव करे नाम के आसा । ताके काल ना डारे फाँसा ।।
जब डारे तौ लेऊँ छोड़ाई । जतन करों जीव यम नहिं खाई ।।

शब्दार्थ- करि=करके । अमल=आचरण, अधिकार, प्रभाव । अकह=कुछ न कहना । कह=कहने की प्रक्रिया । परवान=प्रमाण, अवधि, सीमा । आशा=विश्वास । जतन=यत्न, रक्षा । परवाना=आज्ञा पत्र, हुक्मनामा । जग=संसार । फांस=बन्धन । मर्दन=कुचलना, नाश । अवरि=और सब । कम्पित=काँपना, हिलना । जीव-जान=सम्पूर्ण शक्ति से । चेतनि=चैतन्य, ज्ञान में ।

चौपाई (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि वाणी को सुनकर सत्पुरुष बोले कि मै। तुम्हें एक भेद बता रहा हूँ उसे सुनो और उसे आगे करके दिखाऊँगा ।जो जीव हमारे शरण में आ जायेगा इसे भवसागर से मुक्त कर लूंगा । शरण में आने वाले सभी जीवों पर हमारा अधिकार होगा जिसे देखकर काल डर से काँप जायेगा । सभी आदि और अन्त का मूल मैं ही हूँ और सब डाल स्वरूप हैं । सर्वप्रथम मूल होता है उसके बाद डाल का अस्तित्व होता है । मूल होने पर ही डाल-शाखा का विस्तार होता है । सत्पुरुष कहते हैं कि पहले पुरुष (मैं) तथा पीछे (नारी) ज्योति उत्पन्न हुई इसी ज्योति से आदिशक्ति नारी से जक्त का विस्तार हुआ । पहले अकह (अन्तर्मुखी) उसके बाद (बर्हिमुखी) कहने में आता है । पहले ज्ञान होने पर तब संसार को समझाया जाता है ।

साखी (भावार्थ)- दरिया साहब से सत् पुरुष कहते हैं कि जो जीव नाम पर वि श्वास करेगा उसको काल बन्धन नहीं लगायेगा । अगर बन्धन डालेगा तो मैं उसे तुरन्त छुड़ा लूंगा उस जीव की रक्षा करूँगा । जिससे जीव यमराज के हाथ में नहीं जायेगा ।

धन्य साहब तुम कृपा निधाना । आदि अन्त तुमहिं परवाना ।।
देखा मूल डार सभ छाया । आदि अन्त तुम सभे बनाया ।।
तुम्ह ते जिमी तुम्हते असमाना । तुम्हते हद बेहद परवाना ।।
तुमते चाँद सुरुज अवतारा । तुमते जिव यह जगत पसारा ।।
धन साहब तुम सिरजनिहारा । करों अरज सुनों एक बारा ।।
जबहिं हंस गमन के जावै । कवनी सुरति शहर के धावै ।।
सुनहु सन्त मैं करो बखाना । मूल शब्द है अगम निशाना ।।
मूल अकह सत् है छापा । देखत काल तुरंतहिं काँपा ।।
छपलोक तीनि लोक से न्यारा । बूझे भेद सो हंस हमारा ।।
उत्तर दिशा एक पाँजी अहई । चले हंस सुरति करे तहँई ।।
धरे तेज अति होत उजियारा । जुगुति न खावहिं काल बेचारा ।।

शब्दार्थ- कृपा=प्रत्युपकार की अपेक्षा न रखते हुए पर दुःखनिवारण की इच्छा, दया । निधाना=रखना, खजाना । जिमी=पृथ्वी । हद=किनारा । जुगुति=युक्ति, उपाय । पांजी=जाने योग्य मार्ग । तहई=तहाँ । सिरजनहार=निर्माता, स्रष्टा । अरज=निवेदन, प्रार्थना, विनती । दीप=द्वीप । तुमते=तुमसे, तुम्हारे द्वारा ।

चौपाई (भावार्थ)- उपर्युक्त वाणी को सुनकर दरिया साहब बोले कि हे साहब ! आप धन्य हैं, आप कृपानिधान हैं । मैंने सभी मूल, डाल, पत्र, छाया को देख लिया । यह आदि अन्त तुम्हारा बनाया हुआ है । तुम्हारा ही बनाया हुआ यह धरती, आसमान, नदी, समुद्र सब तुम्हारी कृपा दृष्टि से बने हैं । यह चन्द्र सूर्य तथा जीव का विस्तार तुम्हीं ने किया है । हे सृष्टिकर्ता ! आप धन्य हैं । मैं आपसे एक प्रार्थना करता हूँ । उसे सुन लीजिए-जब यह (जीव) हंस छपलोक को प्रस्थान करे तो किस सुरति से वहाँ पहुँचेगा । सत्पुरुष समझाते हुए कहते हैं कि हे सन्त ! सुनों मैं उसका वर्णन कर रहा हूँ । यह जो 'मूल शब्द' है उसी पर ध्यान रखकर चलना होगा । तथा मूल अकह (नाम) तथा 'सत्' का छापा (चिन्ह) होगा जिसे देखकर यमराज तुरन्त डर जायेगा । वह जो छपलोक है । वह तीन लोक से अलग है । जो हमारा हंस होगा वह इस भेद को समझ जायेगा । इस तीन लोक के उत्तर दिशा में (पार करने योग्य) जाने योग्य एक सुगम रास्ता है । वहाँ से परमात्मा का ध्यान करते हुए हंस (जीव) चल देता है । उस समय उसके शरीर से अतितेजवान प्रकाश निकलने लगता है । जिसे देखकर यमराज का कोई उपाय नहीं लगता है ।

टिप्पणी- मूल (अकह) - जीव के मूल नाम जो पावै । काल फांस के दूरि बोहावै ।।

जम्बू द्वीप से आगे गयऊ। सिलमिल द्वीप देखत तब भयऊ ।।
आगे सरवर अगम गम्भीरा । गये हंस ताहि के तीरा ।।
साखी- गये हंस सरवर के तीर, निर्मल जल एक रंग ।
झलकत मोती श्वेत सभ, उठत लहरि तरंग ।। ४६ ।।
मानसरोवर मोती खानी । चूँगहिं हंस बोलहिं बहुबानी ।।
आगे शृंग है पायर द्वीपा । निरंजन चौकी रहे सनीपा ।।
चला हंस तहवाँ जो जाई । देखत रूप छबि बरनि न जाई ।।
कामिनि चीर शोभित सब अंगा । मानहु सूर्य किरण को रंगा ।।
करहिं कोलाहल बहुबिधि बानी । झलकहिं लाल जवाहिर खानी ।।

शब्दार्थ- सरवर=तालाब, सरोवर । चुगहिं=चुन-चुन कर ग्रहण करना । शृंग=चोटी। सनीपा=समीप । वरनि=वर्णन । चीर=वस्त्रखण्ड कम लम्बा कपड़ा । रंगा=वर्ण, दया, शोभा । लाल=माणिक । जवाहर=रत्न, मणि । कोलाहल=बहुत लोगों के एक साथ होने वाला शोर ।

चौपाई (भावार्थ)- इस प्रकार चलते हुए (हंस) जीव जम्बू द्वीप से आगे चला जाता है आगे जाने पर उसे सिलमिल द्वीप दिखाई देता है तथा आगे वहीं पर एक गम्भीर अथाह सरोवर को देखता है तब हंस (जीव) उस सरोवर के तट पर चला जाता है ।

साखी (भावार्थ)- इस निर्मल जल से युक्त सरोवर के तट पर हंस (जीव) पहुँचता है जहाँ पर उसमें श्वेत मोती दिखाई देता है तथा उसमें लहरों की तरंग उठती रहती है ।

चौपाई (भावार्थ)- सत्पुरुष उस जाने वाले मार्ग को दरिया साहब से बता रहे हैं कि हंस (जीव) इस मोतियों से युक्त उस मानसरोवर में मोती चुंगता है तथा अनेक प्रकार के प्रसन्नता युक्त वाणी को कहता है । वहाँ से हंस (जीव) आगे बढ़ता है जहाँ चोटी पर पायर द्वीप है उस पायर द्वीप के समीप में पहले ही (मार्ग पर) निरंजन चौकी है । हंस जाकर वहाँ पहुँचता है वह निरंजन साहब की परम छवि को देखता है । जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता है । पुनः वह वहीं पर स्थिर होकर उन कामिनियों को देखता है जिनके शरीर पर छोटे-छोटे वस्त्रखण्ड शोभायमान हो रहे हैं । मानों उनसे सूर्य के किरण के समान आभा निकल रही हो। वे आपस में मधुर वाणी के द्वारा ध्वनि उत्पन्न कर रही है तथा उनके शरीर माणिक, जवाहरात से सजे हुए हैं ।

टिप्पणी- छापा = चिन्ह अर्थात् सतगुरु द्वारा ।

नख सिख शोभा बहुत बनाई । निरखत नैन रूप छबि छाई ।।
देखि मगन भयो हंस सब शोभा । तहाँ न काम क्रोध मद लोभा ।।
चौकी वाला निकट बोलाई । मंगल रूप कामिनि सभ गाई ।।
छापा सनद देखहिं तेहिं अंगा । सतगुरु छपा असल निजु रंगा ।।
चौकी वाला बोले बानी । जाहु हंस जहवाँ निज खानी ।।
आगे सहज द्वीप जो देखा। झलकत पदुम अजर कै रेखा ।।
बैठे हंस अगर को छाया । सोंधा अगर डॉक सभ धाया ।।
अमृत चाखन तहाँ चखाया । अधिक रूप दिव्य ताहाँ आया ।।
चमके ज्योति होई उजियारा । अमृत चाखहिं हंस पियारा ।।
देखि कौतुक आगे चलि गयऊ । पुहुप द्वीप जहवाँ निर्मयऊ ।।
पुहुप द्वीप हंसन्हि के बासा । बहु बिधि हंसा करहिं बिलासा ।।
पुहुप बेवान छत्र सिर छाजै । बैठे हंस बहुत सुख राजै ।।

शब्दार्थ- छवि=शोभा, सुन्दरता । सोंधा=सुगंधित । अगर=सुगन्धित लकड़ी का रंग । चाखन=स्वाद । शोभित=शोभायमान । पदुम=कमल, प्रकाश । चमक=कान्ति, झलक । उजियारा=रोशनी, प्रकाश । कौतुक=कुतूहल, तमाशा । निर्मयऊ=निर्मित । राजै=प्राप्त करना, अनुकूल ।

चौपाई (भावार्थ)- उस पायर द्वीप में कामिनियाँ नख-शिख अर्थात् पूरे शरीर पर शृंगार की हैं, पूरा शरीर इससे शोभित है तथा नेत्रों के रूप की छवि अवर्णनीय है । यह सब उनकी सुन्दरता को देखकर हंस (जीव) प्रसन्न हो जाता है । परन्तु वहां पर किसी प्रकार का काम, क्रोध, लोभ मोह अहंकार, डर, नहीं है । इस प्रकार देखते हुए चौकी वाला (निरंजन) हंस (जीव) को अपने पास बुला लेता है । तब उस समय कामिनियाँ मंगल रुप स्तुति करती हैं । निरंजन साहब उसके अंग पर छापा सनद देखते हैं जो सतगुरु के असली छाप से चिन्हित है । इतना देखकर वे कहते हैं कि तुम (हंस) अपने निजी स्थान छपलोक में जाओ । इसके पश्चात हंस (जीव) आगे जाने पर सहज द्वीप को देखता है जहाँ अजर ज्योति का प्रकाश चारो ओर फैल रही है उस अगर की छाया में सभी हंस बैठे हुए हैं । वहाँ पर इस पहुँचने वाले हंस (जीव) को भी अमृत का स्वाद चखाते हैं । वहाँ अजर ज्योति की चमक से पूरा द्वीप प्रकाशित हो रहा है और प्यारे हंस (जीव) अमृत का पान कर रहे हैं । यह सब कुतूहल देखकर हंस आगे की ओर जाता है जहाँ पुहुप दीप बना हुआ है । पुहुप दीप में हंसों का निवास है तथा वे अनेक प्रकार से वहां आनन्द करते हैं । पुहुप की छत्र छाया में सभी हंस बैठकर बहुत ही सुख प्राप्त कर रहे हैं ।

टिप्पणी- छापा-मुद्रित ।

साखी- देखहिं हंसा प्रेम से, लेई बैठावहिं पास ।
पल विलम्ब इह कीजिये, चूँगहु बास सुबास ।। ४७ ।।
अमृत पोषण पियहिं अघाई । षोड़स भानु दुति छबि छाई ।।
आगे हंस गमन जो कीन्हा । दाया द्वीप तहवाँ पगु दीन्हा ।।
कोटि कला तहाँ होय उजियारा । बैठे हंस सभे सुख सारा ।।
पलंग बिछाए सोंधन के बासा । अविगति चँवर डोले चहुँ पासा ।।
पल पल बन्दहिं ताकर पाऊँ । जिन्हिं संसारहिं शब्द सुनाऊँ ।।
बैठे हंस हंसन्हि के पासा । अमृत पोषन पाऊ सुबासा ।।

शब्दार्थ- विलम्ब=देर । अघाना=तृप्त होना । पोषण=तत्व, बर्द्धन । भानु=सूर्य, किरण । षोडस् = सोलह । दुति=शरीर की सहज कांति, छवि । सारा=सम्पूर्ण । कोटि=करोड़ों सोधन=सुगन्ध । बन्दहिं=नमस्कार । पाऊँ=प्राप्त किया ।

साखी- (भावार्थ)- सत्पुरुष दरिया साहब को जीव के छपलोक जाने का मार्ग बताते हुए कहते हैं कि हंस (जीव) पुहुप द्वीप में होकर जाने वाले इस हंस को देखकर वहाँ के हंस रोककर पास बैठा लेते हैं और कहते हैं थोड़ा देर रूककर यहाँ का बास सुबास का आनन्द लो ।

चौपाई (भावार्थ)- इस प्रकार हंस अमृत तत्व का पान करके तृप्त हो जाता है । जिससे इसके शरीर की सहज कांति मानोसूर्य की सोलहों आभा से युक्त छवि के समान जगमग करने लगती है । वहाँ से हंस उठकर आगे प्रस्थान करता है । आगे इसे दया द्वीप दिखाई पड़ता है वहाँ पहुँचता है । जहाँ पर कोटि कलाओं का प्रकाश हो रहा है और वहाँ पर सभी हंस सुखपूर्वक बैठे हुए हैं । उनके पलंग पर चारो ओर पुष्प बिछा हुआ है । जिसकी सुन्दर सुगन्ध निकल रही है तथा कुदरती अविगति चँवर अर्थात् शीतल पवन सभी के पास चल रही है । वहाँ पर जो भी इस तीन लोक का समाचार सुनाता है उसको सभी हंस पल-पल बन्दगी करके हंस को धन्यवाद देते हैं । तत्पश्चात् हंस उन सभी हंस के पास बैठ जाता है तथा अमृत पोषण का पान करते हुए वहाँ का सुबास प्राप्त करता है ।

टिप्पणी- सोलह कला= अमृता, मानदा, पूषा, आदि ।

साखी- अविगति रूप अपार है, को बरने तेहिं ठाँव ।
सत्य शब्द पहिचानहीं, सोई बसहिं निजु गाँव ।। ४८ ।।
अमरापुर तख्त के ठाऊँ । छत्र फिरे कोटिन्ह सिर नाऊँ ।।
गये हंस साहब के पासा । करि सलाम तहाँ लेहिं निवासा ।।
तख्त श्वेत श्वेत सभ छाया । चहुँ ओर बास सुवास सब धाया ।।
अजर अमर तहवाँ होय जाई । आवागमन के संसे मिटाई ।।
साँच जाने सो पहुँचे पासा । मेटि जाय जग यम को त्रासा ।।
साखी-ऐसन सुख शहर में, जो कोइ बूझे आए ।
सतनाम के जानवे, स्थिर बैठे जाए ।। ४९ ।।

शब्दार्थ- वरने=वर्णन करना । निजु=मुख्य रूप से, अपने । अविगति=मौजूद जो कभी बिता न हो । सलाम=प्रणाम, दण्डवत । संसे=संशय । जानवे=जानेगा । आवागमन=जन्म-मरण ।

साखी (भावार्थ)- उस दया द्वीप से हंस आगे बढ़ता है जहाँ अमरलोक का मुख्य स्थान है । उस लोक की शोभा अविगति, अपार है, उसका वर्णन कोई नहीं कर सकता । जो जीव 'सत्' शब्द का पहचान करेगा वह उस लोक में सदैव के लिए निवास करेगा ।

चौपाई (भावार्थ)- उस अमरपुर तख्त पर सत्पुरुष विद्यमान रहते हैं तथा उनकी शरण में उनको करोड़ों लोग सिर झुकाकर नमस्कार करते हैं । हंस चलकर उस सत्पुरुष के पास पहुँचता है तथा दण्डवत प्रणाम करके वहाँ स्थिर हो जाता है । वहां पर तख्त (सिंहासन) श्वेत है तथा सभी वस्तुएँ श्वेत, सब श्वेत छाया हुआ है एवं चारों ओर बास-सुबास निकल रही है । वहाँ जाकर हंस सत्पुरुष की कृपा दृष्टि से अजर-अमर हो जाता है तथा भवसागर में आवागमन का संशय भी समाप्त हो जाता है । जो इस उपदेश को सत्य जानकर ग्रहण करेगा वह अमरलोक को पहुँच जायेगा । इस मृत्युलोक के यमराज का डर-भय समाप्त हो जायेगा ।

साखी (भावार्थ)- यह सुनकर दरिया साहब प्राणियों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि इस प्रकार का सुख उस लोक में है । जो कोई भी बूझ विचारकर सत्नाम को जपेगा एवं उनका दर्शन कर लेगा वह अचल अमर होकर उस अमरलोक में निवास करेगा ।

निर्मल ज्ञान बुझहु चित्त लाई । तेजहु दुर्मति दूरि सभ जाई ।।
दुर्मति ते ब्रह्म भयो छीना । ज्यों सेवार जल करे मलीना ।।
निर्मल जल ज्यों रहे सुधारा । ऐसहिं ज्ञान भजहु निजु सारा ।।
पहिले ज्ञान तब पीछे मुक्ति । पाछे योग है पहिले युक्ति ।।
पहिले कनक तब गहना होई । पेन्हि सिंगार कामिनी रहु सोई ।।
पहिले सेज तब पीछे सयना । उठी प्रातः मुख मीजै नयना ।।
पहिले भूख तब पीछे खावै । पहिले राग तब पीछै गावै ।।
पहिले पूहुँप तब भँवरा आवै । पहिले फूल बास तब धावै ।।
पहिले जल पुहुमी में आवै । होए अंकुर बीज जन्मावै ।।
पहिले अकह तब कह में आवै । होए ज्ञान तब जग समुझावै ।।
पहिले कृमि तब कोया होई । अपने आपु बनावै सोई ।।
तैसे ब्रह्म काया के कीन्हा । महल बनाए रहे रंग भीन्हा ।।

शब्दार्थ– सयना=शयन । मीजै=मलना । नयना=नेत्र । कामिनी=सुन्दरि, कामवती नारी । खावै=भोजन करना । बास=गन्ध । पुहुमी=धरती । जग=जक्त । कृमि=रेशम का कीड़ा, लाख । कोया=रेशम के कीड़े का घर या घोंसला । भीना=भिन्न, भीतर रहना । सेवार=जल में होने वाली एक प्रकार की काई घास । गहना=आभूषण । सिंगार=शृंगार ।

चौपाई– (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि दुर्मति को छोड़कर इस निर्मल ज्ञान को चित्त लगाकर समझो । दुर्मति से ब्रह्म क्षीण होता है जैसे सेवार जल को मलीन कर देता है । जिस प्रकार से स्वच्छ निर्मल जल रहता है ऐसे ही अपने तत्त्व ज्ञान को (भजो) ग्रहण करो । सर्वप्रथम मुक्ति के लिए ज्ञान की जरूरत है तथा योग के लिए पहले युक्ति की जरूरत होती है । पहले सोना होने पर आभूषण बनता है तथा शृंगार करके कामिनी (कामवती स्त्री) होती है । पहले विस्तर लगाकर तब शयन किया जाता है तथा प्रातः जागने पर नेत्र को रगड़ते हैं । पहले भूख लगती है तब भोजन किया जाता है तथा पहले राग होने पर तब गायन किया जाता है । जब पहले पुष्प खिलता है तब उस पर भौंरा मँडराता है तथा पुष्प खिलने पर सुगन्ध चारो ओर फैलती है । पहले वर्षा की बूँद पृथ्वी पर आता है । उसके फलस्वरूप मिट्टी में नमी से बीज अंकुरित होता है पहले अकह (हृदय में) विचार उत्पन्न होने पर ही जक्त को उपदेश देना चाहिए । पहले कीड़े, मकड़े होने पर वे बाद में रेशमी कीड़ा रेशमी कीड़ों का घर अथवा मकड़ी जाल बनाती है, जिसे वह अपने आप तैयार करते हैं । उसी प्रकार यह जीवात्मा (ब्रह्म) इस काया का निर्माण करके सुन्दर शरीर बनाकर उसके अन्दर स्थित है ।

टिप्पणी– राग छः प्रकार के होते हैं – भैरव, मलार, श्री, हिंडोल, मालकोस और दीपक । रागिनी– छत्तीस प्रकार की होती है । स्वर=संगीतशास्त्र में सात स्वर होते हैं ।

साखी– आपन ब्रह्म विचारि के, भजहु सो निर्मल ज्ञान ।
पहिले अपने दास होए, पीछे सन्त सुजान ।। ५० ।।
पहिले भक्ति प्रेम की बानी । करे सुरति मिले तेहिं ज्ञानी ।।
पहिले साँच तब होय उजियारा । साँच शब्द बरे जग सारा ।।
साँचो चाँद सूर्य अवतारा । रैन दिवस होय उँजियारा ।।
साँच समुद्र सदा भरिपूरा । ऐसो साँच सन्त होय शूरा ।।
कहें दरिया ऐसो साँच सफाई । कौन मलिन करे तेहिं भाई ।।
साँचो दिल साँचो सो लागा । कहें दरिया सोई सन्त सुभागा ।।

शब्दार्थ– सुजान=चतुर, ज्ञानी, बरे–जले, प्रकाशित । रैन=रात । दिवस=दिन । सूरा=शूर । मलीन=मंद, मटमैला, विकारयुक्त । सुभागा=भाग्यवान ।

चौपाई– (भावार्थ)– दरिया साहब कहते हैं कि घट के भीतर रहने वाले ब्रह्म के द्वारा विचार करके निर्मल ज्ञान से पारब्रह्म परमात्मा का भजन करो । पहले तुम अपने को सतगुरु का दास बनाओ इसके बाद ज्ञानी सन्त बन जाओगे ।

चौपाई– (भावार्थ)– भक्ति करने के लिए सर्वप्रथम प्रेम से वाणी बोलना चाहिए तथा ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमेंशा भक्ति में ध्यान रहना चाहिए । ऐसा करने से उसे ज्ञानी सतगुरु की प्राप्ति हो जाती है पहले अपने आप को सत्य पर अटल रखना चाहिए । इस तरह से पूरे संसार में उसकी ख्याति फैल जायेगी । क्योंकि (साँच) सत्य से ही यह जक्त प्रकाशित हो रहा है । जिस प्रकार सूर्य और चन्द्र अपने सत्य पर अटल रहकर निश्चित समय पर उदय और अस्त होता है । तथा समुद्र अपनी सच्चाई की अटलता के कारण ही सदा भरा रहता है । ऐसे ही (साँच) सत्य पर अटल शूरवीर सन्त होते हैं । दरिया साहब कहते हैं कि ऐसे ही ज्ञान द्वारा जीव का कलि कर्मपाप सब धुल जाता है । फिर उसे कौन मलीन विकारयुक्त कर सकता है । दरिया साहब कहते हैं कि जिसका दिल सच्चा होता है वही सत्य से प्रेम करता है वह भाग्यवान सन्त होता है ।

टिप्पणी–सत्संगति– सज्जनों की संगति करना सत्संगति कहलाता है ।

शृंगार– शृंगार सोलह प्रकार का होता है–उबटन लगाना, स्नान कराना, वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, अंजन लगाना, सिंदूर भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक बनाना, ठोड़ी पर तिलक बनाना, मेंहदी रचना, सुगन्धित द्रव्यों का प्रयोग करना, अलंकार धारण करना, पुष्पहार पहनना, पान खाना, ओठ रंगना और मिस्सी लगाना ।

साँच सुरति कुमति के मारै। रहे साँच दुर्मति दूरि डारै ।।
होय सुबुद्धि कुबुद्धि कै नासा। काल कुबुद्धि न आवै पासा ।।
गूँगा होय मीठा सो पावै। आपु चखै फिर और चखावै ।।
साखी- पचि मुआ रोगी हुआ, बिनु बेरी हुआ बन्द ।
करु सेवा सतगुरु की, काटि कर्म निःकन्द ।। ५१ ।।
करु सेवा सत्संगति शरना। मेटे जगत में जरा और मरना ।।

शब्दार्थ- नासा=नष्ट। गूँगा=जो बिल्कुल शब्द उच्चारण नहीं कर पाते। निकन्द=नाश, संहार। पचि=परिश्रम करके, गढ़-गढ़ करके। शरना=शरण में। जरा=बुढ़ापा।

चौपाई- (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि जो सदैव सत्य का अनुसरण करता है उसकी कुमति दूर हो जाती है इसलिए मानव को दुर्मति दूर करके सदैव सत्य का व्यवहार करना चाहिए। जब हृदय में सुबुद्धि उत्पन्न हो जायेगी तब कुबुद्धि कानाश हो जायेगा तथा विनाशकारी बुद्धि तथा काल समीप नहीं आयेगा। जिस प्रकार से गूंगा को मीठा मिल जाने पर पहले अपने स्वाद लेता है और फिर दूसरे को स्वाद चखाता है। ऊसी प्रकार पहले स्वयं परमात्मा की अनुभूति होने पर दूसरे को भी सन्त लोग अनुभूति कराते हैं।

साखी- (भावार्थ)- सतगुरु दरिया साहब कहते हैं कि यहाँ पर वाह्याडम्बर की बातें बना-बना कर अपने को पाखण्ड कर्म में व्यर्थ परिश्रम करते हुए तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति में अनवरत जीवन को बीताते हुए बृद्ध, रोगी, होकर मृत्यु को प्राप्त हो गये तथा विना बेड़ी के ही सांसारिक बन्धन में पड़ गये। इसलिये हे मानव ! सतगुरु की सेवा करके अपने कर्म संस्कार को जो जीव को बन्धन में डालने वाले हैं उन्हें काटकर नष्ट कर दो।

चौपाई- (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि सत्संगति के शरण में रहकर सेवा करने से जक्त में बुढ़ापा और मृत्यु का भय मिट जाता है।

टिप्पणी-सत्संगति- गंगा पापं शशि तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा ।
पापं तापं च दैन्यं च हन्ति साधु संगमः ।।

ज्यों मिलै सत्संग सुभागा। होए बिवेक भक्ति बैरागा ।।
नदी मिले सागर में जाई । खारो जल संगति सो पाई ।।
पारस मूल शब्द सो पावै । चकमक चित्त चुभुकि लव लावै ।।
साखी- मन पवन को साधिये, साधो शब्दहिं सार ।
मूल अकह में गमि करो, मोती घना पसार ।। ५२ ।।

शब्दार्थ- वैरागा=वैराग्य । सागर=समुद्र । संगति=सम्पर्क, योग, मिलन । चकमक=एक तरह का पत्थर जिस पर चोट से अग्नि निकलती है। चुभुकि=गोता, डुबकी।

चौपाई- (भावार्थ)- दरिया साहब कहते हैं कि अगर सत्संगति मिल जाये तो उसे अपना भाग्य समझना चाहिए उससे हृदय में भक्ति विवेक, वैराग्य उत्पन्न होता है।। जिस प्रकार से नदी सागर में मिलकर नदी का जल समुद्र के क्षार जल से मिलकर क्षारता का गुण हो जाता है। उसी प्रकार से जो परमात्मा का पारस स्वरूप शब्द (मंत्र) प्राप्त कर लेता है तो वह उस चकमक पत्थर की भाँति उस परमात्मा के नाम को चित्त में धारण करने पर उस परमज्योति की शक्ति को प्राप्त करता है।

साखी- (भावार्थ)- दरिया कहते हैं कि हे साधुजन ! इस मन पवन को (शब्द) तत्व पर लगाइये तथा मूल को अपने अन्तः करण में उसे ग्रहण करिए तथा उस नाम का स्मरण करिए। इससे मोती स्वरूप परमात्मा के नाम के गुण हृदय में उत्पन्न होने लगेंगे तथा परमात्मा के दर्शन हो जायेंगे। इस संसार से जन्म-मृत्यु का बन्धन सदैव के लिए दूर हो जायेगा।

टिप्पणी-शब्द- ऋचाओं में रचे गये छन्द वाक्य को मन्त्र कहते हैं। सतगुरु ने सहज पदावली हिन्दी में रचकर 'शब्द' (मन्त्र) संज्ञा दिया इनके शब्दों का संग्रह 'बीजक' नामक ग्रन्थ में है।

भूमिका

सद्गुरु दरिया साहब

सद्गुरु दरिया साहब (बिहार वाले), जन्म सम्वत् - १६९१, मृत्यु सवंत् - १८३७

जीवन परिचय- दरिया साहब का जन्म बिहार प्रान्त के धरकन्धा (ढरकना) नामक ग्राम में सं० १६९१ (सन् १६३४) में हुआ था। इनके पिता का नाम पृथुदेव सिंह (पूरन शाह) था, जो उज्जैनीवंशी क्षत्रिय थे। ये पाँच भाई थे- दरिया साहब, बस्ती साहब, फक्कर साहब, उजियार साहब, दल साहब तथा बहन बुद्धिमती थी। इनके चचेरे भाई तेगबहादुर सिंह थे। इनका विवाह केवल ९ वर्ष की अवस्था में शाहमती के साथ हुआ था। १५वें वर्ष में इन्हें वैराग्य हुआ तथा २०वें वर्ष में इनके हृदय में ज्ञान का पूर्ण विकास हुआ। ३०वें वर्ष में इन्होंने तख्त पर बैठक उपदेश देना आरम्भ किया। इनके गुरु स्वयं 'सत्' साहब (सत्पुरुष) थे। रायमती इनकी प्रमुख शिष्या थी तथा उसके पुत्र टेकादास भी इनके प्रिय शिष्य थे। इस प्रकार ज्ञान का सन्देश देते हुए सन् १७८० (सं० १८३७) में धरकंधा ग्राम में शरीर छोड़कर सतलोक को प्रस्थान किये।

रचनाएं— दरिया साहब की उन्नीस रचनाएं प्रमाणित हैं—

दरियासागर, अमरसार, भक्तिहेतु, ज्ञानरतन, प्रेममूला, अग्रज्ञान, गणेशगोष्ठी, ब्रह्मविवेक, निर्भयज्ञान, ज्ञानमूल, विवेकसागर, गर्भचेतावन, ज्ञान दीपक, कालचरित्र, दरियानामा, बीजक, सहस्त्रानी, यज्ञसमाधि (?), ज्ञानस्वरोदय।

काव्यगत विशेषताएं-वर्ण्य विषय— दरिया साहब का वर्ण्य विषय प्रायः समाज ही है। ज्ञानोपदेश के रूप में दरिया साहब की वाणी में सामान्यतः प्रेमसाधना, संसार की अनित्यता, माया की प्रबलता, हृदय की शुद्धि की आवश्यकता, धर्म के बाह्याचारों का विरोध, सम्प्रदायिक एकता का प्रतिपादन, आदि की चर्चा की गयी है। प्रायः सभी ग्रन्थों का वर्ण्य विषय 'ज्ञानोपदेश' ही है। विस्तार में उनके वर्ण्य विषय ये हैं- योगाभ्यास, भक्त की दिनचर्या, सत्यवचन, विनय और प्रार्थना, आरती उतारने की रीति, नाम महिमा, सन्तों का वर्णन, सत्यरूप निरूपण, माया विषय सिद्धान्त, गुरु महिमा, सत्संगति आदि।

इनकी रचनाओं में जितना प्रयत्न रहस्य परिचय की ओर किया है। उतनी भाषा की सजावट के लिए नहीं। अतः इनकी रचनाओं में ज्ञान अनुभूति और कल्पना तीनों का सम्मिश्रण है।

भाषा—दरिया साहब की भाषा विविध रुपात्मक है। जिस आलोचक के पल्ले जो पाठ पड़ गया उसी को लेकर उसने दरिया साहब की भाषा का मूल्यांकन कर डाला और उसी के आधार पर उनकी भाषा के रूप का प्रतिपादन कर डाला।

भाषा सम्बन्धी विशेषताएं— दरिया साहब की भाषा में निम्नलिखित सामान्य विशेषताएं पायी जाती हैं-

१-दरिया साहब ने लोक भाषा की सन्देशवाहिका शक्ति को पहचान कर उसे अपनाया। उसमें खड़ीबोली, ब्रजभाषा, राजस्थानी, पंजाबी, अवधी, तथा उर्दू, फारसी, अरबी, आदि बोलियों का सुखद संयोग है। सामान्य काव्य भाषा से पृथक् सन्तों की इस भाषा को सधुक्कड़ी भाषा कहा गया है।

२- इनकी उक्तियों में विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है।

३- दरिया साहब रीति काल के समय में आते हैं। अतः भाषा में शुद्धता देखने को मिलती है। इनकी भाषा में संगीतात्मकता का सफल समावेश है। इनकी संगीतात्मक भाषा में अभिव्यंजना की लगभग सभी पद्धतियां पायी जाती हैं।

४- भाषा पर दरिया साहब का पूर्ण जबरदस्त अधिकार है इनकी भाषा सर्वत्र उनके भावों को वहन करने में सर्वथा सक्षम एवं पूर्ण समर्थ है। गम्भीर विषय का विवेचन सरल भाषा में किया है। शब्दों को मूर्त रूप देने में दरिया साहब सिद्धहस्त हैं।

५-दरिया साहब की भाषा में व्यंजना शक्ति का पूर्ण प्रस्फुटन है। साखियों में बिम्बों को निर्मित करने वाले अलंकारों का आकर्षण प्रयोग दिखाई देता है। रूपक तथा रूपकातिशयोक्ति अलंकारों के मिश्रण से दरिया साहब की अभिव्यंजना देखते ही बनती है।

शैली- भाषा की भाँति शैली भी विविध रूपात्मक है। उनका समस्त काव्य मुक्तक है और गेय शैली में है। भाव के अनुसार उनकी शैली बदलती जाती है। उनकी शैली में मुख्य रूप से खण्डनात्मक शैली, उपदेशात्मक शैली तथा अनुभूतिव्यंजक शैली का प्रयोग हुआ है।

शब्द-शक्तियों का प्रयोग- इनकी रचनाओं में लक्षणा एवं व्यंजना शब्द शक्तियों का श्रेष्ठ प्रयोग पाया जाता है। सम्पूर्ण काव्य अभिधायुक्त है। व्यंजना का प्रयोग उल्टी वाणी में अधिक है।

अलंकार विधान- दरिया साहब के काव्य में रूपक, अन्योक्ति, समासोक्ति, रूपकातिशयोक्ति, उपमा, विभावना आदि अलंकारों का प्रयोग है। ये अलंकार उनकी रचना में स्वाभाविक रूप से प्रस्फुटित हुए हैं तथा बिम्ब विधायक हैं।

अनुप्रास और उत्प्रेक्षा की छटा देखने योग्य है —

झूठो मीठो लागई, साँचो तीतो तात।
थोरे पवन में डोलत हैं, ज्यों पीपर को पात।।

छन्द— दरिया साहब ने अपने समय में प्रचलित अनेक छन्दों का प्रयोग प्रायः सभी पदों में किया है। इन्होंने अधिकतर सधुक्कड़ी छन्दों का प्रयोग किया है। इनमें कोई छन्द पिंगल के नियमों से पूर्ण बँधा हुआ नहीं है इनके अपने नियम हैं और प्रायः गति और लय पर ही विशेष ध्यान दिया गया है। इनके छन्दों में साखी (दोहे), चौपाई, सोरठा, चौंतीसा, हिंडोला, वसन्त, कहरा, आदि अनेक छन्द का प्रयोग हुआ है। इस भक्ति हेतु ग्रन्थ में साखी, (दोहा) और चौपाई दो छन्द प्रयुक्त हैं।

छन्द-साखी- पहले और तीसरे में तेरह तथा दूसरे और चौथे में ग्यारह मात्राएं (१३-११ मात्राएं)

ऽ। ऽ। ।। ऽ। ऽ ।ऽ ।।। ।।ऽ।

ज्ञान भक्ति निजु सार है, सुनो श्रवण चितलाय।

छन्द-चौपाई- (प्रत्येक चरण में १६-१६ मात्राएं)—

ऽ। ऽ।ऽ ऽ। । ऽऽ

भक्ति हेतु है ज्ञान के मूला ।

गुण स्थिति— दरिया साहब की रचना में ओजपूर्ण तथा प्रसादगुण की प्रधानता है। माधुर्य गुण का समावेश भी खूब हुआ है। वक्रोक्तियों में दरिया साहब का उक्ति वैचित्र्य देखते ही बनता है।

इस प्रकार दरिया साहब वाणी के डिक्टेटर हैं। उनकी वाणी आध्यात्मिक ज्ञान की सफल वाहिका है। इनके प्रतीक और उलटवासियाँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।

●

दरिया साहब का बाह्याडम्बर से विरोध

विषय प्रवेश— दरिया साहब ने तत्कालीन हिन्दी साहित्य और समाज को एक नवीन चेतना और नूतन जीवन दर्शन प्रदान किया। उनका संदेश पवित्र जीवन एवं बाह्याडम्बर से रहित सहज भक्ति का सन्देश है। वे किसी वाह्याडम्बर, कर्मकाण्ड और पूजा-पाठ की अपेक्षा पवित्र, नैतिक और सादा जीवन को अधिक महत्त्व देते हैं। सत्य, अहिंसा, दया, संयम से युक्त धर्म के सामान्य स्वरूप पर बल दिया है।

२- राम-रहीम एकता— दरिया साहब ने राम-रहीम की एकता बताकर सभी मानव को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयत्न किया है। उन्होंने दोनों से कहा-

ये कहे राम वे कहे खुदा, झगरा करि-करि मरते।
कहें दरिया वोय हिन्दू तुर्क नाहिं, बाद किये सब गलते ।।
—बीजक

३-हिन्दू-मुसलमान की एकता- दरिया साहब ने हिन्दू मुसलमान की भेद-भाव की बहुत चौड़ी खाईं को बड़ी कुशलता से पाटा। उन्होंने दोनों से प्रश्न किया—

जब तुम होते मातु गर्भ में, राम जनेऊ देते।
जो फुरमान खुदाई होते, गर्भे सुन्नत करते ।। —बीजक
एक योनि सभे जन्माया। तुम ना कहो कवन दे आया ।। -भक्ति हेतु

४-मूर्ति पूजा का विरोध— मूर्तिपूजा का दरिया साहब ने डटकर विरोध किया। उन्होंने देखा मूर्तियां आपस में लड़ने का कारण बनी हुयी हैं। अतः उन्होंने इसकी निस्सारता बताते हुए कहा—

ये पाहन पूजि जपे कर माला, मुक्ति महातम खोया। —बीजक

यही नहीं मुसलमानों को भी फटकारते हुए कहा—

कॉन मूँदि वोय बांग सुनाते, इन्ह भी शोर लगाया ।। —बीजक

५-तीर्थ, रोजा आदि का विरोध- इसी प्रकार दरिया साहब ने दिखावे के लिए किया गया तीर्थ, ब्रत, रोजा, नमाज की भी निस्सारता बतायी। क्योंकि ये केवल दिखावे के लिए ही किये जाते हैं।

आत्मा के उद्धार से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। दरिया साहब ने हिन्दू-मुसलमान दोनों की ही बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया—

सन्तों राह दुनों हम देखा।
कोई तसवीह कोई माला डाले, यह झगरा बेलेखा ।।
कोई विस्मिला विष्णु कहते, कोई कहे राम रहिमाना।
पंडित शास्त्र पोथी पढ़ते, मोलना किताब कोराना ।।
ये तीसो रोजा तीस दिन गनते, इन्ह शिव व्रतहिं ठाना।
कोई निमाज पूजा करते, जो जाके मनमाना ।।
वोय फागुन गत भये फगुआ करते ये रोजा गुजारे ईदी।
वह दवरि देवल के पूजे, यह सिजदा मस्जिदी ।।
× × × × × ×
यह कुरान वह गीता पढ़ते जबह झटक कर खाना।
असल अल्लाह दीन के साहब, खून नहीं फरमाना ।।
एक बाट दोय झगरा लाया आपस में अरुझाना।
कहें दरिया नहिं हिन्दू तुर्क हैं, जिन्हि साहब पहचाना ।।
—बीजक

इसी प्रकार दरिया साहब ने माला फेरना, सिर मुड़ाना, जटा बढ़ाना, कपड़े रंगने, भेष बनाने, इत्यादि को निस्सार बताया है-

भर्म से तिलक भ्रम से माला है, भ्रम से गावत है मद माता ।।
का भयो माथ मुड़ाय, घोटाय सत्गुरु पद नहिं पाया है ।।
—बीजक

अरु त्यागत लोन अलोन जो पावत, कै तप तेजत सो गृह नारी।
अरु काहे के डंड कवंडल लेत, काहे के योगी भये ब्रह्मचारी ।।
अरु का गले कंठी जो पंथ के जोहतक्या मणिमुद्रा कान के फारी।
दरिया जो कहे जब ज्ञान नहीं, अपने पै आपसो सो आप बिसारी ।।
—बीजक

६-गंगा-स्नान का विरोध- दरिया साहब कहते हैं कि तीर्थों में स्नान करने से आत्मा को मुक्ति नहीं मिल सकती यथा—

हहा हरिहर करते गया हरिद्वार, जहाँ है पत्थल पानी। —बीजक

७-निन्दा का खण्डन-दरिया साहब ने परनिन्दा को समाप्त किया। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे का दोषान्वेषण करता है और स्वयं अपने दोषों से अपरिचित है। इसी कारण वह उन्नति नहीं कर पाता। दरिया साहब ने इससे बचने के लिए कहा—

निन्दहिं कूल कुटुम्ब, निन्दहिं सब संसार।
शब्द हमारा जनि छोड़ो, उतरहु भवजल पार ।। —ज्ञानमूल
जढ़ता जक्त युक्ति से रहना। आपन सत् आपु में गहना ।।—भक्तिहेतु

८- हिंसा का विरोध- दरिया साहब ने हिंसा का विरोध किया। जीव हिंसा महापाप है तथा उसका फल भोगना पड़ता है। उन्होंने कहा—

कहें दरिया नहिं बाँचिहो, बिनु दिये कर्म दण्ड ।
कहाँ भागि जीव जाइहो, सात द्वीप नौ खण्ड ।। -भक्तिहेतु
राम कृष्ण ले कवन कहावै । करे खून वोयलसो पावै ।। -भक्तिहेतु
तुलसी जीव न मारिए, लेत दाव परिनाम ।
तीरथ कीहे न बाँचिहो, छोड़ बैर भजु राम ।। -गोस्वामी तुलसीदास
अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम् ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ।।

समाजसुधारक के रूप में

दरिया साहब न हिन्दू थे न मुसलमान । वे सच्चे अर्थों में एक संत थे जो सभी जीव का कल्याण चाहने वाले थे । वे सभी को समान समझते थे । उन्होंने कहा कि—

माटी एक बर्तन बहुतेरा । अलख ब्रह्म तेहि भीतर डेरा ।।

१- दया व सत्संगति की प्रमुखता—दरिया साहब कहते हैं कि जीव को मुक्ति प्राप्त करने के लिए दया व सत्संगति आवश्यक है । यथा—

बिनु दिल दया धर्म नहिं लोका । बिनु सत्संग मिटै नाहिं शोका ।।
करु सेवा सत्संगति शरना । मिटे जगत् में जरा अव मरना ।।

इसी प्रकार दरिया साहब ने जाँति-पाँति, ऊँच-नीच, भेद-भाव आदि का विरोध किया ।

२- यथार्थ का प्रतिपादन— दरिया साहब ने पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव को श्रेष्ठ कहकर पंडितों का अपमान नहीं किया अपितु यह स्थापना की कि पुस्तकीय विद्या ही सब कुछ नहीं है, सब कुछ है, 'सर्वश्रेष्ठ है अनुभव' । दरिया साहब यथार्थ का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं—

कही सुनी सब कहत है सुनि पायी जो कान ।
दरिया देखी जो कहै, सो बदिए परमान ।। -सहस्रानी

दरिया साहब के दार्शनिक विचार

भारतीय दर्शन में जीव, ब्रह्म, माया, जगत् , मुक्ति आदि पर विचार किया जाता है । दरिया साहब के दार्शनिक विचार अथवा दार्शनिक सिद्धान्त प्रमुख रूप से निम्नलिखित हैं-

१-ब्रह्म- दरिया साहब कहते हैं कि वह ब्रह्म निर्गुण-सगुण दोनों रूपों से परे हैं । वह संसार में अवतार ग्रहण कर लीलाओं को नहीं करता । वह अजन्मा, त्रिगुण रहित तथा स्वरूप वाला एवं दिव्य दृष्टि में प्राप्त होने वाला है । वह अजर, अडोल, अमर, अविनाशी, अविगति, अक्षय, अशोक, अनुपम, अखण्ड, बन्दीछोर, अचिन्त, उजागर, दीनदयाल, दर्दवन्त, अभय, अमान, कृपाल, अमोल, पुरातनपुरुष बेअन्त, बेऐब, बेसिफ्ति, आदिपुरुष, 'सत्' ब्रह्म हैं ।

दरिया साहब कहते हैं कि सगुण तो विनष्ट हो जाता है और निर्गुण जो बिना गुण वाला है उसका तो कोई अस्तित्व ही नहीं है । अतः ब्रह्म त्रिगुण रहित सत्ता वाला है । जैसा कि कहा गया है —

निर्गुण कहे सगुण कहे निर्गुण सगुण निरास ।
सगुण विनसि गुण रहित है, कहाँ पुरुष को बास ।।

उत्पत्ति प्रलय पेड़ यह, तामें कर्ता कीन्ह ।
अक्षय वृक्ष वोय पुरुष हैं, सो त्रिगुण ते भीन ।।
—सहस्रानी

वोय साहब हैं अजर अडोला । हाथ पाव बचन मुख बोला ।।
उर भुजा दशन है आँखी । सत्य वचन लिखा यह साखी ।।
—अमरसार

घट में कर्ता लोग कहतु हैं, पाँचो तत्व बिलाय ।
सगुण बिनसि निर्गुन रहित है, गुण बिनु कहाँ समाय ।।
—बीजक

२-जीव— जीव और ब्रह्म के सम्बन्ध लेकर भारतीय दर्शन में तीन बाद प्रचलित हैं —

(i) अद्वैतवाद, (ii) द्वैतवाद (iii) विशिष्टा द्वैतवाद

(i) अद्वैतवाद - इसमें आत्मा और परमात्मा ब्रह्म एक है । जीव सागर के जल की भांति 'ब्रह्म' में समाहित हो जाता है । 'ब्रह्म' सारे जक्त में व्याप्त है तथा जीव केवल शरीर में सिमित रहता है और अन्त में वह 'ब्रह्म' में विलिन हो जाता है ।

(ii) द्वैतवाद— इसमें जीव और ब्रह्म का अस्तित्व अलग-अलग है । जीव सदैव जीव ही रहेगा उसकी कभी भी अपना अस्तित्व समाप्त नहीं होगा तथा संसार में कर्मानुसार भुक्तभोगी होगा ।

(iii) विशिष्टा द्वैतवाद— इसमें जीव, माया, मन, सभी का अस्तित्व है । इसे ब्रह्म ने बनाया । इसमें जीव अपने को कर्मों के द्वारा 'ब्रह्म' की समीप्यता प्राप्त कर सकता है परन्तु वह 'ब्रह्म' में विलीन नहीं होगा ।

दरिया साहब का विचार- दरिया साहब कहते हैं कि ब्रह्म (सत्पुरुष) मन, माया, जीव, व समस्त सृष्टि का निर्माण किया है । उनकी कृति अजर, अमर है । जीवात्मा सुकृत अंश के रूप में तथा मन निरंजन अंश के रूप में है । जीव अपने कर्मों का फल भोगता है तथा वह भक्ति साधना के द्वारा ब्रह्म का साक्षात्कार कर वह ब्रह्म लोक (अमरलोक) को प्राप्त कर अचल, अमर हो जाता है परन्तु वह कभी ब्रह्म नहीं हो सकता और न ही 'ब्रह्म' में विलीन होगा ।

सभी जीवात्मा समान हैं तथा सभी घट में उसी ब्रह्म का अंश विराजमान है -

जीव सकल जग जानिए, जो जन्में जग आय ।
कहीं हीरा कहीं सीप, है, कहीं शंख मोती मणि पाय ।।
बोलनिहार सभन्हि मह बोले । एके ब्रह्म सकल घट डोले ।।
माटी एक बरतन बहुतेरा । अलख ब्रह्म तेहि भीतर डेरा ।।
—भक्तिहेतु

३-माया- दरिया साहब ने माया की व्यापक परिभाषा दी है । उन्होंने कहा है—

टिप्पणी- आदिपुरुषः— पुरति अग्रे गच्छति इति पुरुषः । आदिश्चासौ पुरुषः आदि पुरुषः । वा प्रथमं पुरुषः वा पुराणं पुरुषः ।

जो कुछ दृष्टि देखने में आवे, सो माया का चीन्हा ।।
महि माया काया माया माया में सब नाचा ।।
—बीजक

इसी माया के बीच यह जीव आकर फँस गया है इसके ऊपर माया का पर्दा पड़ गया है । सद्गुरु जीव को सम्बोधित करते हुए कहते हैं–

सभी हमारे देश का, या दर परा भुलाय ।
देखि शरद की चाँदनी, बहुरि उहाँ नहिं जाय ।।

माया का प्रचार–प्रसार समस्त संसार में है । माया अपना फंदा लेकर संसार रूपी बाजार में बैठ जाती है । जिसमें जीव के फंसने पर यमराज उसे कष्ट देने लगता है ।

झुनुका जाल सकल जीव फंदा । पकड़ि प्राण काल ने रंदा ।।

माया बड़ी डाइन है, और काम, क्रोध, मोह मद और लोभ और मत्सर इसके पाँच पुत्र हैं । जो जीव को सदैव सताते हैं और नाना प्रकार के नाच नचाते रहते हैं । इस माया ने सुर, नर मुनि यहाँ तक कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी नहीं बच सके ।

माया केहिकी बसि यह कहिए ।
सुर नर मुनि और तपे सन्यासी, गन–गन्धर्व संग रहिए ।।
शंकर के संग सदा सुहागिनि, विष्णु के संग शोभा ।
ब्रह्मा के संग बहुत दुलारी, ऐहि विधि जग में लोभा ।।
—बीजक

यह माया केवल सत्पुरुष से हार मानती है । यह उनकी दासी बनकर रहती है । सत्गुरु से भी हाथ जोड़कर विनती करती रहती है इस पर दरिया साहब ने कहा–

सबके ठगी पुरुष के ठगिहो तब तेरी प्रभुताई ।। —बीजक
एक पुरुष हहिं अजर अमाना, माया कैद करि राखा ।। —बीजक
मेरे पगु पर नाक दरतु है, एहि विधि सबके नाशी ।। —बीजक

४– जगत् — जगत् के विषय में दरिया साहब ने कहा कि जगत मिथ्या है ।इसकी कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है । केवल माया के कारण जगत हमें दृष्टिगोचर होता है । ब्रह्म ही जगत् का अधिष्ठान है । ब्रह्म से ही जगत् की उत्पत्ति हुयी ।

जाके पिंड प्रान है छाया । तिन्हीं सभे जगत् निर्माया ।। —भक्तिहेतु

यह संसार दुःखमय है । यह केवल रमणीय है । ऊपर से देखने में ही यह सुहावना लगता है । भोगने पर यह निराशा को जन्म देता है और दुःख का कारण बनता है । यथा—

एहि भव शोक संताप बहु, निकलि सिताबी आव ।
माया काँट अति कठिन है, अब जनि करु फैलाव ।। —ज्ञानस्वरोदय
बुन्द बुल्ला तन विलयमान भव, जढ़ की महिमा नागा ।। —बीजक

इस प्रकार दरिया साहब के दर्शन की मानवीय भूमिका है । वे कहते हैं कि जीवन क्षणभंगुर है । अतः अपने जीवन को सफल बनाने के लिए परमात्मा का ध्यान करो ।

उन्होंने सत्य को स्वीकार किया एवं असत्य से दूर रहते थे । चाहे वह किसी को अच्छा लगे या न लगे । यथा—

तीता लागे चाहे मीठा लागे, साधुन कहा कहानी ।
कहें दरिया कोई वली फकीरा, वाकी बात अमानी ।। —बीजक

झुनका जाल– बहेलिया, नदी अथवा तालाब मे जाकर रोशनी दिखाकर एवं बाद्य यंत्र से ध्वनि उत्पन्न कर पक्षियों को अपने जाल में फंसा लेता है । सिताब=शीघ्र ।

भक्ति भावना

भक्ति— भक्ति की व्याख्या शांडिल्य भक्ति सूत्रों, नारद भक्ति सूत्र, श्रीमद्भगवत् गीता, भागवत् , तत्वदीप निबन्ध, आदि में विशेष रूप से की गई है । भक्ति का अर्थ होता है — सेवा का प्रकार । 'भज् सेवायाम्' धातु से क्तिन प्रत्यय लगाकर यह रूप सिद्ध होता है । भक्ति की व्याख्याओ में भक्ति के प्रधान दो लक्षण बताये गये हैं – १–परमात्मा के प्रति अनन्य प्रेम २–सांसारिक वस्तुओं से विरक्ति ।

श्रीमद्भागवत् भक्ति भावना का सर्वप्राधान्य ग्रन्थ है । इसमें भक्ति के तीन स्वरूप बताये गये हैं– १–विशुद्ध भक्ति २–नवधा भक्ति ३–प्रेमा भक्ति ।

इन तीनों स्वरूपों में प्रेमाभक्ति को सर्वोच्च माना गया है । प्रेमाभक्ति ही रस की स्थिति तक पहुँचाती है । यही पराभक्ति भी कही जाती है । यह कर्मयोग और ज्ञानयोग से श्रेष्ठ मानी गयी है ।

(–भागवत् ११/१४/२०/२१/तथा गीता ११/५२/५४) ।

नवधा भक्ति— श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम् । अर्चनं, वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् । इति पुंसार्पिता विष्णौ भक्तिश्चेन्नवलक्षणम् । –(भागवत् ७/५/२३/२४) ।

श्रवण कीर्तन और स्मरण श्रद्धा तथा विश्वास वृत्ति के सहायाक हैं, पाद सेवा, अर्चन तथा वंदन रूप सम्बन्धी साधन हैं । तथा दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन भाव सम्बन्धी साधन हैं ।

नवधा भक्ति को बल्भाचार्य ने प्रेमरूपाभक्ति का साधन माना है । प्रेमाभक्ति में अनन्यता का भाव निहित रहता है ।

दरिया साहब के भक्ति का स्वरूप

दरिया साहब ने ज्ञान को पुरुष और भक्ति को नारी कहा है—

कामिनी भक्ति सभे जग जाना । पुरुष ज्ञान निर्लेप बखाना ।।
ज्ञान काहु के न नावे माथा । जो जन बूझे सो होय सनाथा ।।
—दरिया सागर

भक्ति ज्ञान का मूल स्रोत है । भक्ति के विना ज्ञान की प्राप्ति कठिन है तथा ज्ञान के विना ब्रह्म की प्राप्ति सम्भव नहीं दरिया साहब के ग्रन्थों में सभी प्रकार के भक्ति का समावेश है । इसका भेद उन्होंने उपमाओं के माध्यम से दिया है । किस तरह अटल रहकर परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है इसका उन्होंने सुन्दर उदाहरण दिया है ।

प्रेम लगन उस प्रकार होना चाहिए जैसे भौंरा कमल पुष्प से प्रेम करता है । सर्प अपने मणि से प्रेम करता है । साहस उस प्रकार होना चाहिए जिस प्रकार स्त्री पति की मृत्यु के पश्चात् पति के साथ चिता में जल जाती है तथा फतिंग दीपक की लौ में अपने को जला देता है । परमात्मा पर ध्यान उस प्रकार होना चाहिए जिस प्रकार चकोर पक्षी चन्द्रमा पर अपनी दृष्टि लगाये रहता है । परमात्मा पर विश्वास इस प्रकार होना चाहिए जैसे पपीहा स्वाती बूँद की आशा में विश्वास रखता है ।

संसार मे निर्मल होकर इस प्रकार रहना चाहिए जैसे कमल का पत्ता पानी में रहता

टिप्पणी– दरिया साहब सती प्रथा के समर्थक नहीं थे, केवल उदाहरण दिया है

है, परन्तु पानी का लेप नहीं लगता है । गुण दोष, सत्य-असत्य का विवेक इस तरह होना चाहिए जैसे हंस दूध को अलग-अलग कर देता है । परमात्मा का सहारा इस प्रकार लेना चाहिए जैसे हारिल पक्षी लकड़ी का सहारा लिये रहता है । पारस चन्दन के समान होना चाहिए । इस प्रकार सत्गुरु का पारस मिलने पर जीव उस परमात्मा का दर्शन प्राप्त कर लेता है । भक्ति के लिए प्रेम नितान्त आवश्यक है -

प्रेम प्रीति करु नाम से भवजल जाहिं न हारि ।
विना प्रेम नहीं भक्ति है, कमल सुखा बिनु वारि ।। —प्रेममूला

इस प्रकार प्रेमपूर्वक परमात्मा का नाम स्मरण करना चाहिए । गोस्वामी तुलसी दास ने भी लिखा है —

कलियुग केवल नाम अधारा । सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा ।।
कलियुग केवल हरि गुन गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा ।।
—रामचरित मानस

अतः दरिया साहब कहते हैं कि संसार की ओर न ध्यान देकर केवल परमात्मा के नाम को हृदय में धारण करना चाहिए -

जढ़ता जक्त युक्ति से रहना । आपन सत्त आपु में गहना ।। —भक्तिहेतु

कबीर साहब ने भी दूसरे के दोषों को न देखने का संदेश देते हुए कहते हैं—

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजो आपना, मुझसे बुरा ना होय ।।

निर्गुण भक्ति के चार स्वरूप बताये गये हैं- १-नाम जप २-मानसिक भक्ति ३-प्रेम के माध्यम से कर्मकाण्ड की अनपेक्षित दुरुहताओं को दूर करना ।

४-भजन को ऐसे विश्वव्यापी धर्म के सूत्रों में निबद्ध करना जहाँ जाति वर्ग और वर्ण सम्बन्धी भेद न हो ।

इस प्रकार दरिया साहब का भक्ति एवं भक्तों से नहीं अपितु ढोंग और ढोंगियों से विरोध था ।

जीवन का मुख्य तत्व—आप धन कमाते हो और आप से यदि कोई पूछे क्या कमाई करते हो ? किसी से पूछो आज कितनी कमाई हुयी तो वह कहेगा लाखों की कमाई हुयी । कमाई का मतलब कम, आई, जो कम आई है तो फिर ज्यादा आई कब होगी, लाख हुआ तब भी कम आई करोड़ हुयी तब भी कम आई, ज्यादा आई कब होगी, जो आपके पास में रहेगी । अतः असली धन क्या है ?

जो आपके साथ जायेगा वह आपकी निजि पुंजी है । वही आपका असली धन व असली खजाना है । बाकी सब कम+आई है । समस्त परिवार भी कम-आई है । लाखों करोड़ों की राशि भी कम+आई है । असली धन क्या है ? असली पूँजी क्या है, असली पूँजी तो वह है जो तन छूटने के बाद आपके साथ जायेगा ।

-आचार्य सत्यवान दास
प्रबन्धक : सद्गुरु दरिया आश्रम
धराँव, चन्दौली, (वाराणसी) उ० प्र०)

• मंगलाचरणम् •

सत्पुरुष स्तुति

साहब दया के सागर हो, उदित उजागर हो ।
लाज के जहाज हो, गहिर गरकाब हो ।। १ ।।
जगत में लाल हो, सन्तन्ह प्रतिपाल हो ।
पाप के भंजन हो, दुष्टदल गंजन हो ।। २ ।।
सर्वगुण गामी हो, अमृत आमी हो ।
गरीबनिवाज हो, हंसन सिरताज हो ।। ३ ।।
बेवाहा बेकीमत हो, साधुन संग हिम्मत हो ।
'दरिया' दिल दरस हो, मुक्ति के पारस हो ।। ४ ।।

गुरु वन्दना

गुरु परम पुनीता सब जग हीता, षट्दर्शन से गति न्यारी ।
लोहा मँह पारस भृंग कीट कहँ, तरुन्हि मलयगिरि जिमि तारी ।। १ ।।
अहि सीप केदली गज गयन्द कत, अपरन्हि स्वाती उपकारी ।
ऐसो कृपाल जन के दयाल, दरिया सतगुरु साहब की बलिहारी ।। २ ।।
जाको पद परसे अनुभव दरसे, काल न करसे नर नारी ।
जन के सुखदाई सदा सहाई, जिमि शिशु पालेव महतारी ।। ३ ।।
सबसे अधिकारी पर उपकारी, बहु अपराधिन कहँ तारी ।
ऐसो कृपाल जनके दयाल, दरिया साहब साम्रथ की बलिहारी ।। ४ ।।

☹ सत्नाम ☹

शब्द सुमिरन

यम जाल काल बिसारि के, सत शब्द में, धुन लावहीं ।
गुरु ज्ञान विमल विराग मद यह, कुमति कलि बिसरावहीं ।।
अमर लोक में शोक नाहीं, शिकिल शोभा पावहीं ।
भव भर्म कर्म ना ब्यापु कबहीं, उदित मंगल गावहीं ।।
कोटि कामिनि चँवर ढारहिं, कोटि कृष्ण द्वारहीं ।
कोटि ब्रह्मा वेद भनते, अनन्त बाजा बाजहीं ।।
ज्योति मंडल कोटि कलशा, हिरण्य को प्रकाशहीं ।
झलक झालरि लागु चहुँ ओर, मोती मणि छबि छावहीं ।।
श्वेत मंडल श्वेत चहुँओर, श्वेत छत्र विराजहीं ।
श्वेत तख्त पर आप बैठे, हंस चँवर डोलावहिं ।।
परम आनन्द सुगन्ध सुन्दर, प्रेम मंगल गावहीं ।
परिमिल अग्र गुलाब की झरि, हंस सो सुख पावहीं ।।

।। सोरठा ।।

अति शोभा सुख सार, प्रेम पंथ भव रहित है ।
कोई ज्ञानी करे विचार, अटल अमर सुख हंस है ।।

☹ सत्नाम ☹

शब्द बिसर्जन

हो सुख सागर सब गुण आगर, निगम नेति सभे बरणी ।। १ ।।
जल में थल में स्वर्ग पताल में, ज्यों दिनेश दिन हो धरणी ।। २ ।।
काल विभंजन मैलहिं मंजन, संजन जन को तूँह तरणी ।। ३ ।।
"दरिया" दिल देखि विचारि कहें, जिमि सालि सुखे जल हो भरणी ।। ४ ।।

।। सोरठा ।।

ज्यों तरणी जल माँह, नाम विमल गुण विदित है ।
समुझि पकड़िये बाँह, भव नहिं बुड़ेव जहाज यह ।।

• मंगलाचरणम् •

सत्पुरुष स्तुति

साहब दया के सागर हो, उदित उजागर हो ।
लाज के जहाज हो, गहि गरकाब हो ।। १ ।।
जगत में लाल हो, सन्तन्ह प्रतिपाल हो ।
पाप के भंजन हो, दुष्टदल गंजन हो ।। २ ।।
सर्वगुण गामी हो, अमृत आमी हो ।
गरीवनिवाज हो, हंसन सिरताज हो ।। ३ ।।
बेवाहा बेकीमत हो, साधुन संग हिम्मत हो ।
'दरिया' दिल दरस हो, मुक्ति के पारस हो ।। ४ ।।

गुरु वन्दना :

गुरु परम पुनीता सब जग हीता, षट्दर्शन से गति न्यारी ।
लोहा मँह पारस भृंग कीट कहँ, तरुन्हि मलयागिरि जिमि तारी ।। १ ।।
अहि सीप केदली गज गयन्द कत, अपरन्हि स्वाती उपकारी ।
ऐसो कृपाल जन के दयाल, दरिया सतगुरु साहब की बलिहारी ।। २ ।।
जाको पद परसे अनुभव दरसे, काल न करसे नर नारी ।
जन के सुखदाई सदा सहाई, जिमि शिशु पालेव महतारी ।। ३ ।।
सबसे अधिकारी पर उपकारी, बहु अपराधिन कहँ तारी ।
ऐसो कृपाल जनके दयाल, दरिया साहब साम्रथ की बलिहारी ।। ४ ।।

☹ सत्नाम ☹

शब्द सुमिरन

यम जाल काल बिसारि के, सत शब्द में, धुन लावहिं ।
गुरु ज्ञान विमल विराग मदयह, कुमति कलि बिसरावहीं ।।
अमर लोक में शोक नाहीं, शिकिल शोभा पावहीं ।
भव भर्म कर्म ना ब्यापु कबहीं, उदित मंगल गावहीं ।।
कोटि कामिनि चँवर ढारहिं, कोटि कृष्ण द्वारहीं ।
कोटि ब्रह्मा वेद भनतें, अनन्त बाजा बाजहीं ।।
ज्योति मंडल कोटि कलशा, हिण्य को प्रकाशहीं ।
झलक झालरि लागु चहुँ ओर, मोती मणि छबि छावहीं ।।
श्वेत मंडल श्वेत चहुँओर, श्वेत छत्र विराजहीं ।
श्वेत तख्त पर आप बैठें, हस चँवर डोलावहिं ।।
परम आनन्छ सुगन्ध सुन्दर, प्रेम मंगल गावहीं ।
परमिल अग्र गुलाब की झरि, हंस सो सुख पावहीं ।।

।। सोरठा ।।

अति शोभा सुख सार, प्रेम पंथ भव रहित है ।
कोई ज्ञानी करे विचार, अटल अमर सुख हंस है ।।

☹ सत्नाम ☹

शब्द बिसर्जन

हो सुख सागर सब गुण आगर, निगम नेति सभे बरणी ।। १ ।।
जल में थल में स्वर्ग पताल में, ज्यों दिनेश दिन हो धरणी ।। २ ।।
काल विभंजन मैलहिं मंजन, संजन जन को तूँह तरनी ।। ३ ।।
"दरिया" दिल देखि विचारि कहें, जिमि सालि सुखे जल हो भरणी ।। ४ ।।

।। सोरठा ।।

ज्यों तरणी जल माँह, नाम बिमल गुण विदित है ।
समुझि पकड़िये बाँह, भव नहिं बुड़ेव जहाज यह ।।

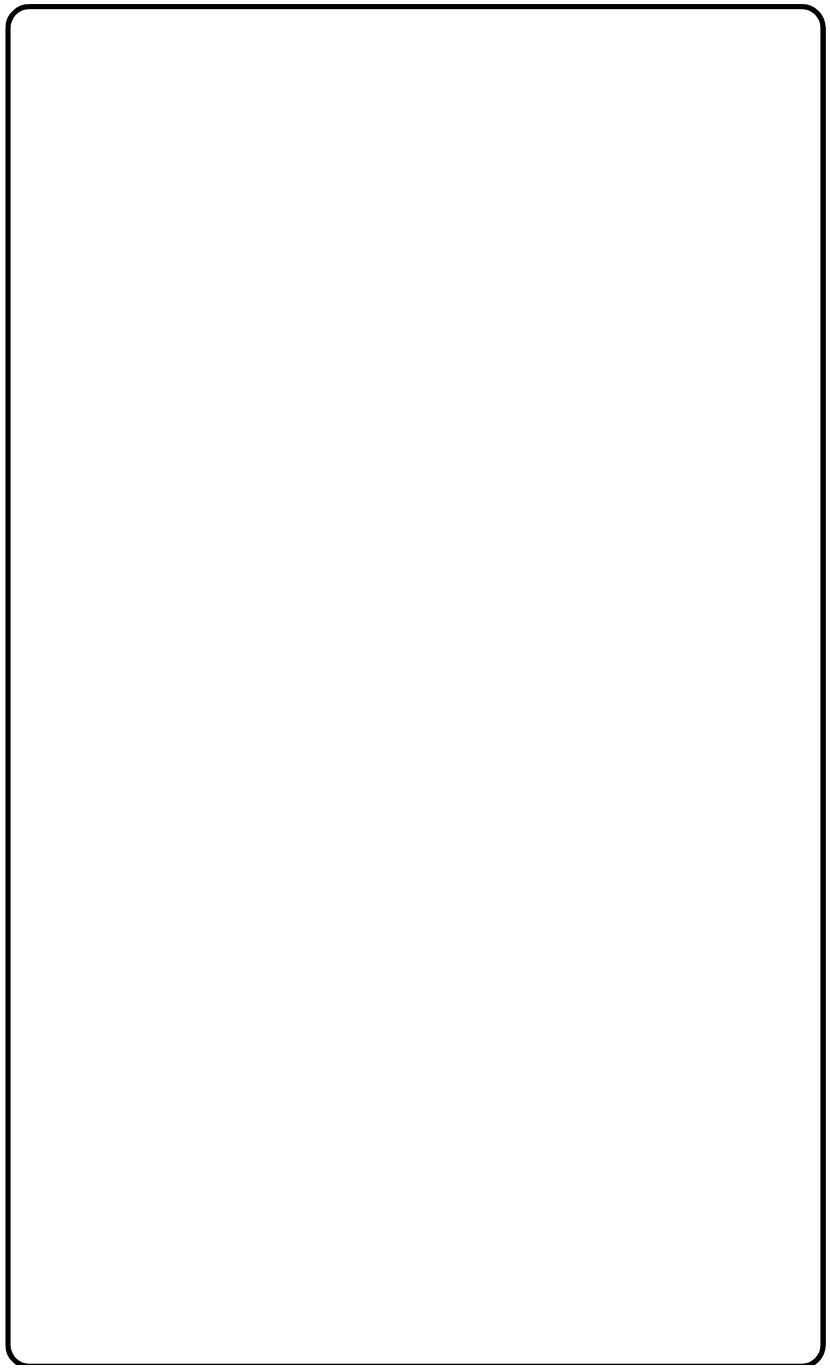

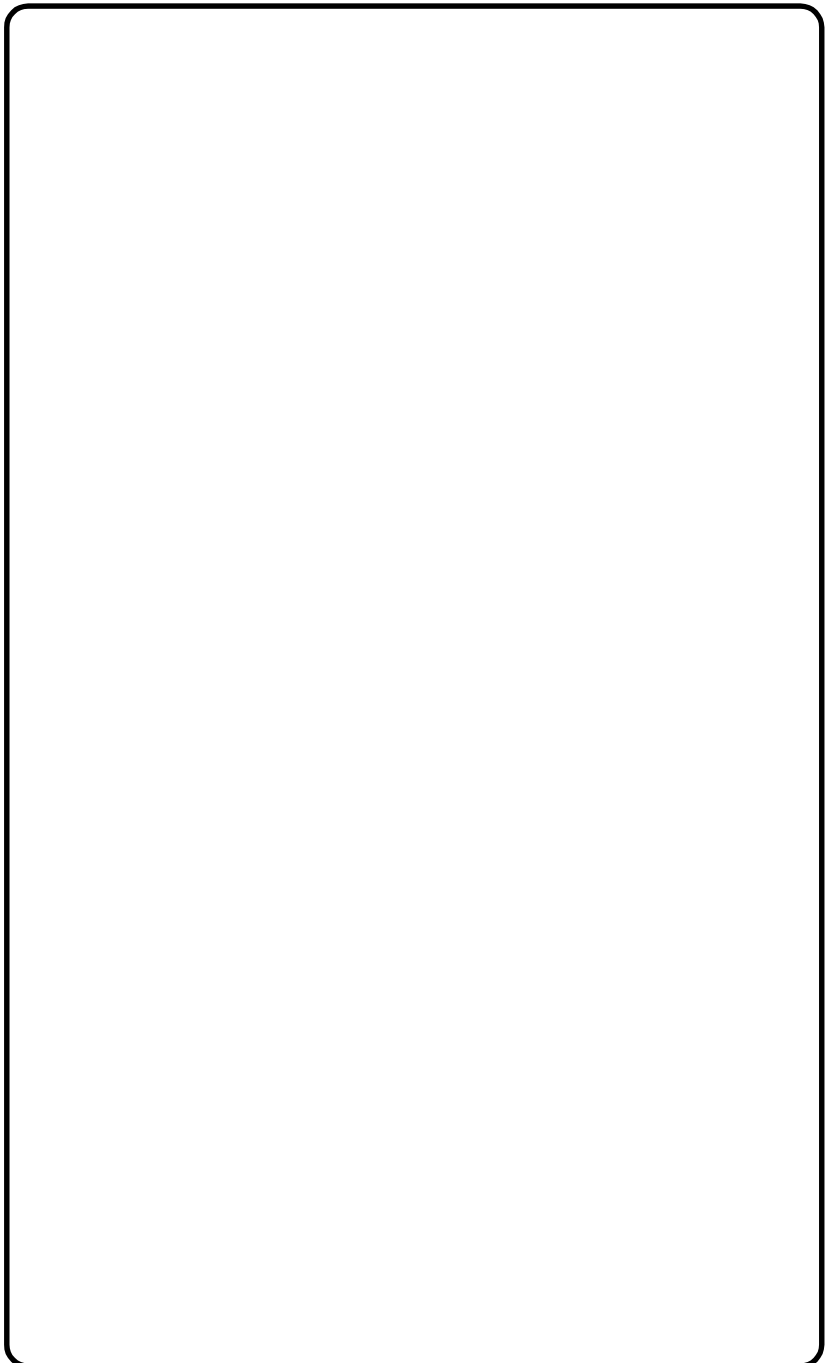

।। साखी ।।

संध्या सुमिरन आरती, निर्मल हुआ शरीर ।
मनसा वाचा कर्मना, भव भंजन मतिधीर ।। १ ।।
संध्या तर्पण तहां करो, जहां जल कूश न होय ।
अजपा दर्शन दृष्टि करो, दया दीपक दिल सोय ।। २ ।।
मैं सुमिरों तुम नाम के, कबहीं ना होत अकाज ।
पतिब्रता नंगी रही, तो वाहि पिया को लाज ।। ३ ।।
बेबाहा के मिलन से, नैन भया खुशिहाल ।
दिल मस्त मतवाला हुआ, गूँगा गहिर रिशाल ।। ४ ।।
दरिया नाम समुद्र है, बून्द बून्द संसार ।
दोय तरंग जाफा हुआ, राम कृष्ण अवतार ।। ५ ।।
अजर लोक अजर मनि, प्राण पिंड नहिं भीन ।
कहें दरिया दर्शन सही, मम ताहि चरण लवलीन ।। ६ ।।
भवजल में सब काग हैं, कोई कोई हंस हमार ।
सुरति करे छपलोक के, जाय मिले परिवार ।। ७ ।।
सत्नाम निजु सार है, अमर लोक ले जाय ।
कहें दरिया सतगुरु मिलै, संशय सकल मिटाय ।। ८ ।।
साईं तेरे कारने, बाना पेन्हा अनेक ।
जूझन को सब निकले, जूझेगा कोई एक ॥ ९ ॥
सत् सुकृत हृदय बसे, सत्नाम आधार ।
बहु बानी सब तेजि के, उतरहु भवजल पार ॥१०॥
अमर लोक में जाई के, बहु बिधि करहिं बिलास ।
आवागमन नेवारि के, सत् सुकृत के पास ।। ११ ।।
सत् सुकृत सुमिरनकरो, सब विधि होत आनन्द ।
सकल सभा में सन्त शोभे, ज्यों उड़िगन में चन्द ॥१२॥
कहें दरिया दर्शन करो, विमल सदा गुन सार ।
रहनी रहो सो नाम है, तेजो भर्म बेकार ॥१३॥

संध्या आरती

(१)

संध्या आरती साम्रथ की है । सिर पर छत्र सुगंध सही है ।।
नहिं तहाँ चौका न चन्दन पानी । अविगति ज्योति है अमृत बानी ।।
नहिं तहाँ तिलक जनेऊ न माला । पूरण ब्रह्म अखंडित काला ।।
नहिं तहाँ जाति बरण कुल कोई । बर्षत अमृत चाखहीं सोई ।।
अजर अमर घर लेहिं निवासा । नहिं तहाँ काल कुबुद्धि के त्रासा ।।
आवा न गमन गर्भ नहिं बासा । कहें 'दरिया' सोई सतगुरु दासा ।।

(२)

आरति साम्रथ करों तुम्हारी । दीन दयाल भक्त हितकारी ।।
ज्ञान दीपक ले मंदिर बारों । तन मन धन लेई आगे वारों ।।
चित चन्दन के रगरी बनाई । ब्रह्म पुष्प लेई आनि चढ़ाई ।।
अनहद ध्वनि गहि घंट बजाओं । शब्द सिंहासन चरण मनाओं ।।
आपुहिं छत्र और सिर छाजे । कहें 'दरिया' तहाँ संत बिराजे ।।

(३)

सत्पुरुष दया किन्ह मोहीं । चरण कमल चित रहों समोही ।।
सुख सागर दुःख मेटनिहारा । दीन दयाल उतारहिं पारा ।।
जहँ-जहँ गाढ़ सन्तन पर डारा । साम्रथ बन्द छोड़ावनि हारा ।।
जाके डर कापहिं धर्म धीरा । बुड़त उबारहिं दास कबीरा ।।
दया सिन्धु गुण गहिर गम्भीरा । कहें 'दरिया' मेटा दुःख पीरा ।।

(४)

मैं कुलवन्ती खसम पियारी । पाँच तत्व लेई दीपक बारी ।।
गंध सुगन्ध थार भरि लिन्हाँ । चन्दन चर्चित आरति किन्हा ।।
फूलनि सेज सुगन्ध बिछावों । अपना पिया के पलँग पवढ़ावों ।।
सेवत चरण रैनि गई बीती । प्रेम प्रीति तुमहीं सो रीती ।।
कहें 'दरिया' ऐसो चित लागा । भई सुलच्छनि प्रेम अनुरागा ।।

(५)

सुमिरहु सत् पद प्राण अधारा । सत् शब्द लेई उतरहु पारा ।।
गुरु के वचन जब पावल बीरा । अचल अमर निश्चय घर थीरा ।।
हंसा जाई मिलहिं कर्तारा । बहुरि न आवहिं एहि संसारा ।।
तीन लोक से न्यारे डेरा । पुरुष पुरान जहाँ हंस घनेरा ।।
सतगुरु बचन शिष्य जब धरई । जाय सतलोक नरक नहिं परई ।।
कहें 'दरिया' जब बीरा पावे । जाय छपलोक बहुरि नहिं आवे ।।

संध्या आरती

शब्दार्थ– संध्या=योग, (सुबह दोपहर या शाम का वह समय जब दिन के भागों का मेल होता है), दिन और रात्रि के बीच का समय अर्थात् सूर्यास्त के बाद एक घड़ी (लगभग ४५ मिनट) का समय । आरती=पूजन, अभिनन्दन आदि में देवता या अभिनंदनीय के लिए के लिए पढ़ा जाने वाला स्तोत्र (मंत्र या गीत) । साम्रथ=सामर्थ्यवान । सिर=मस्तक । छत्र=आश्रय । सोगंध=शपथ, सुगंधित । चौका=चबूतरा, पूजन आदि में आटे अथवा मिट्टी आदि की रेखाओं से बनाया जाने वाला क्षेत्र । अविगत=कभी समाप्त न होने वाला । बानी=वाणी । पूरण=पूर्ण । अखंडित=कभी खण्डित अथवा नाश न होने वाला । काला=काल=समय में । वरण=वर्ण । कुल=वंश, गोत्र, संघ । वर्षत=वर्षा होना । चाखहीं=स्वाद लेना, अनुभव करना । अजर=कभी बूढ़ा न होने वाला, क्षय रहित । अमर=कभी न मरने वाला । घर=आवास, गृह, । लेहि=प्राप्त करना । निवासा=निवास करना । सोई=वह, वही । दासा=दास ।

दीन=गरीब, दुःखी, असहाय । दयाल=दया करने वाले । हितकारी=कल्याण करने वाले । बारों=जलाना, प्रज्वलित करना । लेई=लेकर । रगरी=रगड़ या घिस कर । बनाई=बनाना पुष्प=फूल । आनि=ले आकर, उपर । चढ़ाई=चढ़ाना । गहि=धारण कर । आपुहिं=आपका छाजे=सुशोभित होना । बिराजे=बिराजमान ।

मोहीं=मेरे उपर । समोही=सामने, समय । मेटनिहार=मिटाने वाला । उतारहिं=उतारना । पारा=पार । जहँ=जहाँ भी । गाढ़=संकट, कठिनाई । डारा=पड़ा, हुआ । बन्द=बन्धन को । छोड़ावनिहारा=छुड़ाने वाले । जाके=जिससे । धर्मधीरा=धर्मराज । बूड़त=डूबते हुए । उबारहिं=बचाना, निकालना । दास कबीरा=कबीरदास को । सिन्धु=सागर, समुद्र । गम्भीर=अथाह । मेटा=समाप्त हो गया । दुःख=क्लेश, तकलीफ, कष्ट । पीड़ा=व्यथा, दर्द ।

कुलवंती=कुलीन और सती स्त्री । खसम=पति । पियारी=प्यारी । बारी=जलाना । थार=थाल, पात्र । भरि=भरकर । लीन्हा=लेकर । चर्चित=लेपित, इच्छित । सेज=पलंग । बिछावों=आसन-विस्तर को लगाना, बिखेरना । पवढ़ावों=लिटा देना, सुला देना । सेवत=सेवा करते । रैनि=रात्रि । बीती=समाप्त हो गयी । सुलच्छिनी=सुन्दर या शुभ लक्षणों वाली, भाग्यशाली । अनुराग=आसक्ति

सुमिरहु=स्मरण करो । पावल=प्राप्त कर लेने पर । बीरा=बीड़ा, शपथ (मंत्र) । थीरा=स्थिर । कर्तारा=ब्रह्म । बहुरि=पुनः । न्यारे=अलग । डेरा=स्थान । घनेरा=बहुसंख्यक । धरई=धारण करेगा । परई=जायेगा । आवे=आयेगा ।

टिप्पणी–heeBÛe leòJe–he=LJeer, veerj, Deefive, JeeÙeg DeeJej DeekeâeMe~

शब्द मंगल

hetpee efJeMes (hetpee@weecee) keâer Meyob Debeej heej hee"keâ ves keâ efueS heeg efleDeej@eeLe&ee~

।। स्तुति ।।

(१)

साहब तुम गति अगम अपार, दया बहु कीन्हों जी ।। टेक ।।
प्रथम बन्दों सत् चरण, शीश साहब कहँ नाया ।
यह लीला अगम अपार, भेद बिरला कोई पाया ।।
अगम पुरुष सत वर्ग हैं हो, सोई मिले हमें आय ।
हंसन के सुख कारणे हो, हद दियो हैं पाव ।। दया० ।।
झलकत पदुम बहुत उजियार, बदन छवि सुन्दर रेखा ।
अविगति ज्योति अर्ध प्रकाशित, ज्ञान अगम गमि पेखा ।।
बिरला जन कोई चीन्हि के हो, सत् चरण सिरनाय ।
रहे प्रेम लवलाय के हो, नाम सजीवन पाय ।। दया०।।
वोय जिन्दा रुप अजर मणि, निर्मल ज्योति अमान।
कहेव अकूफ सर्वज्ञ सभनि ते, सुनों श्रवण दे ज्ञान ।।
बृगसित कमल शीतल होय आये, सुनि बचन निर्बान ।
हंसन बन्दि छोड़ावहीं हो, यम के मरदहु मान ।। दया० ।।
काल रोर यह चोर, जीव जहड़ावहीं ।
जो करे सुरति लवलाय, ताहि विलमावहीं ।।
जो करे विवेक बिचारि के हो, निर्मल धरि सो ध्यान ।
खुलित कमल गगन झरि लागे, झलकत श्वेत निशान ।। दया० ।।

शब्दार्थ– मंगल=शुभ, कल्याणकारी । बन्दौ=बन्दगी, नमस्कार । कहँ=को । नाया=झुकाया । सोई=वे । हंसन=जीव । हद=सीमा, पृथ्वी । पाँव=चरण । झलकत=दिखाई देना । पदुम=पद्म, चरण कमल, प्रकाश । बदन=शरीर । छवि=शोभा, कांती । पेखा=देखा । बिरला=कोई-कोई । सजीवन=जीवन शक्ति प्रदान करना, साथ रहना । कहेव=कहा । अकूफ=ज्ञान । सर्वज्ञ=सब जानने वाला । सभनि=सभी से । दे=देकर । निर्वाण=परमात्मा । यम=यमराज । मरदहु=नष्ट करना । मान=अहंकार, मद । काल=यमराज । रोर=शोर, कुहराम । जहड़ावहीं=ठगना, धोखा देना । बिलमावहीं=बिलमाना=रोकना, प्रेम में फँसाना । धरि=धारण कर । खुलित=खुला हुआ ।

जो बूझे यह भेद सोई है, संत सुजान ।
भयो निर्मल जौं परिमल बास, सुबास समान ।।
पारस पाय जन ऊधरे हो, निर्मल भजि सो ज्ञान ।
जाय छपलोक रहित घर पावे, जहँ सब हंस सुजान ।। दया० ।।
जो करे पारख लवलाय, नाम बिलगावहीं ।
यह ब्रह्मा विष्णु महेश, अन्त नहिं पावहीं ।।
धरि धरि ध्यान समाधि करे हो, सपने सो नहीं पाये ।
दीनदयाल कृपाल दयानिधि लियो हैं हंस 'बोलाय' ।। दया० ।।
करहु भक्ति बेभर्म कर्म बिसरावहू भाई ।
जब यह होय ब्रह्म भरिपूर सो, नाम अचल पद पाई ।।
अमृत पोषण पावहीं हो भक्ति करहिं लवलाय ।
धन्य भाग्य तेहिं जीव के हो साहब लियो हैं छोड़ाय ।। दया० ।।
कहे 'दरिया' सुनों सत्य शब्द यह बानी ।
कहाँ छपा यह मूल अगम सहिदानी ।।
सत् सुकृत दृढ़लाय के हो, गहिर जो गहि ले ज्ञान ।
सो जन के प्रतिपालहीं हो यम से राखु अमान ।। दया० ।।

अर्पण और प्रार्थना

सतगुरु यह प्रसाद तुम्हारा ।
तन मन धन जिन्हिं अर्पण कीन्हा हंस उतारो पारा ।।
दही सोहारी अवधृत मेवा खीर भरो है थारा ।
अम्बर श्वेत तहाँ यह सोभे यही भक्ति तत्व सारा ।।
खुस वोय मंदिर खुस नर नारि, सतगुरु खुस सौ बारा ।
सेवा माँहि कसूर न करिये छूटि जाय यम जारा ।।

शब्दार्थ– सुजान=चतुर, ज्ञानी, प्रवीण । परिमल=चन्दन, सुगन्ध । पाय=प्राप्त कर । उधरे=मुक्त हो जाय । भजि=स्मरण, ध्यान करना । रहित=कर्म बन्धन से मुक्त । लवलाय=प्रेम लगन के साथ । बिलगावहीं=अलग करना । पावहीं=प्राप्त करके । सपने=स्वप्न । बोलाय=सूचना देना, पास बुलाना । बे=बिना, नहीं । बिसरावहू=भुला देना, याद न रखना । पोषण=वर्धन, पालन । छोड़ाय=छुटकारा । सहिदानी=निशान, पहचान, चिन्ह । गहिले=धारण कर ले, ग्रहण करना । सो=वह, उस । राखु=रखना । अमान=परिमाण रहित, विनीत, रक्षा, अभय, आश्रय । प्रसाद=कृपा, देवता को चढ़ायी गई वस्तु । अर्पण=देना, दान करना, भेंट करना । अवधृत=मीठा का बुरादा, शक्कर (चीनी) । अम्बर=वस्त्र । माहँ=में, मध्य । कसूर=अपराध, भूल-चूक, दोष । जारा=जाला=बन्धन । अम्बर=स्वच्छ आकाशीय रंग का कपड़ा अर्थात् कुछ नीलापन लिये हुए श्वेत वस्त्र, धवल वस्त्र ।

धन्य-धन्य साहब धन्य भक्त हैं, धन्य है दास तुम्हारा ।
कहे 'दरिया' दरसन को फल है, दृष्टि भयी उजियारा ।।

(२)

अबरी के बार बकसु मेरो साहब, तुमहीं लायक सब योग हे ।
ऐगुण बकसिहो सब भर्म नसिहो, रखिहो अपने पास हे ।।
अक्षय वृक्ष तर लेई बैठइहो, जहवाँ धूप न छाँह हे ।
चाँद न सूरज दिवस नहि तहवाँ, नहिं निसि होत बिहान हे ।।
अमृत फल मुख चाखन दीहो, सेज सुगन्ध सोहाय हे ।
युग-युग अचल अमर पद दीहो, इतना बिनती हमार हे ।।
भव सागर दुःख दारुन मेटिहो, छूटि जइहें कुल परिवार हे ।
कहे 'दरिया' यह मंगल मूला, अनूपम फूले तहाँ फूल हे ।।

(३)

अबरी के बार बकसु पिया मेरो, जन्म जन्म की चेरि हे ।
चरण कमल हम हृदय लगाइब, कप्ट कागज सभ फारि हे ।।
मैं अबला बल किछुवो न जानल, परपंचिन के साथ हे ।
पिया मिलन बेरि बाट इन रोकल तब जीव भइले अनाथ हे ।।
जब हम दिल में निश्चय जानल सुझि परल यम फंद हे ।
खूलल दृष्टि दीया मनि लेसल मानो शरद के चन्द हे ।।
सुख के सागर अमृत फल मुँख सुकृत नाम सहाय हे ।
कहे 'दरिया' दर्शन सुख उपजल दुःख सब दूरि बोहाय हे ।।

शब्दार्थ– अबरी=इस बार, पीछे होने वाला । बकसु=क्षमा करो, देने वाला । योग=योग्य । नसिहो=नष्ट करो । छाँह=छाया । निसि=रात्रि । बिहान=सबेरा, प्रातः । दीहो=दीजिए । दारुन=घोर, कठोर, भयंकर । चेरी=दासी, सेविका । लगाइब=लगाऊँगी । फारि=नष्ट कर । अबला=स्त्री, नारी । किछुवो=कुछ नहीं । जानल=जानती । प्रपंचिन=छलिनी, धोखेबाजी । बाट=रास्ता, मार्ग । भइली=हो गयी । सूझि परल=समझ में आया । दीया=दीपक । लेसल=जलाना, प्रज्वलित होना । शरद=शरद ऋतु का । बोहाय=समाप्त होना, डूब जाना, दूर हो जाना । सहाय=सहायक । सोहाय=सोभायमान ।

अर्जी

(१)

तुम सब ऐगुण मेटनिहारा ।
जावके हाथ जगत की डोरी, गुन गहि खैंचनिहारा ।।
पूत कपूत पिता को लज्जा, जो मैं भूलि बिगारा ।
जैसे मणि मंदिल के भीतर, निसि बासर उजियारा ।।
तुम जिन्दा हो जागृत जग में, "बेबाहा" बेकीमती ।
खाक से पाक कियो पल माँही, यही हमारी बिनती ।।
सहज योग अमृत रस चाखों, परे कबहिं नहिं सूखा ।
अन्नवन चीज दीजै भरि पूरा, आतम सहे न भूखा ।।
नख शिख ले तुम सुन्दर बनायो, और भुजा बल नीका ।
अदल तुम्हारा ज्ञान हमारा, दूजा कहे सो फीका ।।
बचन तुम्हारा अजर अमर है, हाल हजूरे सूना ।
कहें 'दरिया' दया के सागर, गनिये पाप ना पूना ।।

शब्दार्थ- मेटनिहारा=मिटाने वाला । खैंचनिहारा=खींचने वाले, अपने पास ले जाने वाले । कपूत=कुपुत्र । बिगारा=बिगाड़ना । बासर=दिन । जागृत=कभी न सोने वाला । जग=संसार । खाक=धूल, राख, भस्म । पाक=शुद्ध, पवित्र, निष्कलंक । पल=क्षण भर । माँही=में । अन्नवन=अन्नमय=अन्न से भरा, अन्न से बना । आतम=आत्मा । अदल=न्याय, इन्साफ । हाल=वर्तमान काल, तुरंत, वृत्तांत । हजूरे=साहब या मालिक के पास । सुना=श्रवण किया, शून्य । पूना=पुण्य ।

(२)

साहब ! काह कमी घर तेरो ।
जो किछु चाहों सभे सम्पूरन, दया दृष्टि करि हेरो ।।
भूखे अन्न पियासे पानी, कपड़ा से तन घेरो ।
जो कुछ नियामत सबे महल में, खर्चु खजाना ढेरो ।।
तनिक दृष्टि से पाप कटित होय, यम जालिम भयो चेरो ।
भव से काढ़ि कियो तरनी पर, खेई उतारु सबेरो ।।
संत के कष्ट काटेवो पल माँहिं, यह सामर्थ बल तेरो ।
कहें 'दरिया' दर्शन फल दीजै, अबरि के बार निमेरो ।।

शब्दार्थ- काह=किस वस्तु की । हेरो=खोज, पुकार, आह्वान । घेरो=ढकना । नियामत=नेमत=ईश्वर की देन, धन, स्वादिष्ट भोजन । खजाना=धन, सम्पत्ति । ढेर=अधिक, पर्याप्त । जालिम=अत्याचारी, क्रूर । चेरो=गुलाम, दास । भव=नरक, दुःख । काढ़ि=निकालकर । तरनी=नौका, नाव, जहाज । सबेरो=जल्दी, सबेरे । अबरी=इस, अबकी । निबेरो=छुटकारा, बचाव, पूर्ति ।

(३)

साहब ! मैं गुलाम हूँ तेरो ।
लिखि लीजै यह कागज कोरे, जन्म जन्म का चेरो ।।
जैसे पूत कपूत जो होवै, पिता करे प्रतिपाला ।
अति आनन्द मोद मन भरिके, नजरन्हि कीन्ह निहाला ।।
अन्न कपड़ा तुम आगे दीन्हा, दया कीन्ह बहु भाँति ।
रहों असोच सोच कछु नाहीं बिते दिवस और राति ।।
यहि धरनी पर दैत केते भौ, महिं को कहत जो मेरा ।
"बेबाहा" के देई दोहाई, ताको करहु निमेरा ।।
जीव के गुन ऐगुन जनि खोजिये, तुम अस रहनि न आई ।
उठत बैठत नाम तुम्हारा, शरन शरन गोहराई ।।
यह मम अरज सुनो श्रवन दे, हंस बिगोई न जाई ।
कहें 'दरिया' ले नाम तुम्हारा, मुक्ति सदा फल पाई ।।

शब्दार्थ- कोरे=स्वच्छ, सादा कागज । अति=अधिक । मोद=हर्ष, आनन्द । नजरन्हि=नेत्रों को । निहाला=हर तरह से तृप्त, जिसके सभी मनोरथ सिद्ध हो चुके हों । असोच=निश्चिन्त । दिवस=दिन । राती=रात्रि । धरनी=पृथ्वी । केते=बहुत से । मही=पृथ्वी । तुम अस=तुम्हारी तरह । रहनि=आचरण, रहन । गोहराई=पुकारना । मम=मेरा । बिगोई=बहकना, बिगड़ना, व्यर्थ । पाई=प्राप्त करना ।

(४)

साहब ! तेरो गति सब बिधि पूरा ।
गाफिल बंदा मर्म न जाने, हाजिर हाल हजूरा ।।
चाहे तो मारल फेरि जिलावे, यह अचरज नहिं दूरा ।
खाक से पाक कियो पल माहिं, सत् वचन है फूरा ।।
सरन गये तेहिं बहुत नेवाजो, चारि पदारथ जूरा ।
अर्थ, धर्म, फल काम, मोक्ष है, कादर से करु शूरा ।।
राव से रंक-रंक से राजा, पल मँह बाजत तूरा ।
कहें दरिया तेरो अविगति लीला, गर्व मिलायो धूरा ।।

शब्दार्थ- गाफिल=बेखबर, लापरवाह । बंदा=मानव, जीव, दास । मर्म=भेद । हाजिर=उपस्थित । हजूरा=आपके पास । मारल=मरे हुए को । फेरि=पुनः । जिलावे=जीवन प्रदान करे । अचरज=आश्चर्य । फूरा=फुराना=सत्य होना, सत्य सिद्ध करना । निवाजो=दया करो । जूरा=जूर=ढेर । कादर=कातर, अधीर, परेशान, विवश । शूरा=शूरवीर । राव=राजा, सम्पन्न । रंक=निर्धन, गरीब । तूरा=तुरही=फूककर बजाने का एक पतले मुँह का बाजा जो दूसरे सिरे की ओर बराबर चौड़ा होता जाता है, वेग । गर्व=अहंकार, घमण्ड । धूरा=धूल, मिट्टी, राख ।

शब्द बिहंगरा

हंसा चलहु अमर पुर नीका ।
जरा मरन ते रहित होहुगे, सतगुरु के कर बीका ।।
यहाँ सुख दुख है शोक संताप, कुसुम रंग भयो फीका ।
जन्म जन्म के बिछुड़ा साथी, मिलेव खसम वोय नीका ।।
सत् की नाव सुकृत कनहरिया, सब विधि बात बनीका ।
धन्य सोभाग्य सुहाग ताहि को, कहि नहिं जात गनीका ।।
अति सुख सागर अमी अनूपा, क्षुधा बुतानी जी का ।
पुहुँप पलँग पर पुहुँप बिछौना, वृगसेव अमी कनीका ।।
अति बिलास तहां रुप रासि है, को कवि सके भनीका ।
एक मुख कहा सहस्र मुख जाके, कहि नहिं सकत फणीका ।।
मानहु सत्य धोखा जनि जानहु, तेजहु मान मनीका ।
'दरिया' दरस "पुरुष" पति जाके, पर दुःख दूरि अनीका ।।

शब्दार्थ– हंसा=जीव, मानव । चलहु=चलो । नीका=अच्छा, सुन्दर । जरा=वुढ़ापा । रहित=अलग, स्वतंत्र । कर=हाथ, पाणि । बीका=बिक जाना, सौंप देना । कुसुम=फूल, गुलाबी, मनमोहक । बनीका=बन जाना । गनीका=वेश्या, गणिका । अमी=अमृत, सुधा । क्षुधा=भूख, तृषा । जी का=आत्मा का । वृगसेव=बढ़ना, फैलना । कनीका=कण । रासि=खजाना, ढेर, रशि । भनीका=कहना । सहस्रमुख=शेष नाग । फणीका=फण वाले । एक मुख=मानव, कविजन । मनीका=मन का । अनीका=समूह । बिहंग=पक्षी ।

शब्द प्राती

(१)

माया के गुलाम गीदी, दिल तोर करिया ।
जन्म सीरानी जात, करत बेगरिया ।।
गाढ़े धन गहिरे गाड़े, भाड़ सभ भरिया ।
हाथ झारि चले जैसे, चलेला जुवरिया ।।
चार चरण सींघ दुई, पशु अवतरिया ।
श्वान शूकर देह धरि, भूँकि-भूँकि मरिया ।।
चारो पन बीति गइले, साहब बिसरिया ।
कहे 'दरिया' तोर, के धरहरिया ।।

शब्दार्थ– करिया=काला, प्रपंची । सिरानी=बीतना, समाप्त होना । बेगरिया=निरर्थक श्रम । गाढ़=परिश्रम की कमाई । भाड़=संचय कोष अथवा पात्र । भरिया=भरा । झारी=खाली । जुवरिया=जुवारी । अवतरिया=जन्म लेना, अवतार । मरिया=मर जाओगे । चारोपन=सम्पूर्ण जीवन । बिसरिया=भुला दिया । तोर=तुम्हारा । धरहरिया=रक्षा करने वाला ।

(२)

जन्म जन्म करम किन्हा, सोई संग लागा ।
देह धरि धरि मरि, जइबे रे अभागा ।।
मीन माँस खाया पोखे, कबहीं न नागा ।
जहाँ जहाँ खून किन्हा, सोई करिहें दागा ।।
गुरु के ना ज्ञान तोहिं, झूठी बातें पागा ।
मोहकम गाँठी बाँधे, माया संग जागा ।।
चोरन के संगे बसे, साधु संग त्यागा ।
कहे 'दरिया' दिल ऐसो, कुमति बिरागा ।।

शब्दार्थ– जइबे=जाओगे । मीन=मछली । पोखे=पक्ष (कृष्ण एवं शुक्ल) । नागा=खाली, व्यर्थ । दाग=दाग, निशान । पागा=मग्न होना । मुहकम=पक्का, मजबूत । बिरागा=विरक्त, छोड़ दो । पोखे=पोषे=पोषण करना ।

(३)

तुम अंतर्गति जानिया, गति जाननिहारा ।
तुम संतन प्रतिपालिया, पालेव संसारा ।।
जेहि दिन ग्रंथी गांठि नहिं, नहीं दूध के धारा ।
दस मास तुम जतन कियो, हो निजु करतारा ।।
कीट फतिंग जहाँन जहाँ ले, सो तुम्हरे सिर भारा ।
सभके भच्छ तुम देत हो, गति अपरम् पारा ।।
ज्यों द्रुम सिंचेव प्रेम से, फल अमृत सारा ।
कहें 'दरिया' ऐसो सिंचिये, मेरो प्रान अधारा ।।

शब्दार्थ– अन्तर्गति=अंदर अथवा हृदय की बात को । जानिया=जानते हो । जाननिहारा=जानने वाले हो । प्रतिपालिया=रक्षा करने वाले हो । जेहि=जिस । ग्रंथी=अंगों का जोड़, शरीर के अन्दर की गाँठ जिनसे रस निकलता है । जतन=यतन, पालन, रक्षा । जहान=जगत्, लोक । भारा=भार । भच्छ=भक्ष=भोजन । द्रुम=वृक्ष । सिंचेव=सिंचाई करना, सींचना । सारा=सार=तत्व । अधारा=आधार=सहारा ।

शब्द खुद बानी

(१)

मम हौं त्रिगुन गुन ते ऊँचा ।
तुमको क्या डर बल मेरा है, चुंबक गाँसी खींचा ।।
ले उड़ोंगा डगर हमारा, सत्य वचन नहिं फीका ।
तुमको दरस परस पद पावन, मनि मस्तक का टीका ।।
ऐसा बैन दिन्ह वर तुमको, सहिजादा हो मेरा ।
निगम बोध सब कैद हुआ है, जगत करोंगा तेरा ।।

मैं जिन्दा हों जागृत जग में, "बेवाहा" कहि दिन्हा ।
सत्तवर्ग है नाम हमारा, रहों जगत से भीन्हा ।।
ऐगुन होय तो गुन करि डारों, बहुत सुगन्ध बहुभाँती ।
तुमके छोड़ि छपलोक ना जइहों, जतन करों दिन राती ।।
मम साहब तुम नायब मेरा, तुमको कोई न जीता ।
कहे 'दरिया' दर देख परा है, सार शब्द गुन हीता ।।

शब्दार्थ- मम=मैं । त्रिगुण=रज, तम, सतगुण । ते=से । गुन=निर्गुण एवं सगुण । गाँसी=गाँठ, बन्धन । ले=लेकर । डगर=मार्ग, रास्ता । फीका=व्यर्थ, हल्का । पावन=शुद्ध करने वाला, पवित्र । टीका=सिर का एक आभूषण, तिलक । बैन=बचन । वर=वरदान, आशीर्वाद । शाहजादा=बेटा, राजकुमार, पुत्र । निगम=वेद, वेद का कोई अंश । कैद=बंधन । बेबाहा=सत्पुरुष । सतवर्ग=सभी प्रकार से पूर्ण सत् । भीन्हा=अलग । नायब=प्रतिनिधित्व करने वाला, स्थानापन्न । दर=भाव, गौरव, महत्ता । हीता=उचित, अच्छाई, कल्याण ।

(२)

जो जन करिहें मम बिस्वासा ।
उठत बैठत सोवत जागत, सदा रहों तेहिं पासा ।।
संत के निकट बिकट कुछ नाहिं, संकट परे तहाँ धावों ।
संत दुखैहें ताहिं दुखावों, दुर्जन दूरि बोहावों ।।
पल-पल छन-छन पालत रहिहों, गहे शब्द ततु सारा ।
सत् की तरनी तरक करे तो, गुन गहि घैचों पारा ।।
मम हों साधु-साधु मोहिं माहीं नेह निकट नित जोरों ।
जो कोई चितवे कड़ी दृष्टि से, चाबुक चौहट तोरों ।।
भूखे अन्न पियासे पानी, कपड़ा से तन छावों ।
संत समाज करे सभ आरती, नित नव मंगल गावों ।।
अति अधीन लीन चरनन में, सतगुरु प्रेम परगासा ।
कहें 'दरिया' तेहिं सिर पर साहब, मेटि जाय यम त्रासा ।।

शब्दार्थ- जो जन=जो मानव, जीव । करिहें=करेगा । रहों=रहूंगा । तेहिं=उसके । विकट=दुर्गम, मुश्किल, विशाल । संकट=कठिनाई, विपत्ति । धावों=दौड़कर आना । ताहि=उसको । बोहावों=समाप्त करना, दूर करना । पालत=रक्षा । ततु=तत्व । सारा=सार=मुख्य, मूल । तरनी=नौका । तरक=चढ़े, विचार करे । घैंचो=खींचकर । मोहीं=मेरे । मांही=में, अन्दर । नेह=स्नेह, प्रेम, प्यार । नित=नित्य, प्रतिदिन, हर समय । जोरो=जोड़ना, लगाव रखना । चितवे=देखेगा, कटाक्ष । चाबुक=कोड़ा से, तेज । चौहट=चौक, चौमुहानी । चौहर=दांतों का भीतरी भाग । छावों=ढकना, आश्रय । आरती=स्तुति, पूजन । नय=नव=नया, नवीन । तेहि=उसके त्रासा=डर, भय, दुःख ।

शब्द नर सरह

नर ! पीछे समुझि परेगा भाई ।
जब हरि के हर मुस्टक अइहें, बाँधिहे मुसुक चढ़ाई ।।

अबहीं भोजन करो इच्छा भरि, नित्य नव माँस बनाई ।
जेता जीव झटका से मरिहो, वहाँ लिखा सभ जाई ।।
अबहिं रति करो वेश्या से, पातरि भाँड़ नचाई ।
दोय फरिश्ते बाँये दहिने, पल-पल खबर जनाई ।।
अबहीं पर धन लूटि ले आवहु, स्वारथ कारण नीका ।
चित्रगुप्त जब लेखा मगिहें, परी बचन सब फीका ।।
अबहीं निन्दा करो संतन की, जो तुम्हरे मन भावे ।
पग-पग पर काँटा सूली, सो फल आगे पावे ।।
संत नकीब साहब को चाकर, बोल दिया सतबानी ।
हो हुशियार बार जनि लावो, कहे 'दरिया' सुनु जानी ।।

शब्दार्थ- पीछे=बाद में । हरि=भगवान्, धर्मराज । हर=अनेक, बहुत से । मुष्टिक=यमदूत, घूँसा, बलवान । मुश्क=कन्धे और कुहनी के बीच का हिस्सा, बाँह । चढ़ाई=हाथ को घुमाकर पीछे कर देना । जेता=जितना । रति=सम्भोग सुख । पातरि=वेश्या, रंडी । भाँड़=रंडी को नचाने वाला, तमाशा दिखाने वाला । फिरिश्ता=मुसलमानों के विश्वासानुसार ज्योति से निर्मित एक योनि, देवदूत । खबर=सन्देश । जनाई=जानकारी देना । नीका=अच्छा, लाभप्रद । चित्रगुप्त=१८ यमों में से एक, यम के दरबार के लेखक जो सब मनुष्यों का पाप-पुण्य लिखा करते हैं । लेखा=हिसाब । नकीब=वह व्यक्ति जो राजाओं आदि की सवारी के आगे उनके वंश का यश गाता चलता है, दास, चारण । चाकर=सेवक । हुशियार=सर्तक, सावधान । बार=देर, ऋणभार, दखल । जनि=नहीं । लावो=ले आवो, करो । जानी=प्रिय ।

शब्द राग नट

एक दिन मुरली मुँख बनवारी ।
राधा मगन भई बाधा तेजि, औ बृज की बहु नारी ।।
मधुर मनोहर जिन्ह ध्वनि सुनेव, मृग त्रेन तेजि भौ न्यारी ।
खग मीन थकित भयो जल थल पर, गिर चढ़ि गिरा उचारी ।।
सुर नर मुनि गन ग्रंधप ग्याता, नट सभ नाच उचारी ।
ब्रह्मा भये उदास वेद तेजि, तरुवर पात सभ झारी ।।
क्षीर पियत बालक भयो स्रोता, भोगीयन्ह भोग दूरि डारी ।
राज काज नृप कछु नहीं भावे, सभ मन तेजि बिकारी ।।
गौवन मोह तजे बछड़न से, बछड़न मातु बिसारी ।
मधुकर मालती घ्राणि न भावे, गणिकन्हिं लागि गई तारी ।।
बहु प्रकार बजायो वीणा, वा सुर नाहिं सुधारी ।
कहे 'दरिया' निर्गुण है निर्मल, अविगति गति है न्यारी ।।

शब्दार्थ- मुरली=बाँसुरी । मगन=प्रसन्नता । बाधा=बन्धन, रुकावट । औ=और । बहु=बहुत से । सुनेव=सुना । मृग=पशु, हिरन । तेजि=छोड़कर । न्यारी=अलग, दूर ।

खग=पक्षी । मीन=मछली । थकित=थक गये । गिरि=पर्वत । गिरा=वाणी । उचारी=उच्चारण करना, उठाना । सुर=देवता । मुनि=तपस्वी, क्रोधी । गन=समूह, अनुचर । गंध्रप=गंधर्व । ज्ञाता=ज्ञानी । तरुवर=वृक्ष । पात=पत्ता । झारी=छोड़ देना, गिरा देना, समाप्त हो जाना । क्षीर=दूध । भोगियन्ह=बिलास करने वाला । भोग=सम्भोग । नृप=राजा । विकारी=वेकार, व्यर्थ, विकार । गौवन=गाय । बछड़न=बच्चा । बिसारी=भुला देना । मधुकर=भ्रमर । घ्राणि=गन्ध । गणिकन्हि= वेश्याओं का । तारी=ध्यान, समाधि । वीणा=ध्वनि । वा=वह । सुर=स्वर । सुधारी=बना । त्रिगुण=तीन गुण रहित । निर्मल=पवित्र ।

शब्द तेग पक्ष

साधो कुहुँक बान हथियारा ।
जहाँ लगे तहाँ झूके न कबहीं, निफरि जात उर पारा ।।
सत्य सनाह सुरति है नेजा, ज्ञान घोड़ा तहाँ डारा ।
सतगुरु हुकुँम नगारा बाजे, फरके भुजा सारा ।।
संत सिपाही बड़े जगत में, बाँधे कमर कटारा ।
कुदि परा मैदान के बीच में, जहाँ फौज है सारा ।।
काम क्रोध मद लोभ समेता, बड़े वीर है कारा ।
तहवाँ लोहा झमकन लागे, मारि दिया दुई फारा ।।
मंडी रहा मैदान के बीच में, सनमुख फौजे टारा ।
मनसफ दीन्ह धन्य है सोई, पलंग दिया सुख सारा ।।
केता महिमा संत के कहिए, चारों युग उजियारा ।
कहे 'दरिया' सुनो हो संतों, गहिहो तेग सम्भारा ।।

शब्दार्थ– कुहुक बान=एक बाण जिसे चलाते समय आवाज निकलती है (प्रतीक रूप में यह अन्तरात्मा की चाह या आवाज होती है) । हथियार=अस्त्र । झूके=लटकना, मुड़ना । निफरि= धँस कर आर–पार होना । उर=हृदय । सनाह=कवच, वख्तर । नेजा=निशान, भाला । नगारा=नगाड़ा वाद्य यन्त्र । कटारा=छूरा, तलवार । कारा=बलवान, तेज । लोहा=युद्ध, लड़ाई । क्षमकन=युद्ध में हथियार खटखटाना । फारा=वार । मंडि=सब ओर से घेरकर । फौज=सेना । टारा=हटा दिया । मनसफ=पद, अधिकार । तेग=तेज, बल, तलवार ।

शब्द छपे सरह

तप बिनु दान योग बिनु ज्ञानी, पिया बिनु भूषण मान किमि कीजै ।
जल बिनु मीन, प्राण बिनु काया, कमल भँवर बिनु बास सब छीजै ।
मणि बिनु फणिक चन्द बिनु रैनि, प्रीति बिनु भक्ति ठवर कहाँ कीजै।
माया मन्दिर बास बिनु परिमल, द्रुम पत्र बिनु छाँह किमि कीजै ।
सीप बिनु मोती, गजमुक्ता बिनु जौहर, जौहर बिनु लाल किमि लीजै ।
कहें 'दरिया' दरश परस बिनु, ब्रह्म ठवर कहाँ कीजै ।

शब्दार्थ– भूषण=आभूषण, गहना । किमी=किस तरह, कैसे । भँवर=भ्रमर । छीजै=नष्ट होना, क्षय होना । फणिक=सर्प । ठवर=स्थान, जगह । परिमल=चन्दन । द्रुम=वृक्ष । जौहर=पहचान करने वाला । लाल=जवाहरात, माणिक्य ।

शब्द रागी झूमरी

तूँ त साहब के बिसरवला हो, दिन बिसरु ।
कौल कइल बहुत भुलइला, बीज बोवला खेत उसरु ।।
मातु–पिता सुत बंधु नारी, तेहि संग कोनवा में घुसरु ।
केश श्वेत अचेत सोवत हो, आई गइलें पन तिसरु ।।
चरण भी थाके चक्षु भी थाके, कोई नहीं साथ अकसरु ।
कहे 'दरिया' दर यम ने छेंका, कौन राह निकसरु ।।

शब्दार्थ– तूँ=तुम । त=तो । बिसरवला=भुला दिया, याद न किया । बिसरु= बिसरगया बीत गया । कौल=प्रतिज्ञा, इकरार । कइल=किया । भुलइला=भुल गये । उसरु=उसर, उपजाऊ विहिन मिट्टी । सुत=पुत्र । बंधु=भाई । नारी=स्त्री, पत्नी । कोनवा=एक तरफ । घुसरु=घुस गये, चले गये । केश=बाल । अचेत=अज्ञान में । गइले=गया । पन=समय । तिसरु=बुढ़ापा । चक्षु=नेत्र । अकसरु=अकेले, बिना साथ के । दर=द्वार, रास्ता । छेका=रोक लिया । कौन=किस । राह=मार्ग । निकसरु=निकलोगे ।

टिप्पणी – [illegible]

[illegible]

[illegible]

232105

शब्द नाम मनिमाला (गोपाल साहबकृत)

प्रथम नाम सत्नाम सजीवन सामर्थ्य दीनदयाला ।
सुख सागर सत् साहब स्वामी सर्व सम्पूरण काला ।।
सिरजनिहार सुलभ सुख दायक सुन्दर सहज सुभाऊ ।
सार शब्द सतवर्ग निरन्तर निर्गुण सगुण को राऊ ।।
सत्गुरू शीतल सुगम सनेही सिद्ध सुखद उपकारी ।
औढर ढरन मूल शुभ साई शोभा गुन अधिकारी ।।
साहन शाह स्वरूप अनूपं पारब्रह्म सुल्ताना ।
शुद्ध सधीर सरल अति निर्मल साधु समीप सुजाना ।।
आदि अनादि अजर मनि अतुलित सत्पुरूष बलिवन्डा ।
अगम अपार अथाह अमरपति अभय अशोक अखण्डा ।।
अपरम्पार अचल सर्वंगी अलिफ अल्लाह अनूपा ।
अनहद अनुभव अद्भुत आगर राम रमापति भूपा ।।
अलख अचिंत अक्षय अनउपमा हद बेहद अविनाशी ।
आनन्द अजर अमान उजागर हों छपलोक निवासी ।।
उदित उदोत्त उदधि उज्ज्वल गुन धीर धनी सुख धामा ।
मन मोहन उत्तिम नव नागर जग पालक विश्रामा ।।
यम मर्दन जीव तारन साम्रथ जागृत जिन्द गरीब नेवाजा ।
जीवन मुक्त जगत्पति बालम शरण गहे की लाजा ।।
कृपानिधान कन्त कल्प द्रुम भंजन काल कराला ।
किलिविष हरन क्लेश नसावन जीवन जीन्द कृपाला ।।
कादिर गनि करीमा केशव रक्षक अन्तर्यामी ।
मौला रब परवरदिगार हक छत्रपति सुख धामी ।।
बेकीमति बेसिफ्ति बेबाहा अविगति बंदि छोरा ।
दर्दवन्त दरियाव दयानिधि पाक बेअन्त करोरा ।।
प्रेमी प्रणतपाल पति प्रीतम हंसराज खुशिहाला ।

दुल्लह सत् कर्तार ब्रह्म अनरूप नाम मनि माला ।।
प्रेम धागा में गांथि प्रीति से उर ग्रीव पहिरे सोई ।
नाम प्रताप दया सत्तगुरू की कष्ट कबहुं ना होई ।।
सत्रह अंश वंश पुरूषोत्तम तामें प्रथम निरंजन राई ।
सहज स्वभाव शील संतोषी क्षमा श्रद्धा भाई ।।
दरशन परसन कुर्म दयायुक्त सूक्ष्म वेद की बानी ।
प्रेम प्रीति अमर अचिन्त धीरज सुबुद्धि गुन खानी ।।
सुकृत सतगुरू आदि ज्योति जग जननी पुरुष दुलारी ।
पहिरहिं सत्नाम मनिमाला सत्गुरू की बलिहारी ।।
रहनि गहनि है सुरति निरति में ज्ञान ध्यान से पागे ।
संकट हरन नाम मनिमाला रोग शोक दुःख भागे ।।
करि प्रतीति जेहिं पहिरि प्रीति से सन्त मन्त में आवे ।
सुख जीवन संसार अन्त सो निर्भय लोक सिधावे ।।
नाम एक महिमा अनन्त जाके डर कांपहिं काला ।
अर्थ धर्म काम मोक्ष दायक सो नाम मनिमाला ।।
आगर उजागर दयामनि सागर ,
प्रणतपाल कृपाल जगपाल कहु रे, ।
सत्पुरूष सत्नाम सत्वर्ग सत्तधाम,
सत्ब्रत सत्ज्ञान सत्संग गहु रे ।।
अजरमनि अजरअंग अजरगुन अजररंग,
अजरलोक अमरपति अगमपंथ रहु रे ।
बेअन्त बेऐब बेकीमत बेसिफ्ति बेशक,
बेहद बेबाहा बेबाहा बेबाहा सत्पुरूष साहब कहु रे ।।